अंक 18 : अप्रैल, 2024
चौ-मासिक, बेंगलूरु

Azim Premji University

अज़ीम प्रेमजी यूनिवर्सिटी

लर्निंग कर्व

अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय का प्रकाशन

एक कोशिश NCF-FS को समझने की

सम्पादन समिति

प्रेमा रघुनाथ, मुख्य सम्पादक
अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय,
सर्वे नम्बर 66, बुरुगुंटे विलेज, बिक्कनाहल्ली मेन रोड,
सरजापुरा, बेंगलूरु, कर्नाटक - 562 125
prema.raghunath@azimpremjifoundation.org

शेफ़ाली त्रिपाठी मेहता, सह-सम्पादक
अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय,
सर्वे नम्बर 66, बुरुगुंटे विलेज, बिक्कनाहल्ली मेन रोड,
सरजापुरा, बेंगलूरु, कर्नाटक - 562 125
shefali.mehta@azimpremjifoundation.org

चन्द्रिका मुरलीधर
अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय,
सर्वे नम्बर 66, बुरुगुंटे विलेज, बिक्कनाहल्ली मेन रोड,
सरजापुरा, बेंगलूरु, कर्नाटक - 562 125
chandrika@azimpremjifoundation.org

निमरत खण्डपुर
अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय,
सर्वे नम्बर 66, बुरुगुंटे विलेज, बिक्कनाहल्ली मेन रोड,
सरजापुरा, बेंगलूरु, कर्नाटक - 562 125
nimrat.kaur@azimpremjifoundation.org

सम्पादकीय कार्यालय
सम्पादक, अज़ीम प्रेमजी यूनिवर्सिटी लर्निंग कर्व
अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय,
सर्वे नम्बर 66, बुरुगुंटे विलेज, बिक्कनाहल्ली मेन रोड,
सरजापुरा, बेंगलूरु, कर्नाटक - 562 125
Email : learningcurve@apu.edu.in
Website: www.azimpremjiuniversity.edu.in

शोभा लोकनाथन कवूरी
अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय,
सर्वे नम्बर 66, बुरुगुंटे विलेज, बिक्कनाहल्ली मेन रोड,
सरजापुरा, बेंगलूरु, कर्नाटक - 562 125
shobh.kavoori@azimpremjifoundation.org

सलाहकार
हृदय कान्त दीवान, मीरा प्रभु, सचिन मुले,
सुधीश वेंकटेश, उमाशंकर पेरिओडी

प्रकाशन टीम
Email : publications@apu.edu.in

हिन्दी अंक सम्पादक
राजेश उत्साही

हिन्दी अनुवाद
एकलव्य फ़ाउंडेशन
समन्वय : प्रतिका गुप्ता

आवरण चित्र
अज़ीम प्रेमजी फ़ाउंडेशन आर्कइव से

डिज़ाइन
Banyan Tree
98458 64765

हिन्दी अंक लेआउट एवं मुद्रक
आदर्श प्रा.लि. भोपाल
+91-755-2555442

कृपया ध्यान दें :

- ***इस अंक में प्रकाशित लेख मूलत: अज़ीम प्रेमजी यूनिवर्सिटी लर्निंग कर्व (अँग्रेज़ी) अंक 18,अप्रैल, 2024 के लेखों का हिन्दी अनुवाद हैं। यह अनुवाद जुलाई, 2024 में प्रकाशित हुआ है। मूल अँग्रेज़ी अंक को*** *https://azimpremjiuniversity.edu.in/learning-curve* ***से डाउनलोड किया जा सकता है ।***
- ***यह हिन्दी अंक या इसके अलग-अलग लेख*** *https://anuvadasampada.azimpremjiuniversity.edu.in/* ***पर उपलब्ध हैं ।***
- ***लेखों में व्यक्त विचार और दृष्टिकोण लेखकों के अपने हैं । अज़ीम प्रेमजी फ़ाउंडेशन या अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है ।***

'' अज़ीम प्रेमजी यूनिवर्सिटी लर्निंग कर्व, अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय का प्रकाशन है । इसका उद्देश्य शिक्षकों, शिक्षक-अध्यापकों, स्कूल प्रमुख, शिक्षा अधिकारियों, अभिभावकों और गैर-सरकारी संगठनों तक ऐसे प्रासंगिक और विषयगत मुद्दों में पहुँच बनाना है जो उनके रोजमर्रा के काम से सम्बन्धित हैं । लर्निंग कर्व शैक्षिक जगत के विभिन्न दृष्टिकोणों, अभिव्यक्तियों, परिप्रेक्ष्यों, नई जानकारियों और नवाचार की कहानियाँ प्रस्तुत करने के लिए एक मंच प्रदान करता है । इसका मूल विचार 'शैक्षणिक' और 'अभ्यासकर्ता' के मध्य सन्तुलन हेतु उन्मुख पत्रिका के रूप में स्थापित होना है ।''

सम्पादक की ओर से

हाल ही में एक साक्षात्कार में, इंजीनियर, ऐक्टिविस्ट और शिक्षा सुधारक सोनम वांगचुक ने बताया कि कैसे वे 9 साल की उम्र तक स्कूल नहीं गए, लेकिन उन वर्षों में उन्होंने अपने माता-पिता, दादा-दादी और समुदाय के सदस्यों के साथ रहकर जीवन के बारे में कितना सीखा। उन्होंने चुटकी लेते हुए कहा कि जब वे खेतों में काम करते हुए पौधों को बढ़ता हुआ देख रहे थे, तब उनकी उम्र के अन्य बच्चे स्कूल में ब्लैकबोर्ड और पाठ्यपुस्तकों से जड़, तना, पत्ती के बारे में सीख रहे थे। इसलिए यह देखना बहुत रोमांचक है कि नेशनल करिकुलर फ्रेमवर्क फॉर फ़ाउंडेशनल स्टेज (NCF-FS) में खेल और गतिविधि अधिगम और विकास के प्राथमिक तरीक़े हैं।

लेकिन पहली चीज़ें पहले। NCF-FS क्या है? यह किसके लिए है? NCF-FS नेशनल एजुकेशन पॉलिसी (NEP) 2020 का एक प्रमुख घटक है और (5+3+3+4) पाठ्यचर्या में प्रथम चरण फ़ाउंडेशनल स्टेज (आयु 3-8 वर्ष) है और इसमें शैक्षणिक पुनर्गठन की कल्पना की गई है। NCF-FS 'सभी' बच्चों के लिए एक एकीकृत, समान और उच्च गुणवत्ता वाली अर्ली चाइल्डहुड केयर एंड एजुकेशन (ECCE) को सुगम बनाने के लिए तैयार किया गया है। सीधे शब्दों में कहें तो NCF-FS एक ऐसा दस्तावेज़ है जिसमें विस्तृत दिशा-निर्देश दिए गए हैं जो नेशनल एजुकेशन पॉलिसी (NEP) 2020 के सुगम कार्यान्वयन के लिए शिक्षक और अन्य पेशेवरों को सीधे सम्बोधित करता है।

प्रत्येक नए नीति दस्तावेज़ को सावधानी से देखा जाता है क्योंकि यह हमारे पास मिथकों और पूर्वकल्पित धारणाओं से घिरा हुआ आता है। इसके अलावा परिवर्तन के प्रति हमारा संशय भी रहता है और यह विचार भी रहता है कि क्या यह अन्ततः ज़मीनी स्तर पर कुछ भी बदल सकेगा!

इसलिए जब हमने NCF-FS के दृष्टिकोण और संरचना पर एक प्रस्तुति में भाग लिया, तो हमें यह इतना पसन्द आया कि हमने इसे उसी सहज और सरल तरीक़े से आपके सामने रखने का फ़ैसला किया, जिस तरह से यह हमें बताया गया था। यह प्रस्तुति बेंगलूरु के अज़ीम प्रेमजी स्कूल के प्रिंसिपल रामचन्द्र कृष्णमूर्ति द्वारा दी गई थी। हमने इस मुद्दे को सुसंगठित/ सुनियोजित ढंग से प्रस्तुत करने के लिए उनकी मदद ली है। दस्तावेज़ को पढ़ने के तरीक़े पर उन्होंने एक लेख लिखा है और इसके विशिष्ट भागों तक शिक्षकों की पहुँच के लिए एक 'त्वरित सन्दर्भ' (ready reference) तैयार किया है।

अन्य लेखों में, हमारे पास एक लेख है जिसमें इस बात पर चर्चा है कि कैसे और क्यों खेल, जो कि बाल्यावस्था में प्रमुख होता है, को इस चरण के लिए शिक्षाशास्त्र के रूप में अनुशंसित किया गया है। एक अन्य लेख में, सभी तरह के अधिगम के आधार के रूप में आधारभूत अक्षरज्ञान और संख्याज्ञान की गम्भीरता को सिद्ध करते हुए, बहुत संक्षेप में कहा गया है कि हमें अधिगम के व्यापक लक्ष्यों में एकरूपता प्राप्त करने के लिए इस तरह के दस्तावेज़ की आवश्यकता क्यों है। एक लेखक ने यह समझाया है कि सामाजिक-भावनात्मक और नैतिक शिक्षा (SEEL) में कला की आवश्यकता क्यों है ताकि यह समझा जा सके कि प्रभावी होने के लिए कला कक्षाओं को कैसे संचालित किया जाना चाहिए। नेशनल एजुकेशन पॉलिसी (NEP) के एक अन्य प्रमुख पहलू – कि बच्चे अपनी गति से

सीखते हैं – को रेखांकित करते हुए एक लेख में अपने सन्दर्भ के हिसाब से अधिगम के प्रतिफलों को संशोधित करने में शिक्षक की स्वायत्तता के महत्त्व को बहुत ही सटीक ढंग से चित्रित किया गया है।

दस्तावेज़ सभी शिक्षकों तक नहीं पहुँचा है। इसका क्षेत्रीय भाषाओं में अनुवाद किया जाना बाक़ी है। इसकी प्रतीक्षा करते हुए, हमने सोचा कि हम इसे समझना शुरू कर सकते हैं। हम अज़ीम प्रेमजी स्कूलों के कुछ शिक्षकों और कुछ राज्यों के सरकारी स्कूलों के शिक्षकों, जिनके साथ हम काम कर रहे हैं, द्वारा अपनी कक्षाओं में इसे लागू करने के अनुभव देख/ समझ सकते हैं।

कुल मिलाकर, इस दस्तावेज़ को विस्तार से समझना और यह देखना बहुत सन्तोषजनक अनुभव रहा है कि यह 3 से 8 वर्ष की आयु के हमारे छोटे बच्चों के लिए स्कूल के अनुभव बदलने पर कितना केन्द्रित है।

इस अंक से हम आपके लिए लर्निंग कर्व का कम पृष्ठों वाला संस्करण लेकर आए हैं, जिसके बारे में हमें आशा है कि यह उस काम पर और अधिक एवं सीधे तौर पर केन्द्रित होगा जो आप प्राथमिक विद्यालय शिक्षा में (या उससे सम्बन्धित) करते हैं।

शेफ़ाली त्रिपाठी मेहता
सह-सम्पादक
shefali.mehta@azimpremjifoundation.org

अनुवाद : सुबोध जोशी **पुनरीक्षण :** प्रतिका गुप्ता
कॉपी एडिटर : अनुज उपाध्याय

इस अंक में

फ़ाउंडेशनल स्टेज के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा का अध्ययन 03
रामचन्द्र कृष्णमूर्ति

खेल : फ़ाउंडेशनल स्टेज की शिक्षा के लिए आधार 09
किन्नरी पण्ड्या

सार्वभौमिक बुनियादी साक्षरता और संख्यात्मक ज्ञान की ओर 14
निमरत खण्डपुर

कला एवं सामाजिक-भावनात्मक और नैतिक शिक्षा 18
मालविका राजनारायण

आवाज़ें

बुनियादी संख्याज्ञान का शिक्षण 22
अंकित शुक्ला

समावेशी तरीक़े से सिखाने के लिए समय का नियोजन करना 26
बनिश्री महापात्रा

संगारेड्डी की आँगनवाड़ियों में पोर्टफ़ोलियो का उपयोग 30
दसन्ना मरेड्डी और सुजाता रावी

भाषा शिक्षण : कुछ मज़ेदार प्रयास 33
ललिता यदुवंशी

भावनात्मक विकास को बढ़ावा : एक सकारात्मक प्री-स्कूल वातावरण 37
समीक्षा एम.

सामाजिक-भावनात्मक और नैतिक शिक्षा के लिए संगीत 40
सन्तोष राज के.

मिश्रित क्षमता वाली कक्षा में समय का नियोजन 44
सतवीर सिंह चौहान

सामाजिक और भावनात्मक विकास का पोषण : कला शिक्षकों की भूमिका 47
शुभा एच.के.

इस अंक में

शिक्षक की स्वायत्तता और अधिगम प्रतिफल 50
रीमा कौर

बच्चों का आकलन पोर्टफ़ोलियो द्वारा 55
एम. श्रीनिवास राव

जादुई पिटारा : बचपन में खेलों का जादू 58
उमामहेश्वर राव जग्गेना

फ़ाउंडेशनल स्टेज के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा का अध्ययन

रामचन्द्र कृष्णमूर्ति

फ़ाउंडेशनल स्टेज के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (एनसीएफ़-एफ़एस) को राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसन्धान और प्रशिक्षण परिषद (एनसीईआरटी) द्वारा अक्तूबर 2022 में जारी किया गया। यह और इसके साथ स्कूली शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यक्रम की रूपरेखा (एनसीएफ़-एसई, अगस्त 2023) पाठ्यचर्या रूपरेखा के उन चार दस्तावेज़ों में से हैं जिन्हें भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय द्वारा राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 को लागू करने के लिए विकसित किया गया है। एनसीएफ़-एफ़एस को शिक्षा के उस स्वप्न को वास्तविकता में बदलने के लिए विकसित किया गया था जिसकी कल्पना और चर्चा एनईपी 2020 में की गई है, जिसमें 3 से 8 साल की उम्र वाले शुरुआती बचपन के महत्त्वपूर्ण वर्षों पर ज़ोर दिया गया था।

यह लेख ड्राफ्ट समिति द्वारा अपनाए गए कुछ ख़ास पहलुओं और डिज़ाइन सिद्धान्तों को उजागर करते हुए एनसीएफ़-एफ़एस से पाठकों का परिचय कराता है। पाठ्यचर्या की इस रूपरेखा का एक महत्त्वपूर्ण योगदान है बाल विकास के विभिन्न क्षेत्रों में सीखने के मानकों का स्पष्ट उल्लेख। यह लेख सीखने के मानकों की ज़रूरत और प्रासंगिकता की पड़ताल करता है और फिर इस आशा के साथ इस दस्तावेज़ का वर्णन करता है कि यह एनसीएफ़-एफ़एस के पाठकों के लिए एक मार्गदर्शिका के रूप में काम करेगा।

एनसीएफ़-एफ़एस 2022 की ख़ास बातें

एनसीएफ़-एफ़एस 2022, 360 पेज का एक दस्तावेज़ है जो 3-8 साल की उम्र के बच्चों के लिए प्रारम्भिक बाल्यावस्था देखभाल एवं शिक्षा (ईसीसीई) के प्रति एक एकीकृत दृष्टिकोण की परिकल्पना करता है। इसकी समग्रात्मक पाठ्यचर्या विकास के सभी प्रासंगिक क्षेत्रों को समाहित किए हुए है, जैसे शारीरिक, सामाजिक-भावनात्मक और नैतिक, भाषा और भाषायी, संज्ञानात्मक, सौन्दर्यात्मक और सांस्कृतिक तथा इसमें सीखने की सकारात्मक आदतें भी शामिल हैं। विकास के इन क्षेत्रों की पहचान *पंचकोषों*[i] के प्राचीन भारतीय ज्ञान तथा बाल विकास की अपेक्षाकृत आधुनिक वैज्ञानिक समझ, दोनों के आधार पर की गई है।

जैसा कि पहले उल्लेख किया गया है, पाठ्यचर्या की यह रूपरेखा सीखने के विशिष्ट मानकों को परिभाषित करती है, जिन्हें पाठ्यचर्या के लक्ष्य, क्षमताओं और सीखने के प्रतिफलों के रूप में व्यक्त किया गया है। इनके बारे में हम इस लेख में और विस्तार से बात करेंगे।

जहाँ सीखने के मानक इस बात को परिभाषित करते हैं कि वांछित शैक्षिक उपलब्धियाँ क्या हैं, वहीं यह दस्तावेज़ इस बारे में विशेष और विस्तृत दिशा-निर्देश देता है कि इन उपलब्धियों को कैसे हासिल करना है। यह विस्तार से शैक्षणिक विधियों, सीखने का वातावरण तैयार करने के तरीक़ों, विषयवस्तु के चुनाव के सिद्धान्तों और इस स्टेज के सीखे हुए का आकलन करने के उपयुक्त तरीक़ों का विस्तार से बयान करता है। आगे यह उदाहरणात्मक साप्ताहिक कार्यक्रमों और दैनिक समय-सारणियों के माध्यम से उन तरीक़ों की रूपरेखा प्रस्तुत करता है जिनसे स्कूल के समय को व्यवस्थित किया जा सकता है।

एनसीएफ़-एफ़एस फ़ाउंडेशनल स्टेज में कम-से-कम दो भाषाओं में साक्षरता विकसित करने के तरीक़े स्पष्ट रूप से जाहिर करता है। यह सन्तुलित साक्षरता के ऐसे दृष्टिकोण की सिफ़ारिश करता है जिसमें शब्दों की पहचान करने और शब्द लिखने में शुद्धता (निम्न-क्रम के कौशल) तथा भाषा की समझ और अभिव्यक्ति (उच्च-क्रम के कौशल), दोनों पर बराबर ज़ोर दिया जाए। साक्षरता शिक्षण के लिए चार ब्लॉक पद्धति[ii], जो मौखिक भाषा विकास, शब्दों की पहचान, पठन और लेखन पर एक साथ ध्यान देती है, बुनियादी साक्षरता हासिल करने का माध्यम है।

साक्षरता के साथ बुनियादी संख्या ज्ञान, बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान (एफ़एलएन) बनाता है और इस पर एनईपी 2020 में विशेष ज़ोर दिया गया है। संख्या ज्ञान को विकसित करने के लिए सुझाई गई शिक्षण पद्धति भी सन्तुलित है और अवधारणात्मक समझ व कौशल अभ्यास पर बराबर ज़ोर देती है। गणित शिक्षण के लिए चार ब्लॉक[iii] में मौखिक गणित बातचीत, कौशल शिक्षण, कौशल अभ्यास और गणित के खेल शामिल हैं ताकि बच्चे में समस्या-समाधान करने के कौशल को प्रोत्साहित किया जा सके।

एनसीएफ़-एफ़एस को तैयार करने में अपनाए गए डिज़ाइन के सिद्धान्त

एनसीएफ़-एफ़एस को तैयार करने वालों ने इसे लिखते वक़्त सोच-समझकर कुछ सिद्धान्तों को अपनाया है। इस दस्तावेज़ के पाठक को इन सिद्धान्तों और इसके लेखकों द्वारा अपनाए गए डिज़ाइन के विकल्पों के पीछे के तर्काधार को समझना ज़रूरी है।

प्रयोगकर्ताओं के लिए मार्गदर्शिका

एनसीएफ़-एफ़एस बिल्कुल स्पष्ट रूप से इसे उपयोग करने वालों, यानी कि स्कूली शिक्षकों को मद्देनज़र रखकर बनाया गया है। पाठ्यचर्या की रूपरेखाएँ सामान्यतः आदर्शवादी और गूढ़ शब्दों में लिखी जाती हैं जिसके कारण प्रयोगकर्ता इन्हें अपने रोज़मर्रा के काम से जोड़ नहीं पाते। इसलिए, एनसीएफ़-एफ़एस दस्तावेज़ में इस्तेमाल की गई भाषा को सोच-समझकर कम तकनीकी और कम अकादमिक रखा गया है।

यह दस्तावेज़ गूढ़ सिद्धान्तों और दृष्टिकोणों के स्तर तक सीमित नहीं रह जाता। इसमें वास्तविक कक्षाओं और शिक्षकों की आवाज़ों के विशिष्ट उदाहरण एवं शब्द चित्र दिए गए हैं ताकि ये सिद्धान्त ज़्यादा ठोस लग सकें। ऐसा इस आशा में किया गया है कि ये उदाहरण दिशा-निर्देशों और सुझावों को प्रयोगकर्ताओं के लिए ज़्यादा सहज और सुलभ बना दें। हालाँकि इससे यह दस्तावेज़ पढ़ने के लिहाज़ से काफ़ी बड़ा हो गया है लेकिन साथ ही ज़्यादा प्रासंगिक और प्रभावी भी।

विशिष्टता

प्रयोगकर्ताओं के लिए प्रासंगिक होने के लिए यह ज़रूरी है कि इस प्रकृति का दस्तावेज़ प्रासंगिक हो तथा वास्तविकता से न हटे। शैक्षिक गलियारों में, शैक्षिक विचार के सम्बन्ध में, अक्सर यह असमंजस रहता है कि क्या निदेशात्मक है और क्या विशिष्ट। एनसीएफ़-एफ़एस यह मानता है कि विशिष्ट होना शिक्षकों के लिए उपयोगी होता है और उन्हें उनके काम में मार्गदर्शन देने में मदद करता है, लेकिन ज़रूरी नहीं कि यह विशिष्ट प्रक्रियाओं को निर्धारित करे। शिक्षकों के पास हमेशा से यह स्वायत्तता रही है और हमेशा रहनी चाहिए कि वे प्रक्रियाओं को अपनी परिस्थितियों के अनुरूप ढाल सकें और अपना सकें।

व्यावहारिकता

किसी पाठ्यचर्या की रूपरेखा बनाना उम्मीद और आदर्शवादिता की प्रक्रिया होती है। इसका लक्ष्य होता है स्कूली शिक्षा में सुधार। लेकिन अगर इन लक्ष्यों को व्यवहार्य और सम्भव बनाना हो तो यह ज़रूरी है कि सुझाव व अनुशंसाएँ न सिर्फ़ विशिष्ट हों बल्कि वर्तमान वास्तविकताओं और व्यावहारिकताओं से उभरती हों। एक प्रकार से पाठ्यचर्या की रूपरेखाएँ स्कूली शिक्षा में बदलाव के माध्यम से सामाजिक बदलाव का लक्ष्य रखती हैं। पाठ्यचर्या रूपरेखाओं द्वारा सुझाए गए बदलावों को लागू करने योग्य होने के लिए बड़ी छलाँगों के बजाय छोटे-छोटे क़दमों के रूप में होना चाहिए।

विकास का क्षेत्र	भाषा और साक्षरता विकास				
पाठ्यचर्या के उद्देश्य	CG-10 : बच्चे भाषा-1 को पढ़ने और लिखने में धाराप्रवाहिता विकसित करते हैं				
दक्षताएँ	C-10.5 : छोटी कहानियाँ पढ़ते हैं और पात्रों, कथानक और लेखक क्या कहना चाहता है, इसकी पहचान करके, ख़ुद से ही उनके अर्थ समझते हैं				
सीखने के प्रतिफल	उम्र 3 से 8				
	चित्र पुस्तकें पढ़ते हैं और वस्तुओं तथा क्रियाओं की पहचान करते हैं।	चित्र पुस्तकें पढ़ते हैं, पात्रों और कथानक की पहचान करते हैं और कहानी को छोटे-छोटे क्रमों में बताते हैं।	छोटे सरल टेक्स्ट वाली पुस्तकों को बोलकर पढ़ते हैं, सटीक अनुक्रम और विस्तार के साथ कहानी का अनुमान लगाने और उसे फिर से कहने के लिए दृश्य संकेतों और टेक्स्ट का इस्तेमाल करते हैं।	कहानी की अपरिचित किताबें पढ़ना शुरू करते हैं और शिक्षक के मार्गदर्शन से उन्हें समझते हैं।	पात्रों, कथानकों, अनुक्रमों और लेखक के दृष्टिकोण को पढ़ते और पहचानते हैं।

चित्र-1 : *सीखने के मानकों का एक अधोप्रवाह।*

सीखने के मानकों की स्थापना

एनसीएफ़-एफ़एस की एक ख़ास विशेषता है इसमें की गई सीखने के मानकों की अभिव्यक्ति। सीधे-सीधे कहें तो सीखने के ये मानक विशेष रूप से इस सवाल का जवाब देते हैं कि *क्या पढ़ाना है*? उपयोगी और लागू करने योग्य होने के लिए सिर्फ़ स्कूली शिक्षा के व्यापक लक्ष्यों और उद्देश्यों या हर स्कूली विषय के विशिष्ट लक्ष्यों का ज़िक्र करना काफ़ी नहीं है। व्यापक लक्ष्यों को और विशिष्ट लक्ष्यों व योग्यताओं तक लाया जाना चाहिए जो शैक्षिक उपलब्धियों की स्पष्ट अभिव्यक्तियाँ होती हैं। दस्तावेज़ में सीखने की अपेक्षित उपलब्धि का एक स्पष्ट अधोप्रवाह दिखाई देता है जहाँ हर सेट बारीक ब्यौरों में जाता है लेकिन उसका पिछले स्तर से स्पष्ट जुड़ाव होता है। (**चित्र-1**)

स्कूली शिक्षा के लक्ष्य

अपने मौलिक अर्थ में शिक्षा का अर्थ है उस ज्ञान व क्षमताओं को हासिल करना जिन्हें मूल्यवान समझा जाता है। इस तरह शिक्षा का उद्देश्य मानकीय होता है जो उन मानकों पर आधारित होता है जिनकी कल्पना समाज करता है। भारतीय सन्दर्भ में, यह मानकीय दिशा है हमारा संविधान। एनसीएफ़-एफ़एस के लिए, शिक्षा की यह दृष्टि उन बातों से उपजती है जिनका ज़िक्र एनईपी 2020 में किया गया है।

शिक्षा के लक्ष्य, पाठ्यचर्या के उद्देश्य, दक्षताएँ और सीखने के प्रतिफल मिलकर सीखने के मानकों का निर्माण करते हैं। सीखने के मानक पाठ्यचर्या के तर्क का व्यापक लक्ष्यों से सीखने के विशिष्ट प्रतिफलों की ओर एक स्पष्ट और विशिष्ट अधोप्रवाह है। पूर्व में उल्लिखित सिद्धान्तों के आधार पर देखें तो सीखने के ये मानक एनसीएफ़-एफ़एस की रीढ़ हैं और सभी प्रयोगकर्ताओं को हमारे देश में स्कूली शिक्षा को सुधारने की स्पष्ट और सटीक दिशा दिखाते हैं। यह इस एनसीएफ़ का एक मौलिक योगदान है और यह पाठ्यचर्या की पिछली रूपरेखाओं की तुलना में एक स्पष्ट और बेहतर बदलाव है।

पाठ्यचर्या के उद्देश्य

एनसीएफ़-एफ़एस के पाठ्यचर्या के उद्देश्य एनईपी 2020 में परिकल्पित शिक्षा के व्यापक लक्ष्यों, पंचकोषों में कल्पना किए गए विकास के क्षेत्रों के साथ-साथ बाल विकास के आधुनिक सिद्धान्तों से लिए गए हैं और ध्यान है बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान (एफ़एलएन) पर। एनसीएफ़-एफ़एस विकास के पाँचों क्षेत्रों में पाठ्यचर्या के 13 उद्देश्यों का सुझाव देता है, जिनमें सीखने की सकारात्मक आदतों के विकास का लक्ष्य शामिल है।

दक्षताएँ

पाठ्यचर्या के 13 उद्देश्यों में से प्रत्येक उद्देश्य के लिए 68 और विशिष्ट दक्षताओं की पहचान की गई है। ये दक्षताएँ शैक्षिक उपलब्धियों के देखे और आकलन किए जा सकने वाले वक्तव्य हैं। इन्हें एनसीएफ़-एफ़एस में परिभाषित किया गया है और ये दक्षताएँ शैक्षिक प्रगति की स्पष्ट निगरानी का मौक़ा देती हैं जो कि विद्यार्थियों, शिक्षकों, अभिभावकों और व्यापक समाज सहित सभी हितधारकों को दिखाई देती हैं।

सीखने के प्रतिफल

सीखने के प्रतिफल दक्षताओं की प्राप्ति की तरफ़ जाने वाली शैक्षिक उपलब्धि के 'अन्तरिम चिह्न' होते हैं। सीखने के ये प्रतिफल फ़ाउंडेशनल स्टेज की समाप्ति पर किसी दक्षता विशेष को हासिल करने के लिए सीखने के पथ को भी दर्शाते हैं। विद्यार्थी फ़ाउंडेशनल स्टेज में स्कूली शिक्षा के पाँच साल बिताते हैं। हालाँकि दक्षताएँ इस बात को परिभाषित करती हैं कि हर स्टेज की समाप्ति पर क्या हासिल किया जाना है, पाठ्यपुस्तक तैयार करने वालों और शिक्षकों के इस बारे में स्पष्ट विचार होने चाहिए कि प्रति वर्ष सीखने की उपयुक्त उपलब्धियाँ क्या होंगी ताकि ये दक्षताएँ फ़ाउंडेशनल स्टेज के अन्त तक हासिल कर ली जाएँ।

यह ध्यान देने वाली बात है कि जहाँ पाठ्यचर्या के उद्देश्य और क्षमताएँ काफ़ी हद तक सर्वव्यापी और स्थिर हैं, वहीं सीखने के प्रतिफल उस सन्दर्भ के लिए विशेष हो सकते हैं जिसमें कोई स्कूल काम करता है। इस तरह, एनसीएफ़-एफ़एस में परिभाषित सीखने के प्रतिफलों की प्रकृति उदाहरणात्मक ज़्यादा है और स्कूली तंत्र व स्कूल अपनी परिस्थिति के आधार पर दक्षताओं को हासिल करने हेतु अपने ख़ुद के सीखने के प्रतिफल तैयार कर सकते हैं।

इस दस्तावेज़ को पढ़ने के लिए मार्गदर्शन

फ़ाउंडेशनल स्टेज के शिक्षक के लिए, यह दस्तावेज़ न सिर्फ़ एक पाठ्यचर्या की रूपरेखा है बल्कि एक हैंडबुक के रूप में भी काम कर सकता है।

- सीखने के मानकों के विचार को समझना महत्त्वपूर्ण है। अध्याय-2 का सम्पूर्ण अध्ययन न सिर्फ़ इस बात को समझा पाएगा बल्कि शिक्षक को उन विशेष उद्देश्यों व क्षमताओं की जानकारी भी देगा जिनकी ओर उन्हें प्रयास करने चाहिए।
- अध्याय-4, 5 और 6 फ़ाउंडेशनल स्टेज के शिक्षकों के कार्य के लिए सीधे तौर पर प्रासंगिक हैं। शिक्षकों के लिए विस्तृत अनुलग्नकों को देखना मददगार होगा ताकि

उन्हें इन अध्यायों में रेखांकित सिद्धान्तों की ठोस समझ हासिल हो सके।

- विकासात्मक विलम्बों और अक्षमताओं वाले बच्चों की तरफ़ ध्यान देने के लिए अध्याय-8 बहुत महत्त्वपूर्ण है।
- शैक्षणिक पदाधिकारियों और प्रशासकों के लिए अध्याय-1, 2 और 10 पढ़ना नियाहत ही ज़रूरी है।

एनसीएफ़-एफ़एस एक विस्तृत दस्तावेज़ है जो फ़ाउंडेशनल स्टेज में स्कूली शिक्षा के सभी पहलुओं के लिए स्पष्ट, विशिष्ट और व्यावहारिक दिशा-निर्देश प्रदान करता है। शिक्षकों व अन्य प्रयोगकर्ताओं को इस दस्तावेज़ को ध्यान से पढ़ने से बहुत लाभ होगा।

Endnotes

i The Upanishadic theory of the five sheaths of a human being.

ii National Curriculum Framework for Foundational Stage. 4.5.1.5 The Four-Block Approach for Literacy Instruction. p. 116

iii National Curriculum Framework for Foundational Stage. 4.5.2.3 Blocks of Teaching for Mathematics Instruction. p. 121

रामचन्द्र कृष्णमूर्ति अज़ीम प्रेमजी स्कूल, बेंगलूरु के प्राचार्य हैं। इस भूमिका में आने से पहले वे अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय में शिक्षक-प्रशिक्षक के बतौर काम कर रहे थे। उनकी रुचियों में हाशिए पर रहने वाले समुदायों के बच्चों के बीच बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान (एफ़एलएन) को बढ़ावा देना शामिल है। उनसे *ramchandar.k@azimpremjifoundation.org* पर सम्पर्क किया जा सकता है।

अनुवाद : भरत त्रिपाठी **पुनरीक्षण :** प्रतिका गुप्ता **कॉपी एडिटर :** अनुज उपाध्याय

एनसीएफ़-एफ़एस दस्तावेज़ का ढाँचा

एनसीएफ़-एफ़एस 360 पेज का दस्तावेज़ है और 10 अध्यायों व चार अनुलग्नकों में विभक्त है।
नोट : यहाँ उल्लेख की गई पेज संख्या अँग्रेज़ी दस्तावेज़ की है।

अध्याय

अध्याय-1 : प्रस्तावना और परिचय भारत में ईसीसीई के विकास, एनईपी 2020 की सोच, फ़ाउंडेशनल स्टेज में बच्चों के सीखने के बारे में वर्तमान समझ और भारत में फ़ाउंडेशनल स्टेज में स्कूली शिक्षा की परिस्थिति के बारे में एक रूपरेखा प्रस्तुत करता है। यह अध्याय इस पाठ्यचर्या की रूपरेखा के सन्दर्भ और सोच को स्थापित करता है। (पेज-13)

अध्याय-2 : लक्ष्य, पाठ्यचर्या के उद्देश्य, दक्षताएँ और सीखने के प्रतिफल एनसीएफ़-एफ़एस का एक महत्त्वपूर्ण अध्याय है और यह फ़ाउंडेशनल स्टेज में विकास के सभी पाँच क्षेत्रों में सीखने के मानकों को स्थापित करता है। अध्याय में जहाँ पाठ्यचर्या के उद्देश्य और दक्षताएँ सम्पूर्ण रूप में दी गई हैं वहीं सीखने के प्रतिफलों के कुछ उदाहरणात्मक विवरण भी सामने रखे गए हैं। (पेज-49)

कक्षा-स्तर के सीखने के प्रतिफलों के पूर्ण समूह को अनुलग्नक-1 में व्यक्त किया गया है।

अध्याय-3 : भाषा शिक्षा और साक्षरता के प्रति दृष्टिकोण वह अध्याय है जिसमें भाषा शिक्षा के प्रति समग्र दृष्टिकोण की रूपरेखा दी गई है। भारत में भाषायी विविधता की सम्पन्नता है और यह अध्याय इस ताक़त को स्वीकार करता है और इस बात का ख़ाका पेश करता है कि कब और किस तरह विभिन्न भाषाओं को स्कूल में शामिल किया जाना चाहिए। (पेज-71)

अध्याय-4 : शिक्षणशास्त्र में स्कूली शिक्षा के इस स्टेज के लिए उपयोगी विशिष्ट शैक्षणिक प्रक्रियाओं हेतु दिशा-निर्देश दिए गए हैं। इस अध्याय में छोटे बच्चों को संलग्न रखने के लिए खेल-आधारित तरीक़ों, साक्षरता और संख्या ज्ञान सिखाने की रणनीतियों, शिक्षकों व बच्चों के बीच सकारात्मक रिश्तों की भूमिका को विस्तार से समझाया गया है। (पेज-81)

अध्याय-5 : शिक्षण के लिए विषयवस्तु का चयन, संगठन और सन्दर्भीकरण सीखने के मानकों को हासिल करने के लिए उचित विषयवस्तु चुनने और उपयोग करने के मुद्दे के बारे में बात करता है। जहाँ पूर्व-प्राथमिक कक्षाएँ (3-5 साल की उम्र) मुख्यतः ठोस वस्तुओं और आनन्ददायक अनुभवों पर आधारित होती हैं, वहीं कक्षा-1 और 2 (6-8 साल की उम्र) में पाठ्यपुस्तकें भी एक भूमिका निभाना शुरू कर सकती हैं। सीखने के भौतिक परिवेश यानी कक्षा की व्यवस्था इस स्टेज में बहुत महत्त्वपूर्ण हो जाती है और यह दस्तावेज़ कक्षा को व्यवस्थित करने के बारे में ख़ास सुझाव देता है। (पेज-135)

अध्याय-6 : सीखना आगे बढ़ाने के लिए आकलन फ़ाउंडेशनल स्टेज में आकलन के तरीक़ों के बारे में विस्तार से बात करता है। शुरुआती वर्षों में आकलन ज़्यादातर बच्चे के गुणात्मक अवलोकनों पर आधारित होना चाहिए। आकलन कई तरह के रूप ले सकते हैं जैसे पोर्टफ़ोलियो और वर्कशीट। इस अध्याय में विकास के सभी क्षेत्रों को समाहित करने वाले एक समग्र प्रोग्रेस कार्ड की ज़रूरत पर ज़ोर दिया गया है। (पेज-169)

अध्याय-7 : समय का नियोजन वार्षिक, साप्ताहिक और दैनिक रूप से समय को नियोजित करने के दिशा-निर्देश प्रदान करता है। सन्दर्भ के लिए उदाहरणात्मक समय-सारणियाँ भी दी गई हैं। (पेज-185)

अध्याय-8 : अतिरिक्त महत्त्वपूर्ण क्षेत्र इस स्टेज के लिए प्रासंगिक दो बुनियादी सरोकारों की ओर ध्यान दिलाता है। विकासात्मक विलम्बों और अक्षमताओं (जिनमें सीखने की अक्षमताएँ शामिल हैं) की जल्दी पहचान करते हुए उनके समाधान के लिए काम करना सभी को समावेशी शिक्षा देने के लिए ज़रूरी है। बच्चों की सुरक्षा और संरक्षण सबसे महत्त्वपूर्ण बात है। इस अध्याय में इन सब मुद्दों पर ध्यान दिया गया है। (पेज-191)

अध्याय-9 : प्रारम्भिक स्टेज तक की कड़ियाँ फ़ाउंडेशनल स्टेज से प्रारम्भिक स्टेज तक की प्रगति की रूपरेखा देता है। प्रारम्भिक स्टेज में स्कूली विषय पाठ्यचर्या के क्षेत्रों के रूप में उभरते हैं और यह दस्तावेज़ विकासात्मक क्षेत्रों से इन स्कूली विषयों तक पहुँचने के तरीक़े को लेकर सुझाव देता है। विषयवस्तु, शिक्षणशास्त्र और आकलन के तरीक़ों में निरन्तरता और बदलाव, दोनों ही होंगे और इनके बारे में विस्तार से बात की गई है। (पेज-203)

अध्याय-10 : एक सहयोगी पारिस्थितिकी तंत्र का निर्माण स्कूली शिक्षा के समग्र पारिस्थितिकी तंत्र में ज़रूरी परिस्थितियों पर रोशनी डालता है और शिक्षकों की तैयारी, स्कूल के माहौल, अकादमिक पदाधिकारियों व अभिभावकों की भूमिका के बारे में बात करता है। तकनीकी पर आधारित एक खण्ड सूचना और संचार तकनीकों की भूमिका के बारे में बात करता है और इसके उपयोग के लाभों और सावधानियों, दोनों पर विचार करता है। (पेज-207)

अनुलग्नक (Annexure)

अनुलग्नक-1 सभी क्षमताओं के लिए सीखने के प्रतिफलों के उदाहरणात्मक विवरण देता है। (पेज-225)

अनुलग्नक-2 में शिक्षण, विषयवस्तु के चुनाव, आकलन और कक्षा व्यवस्थाओं जैसी विभिन्न प्रक्रियाओं के उदाहरण शामिल हैं। (पेज-275)

अनुलग्नक-3 बच्चों की क्षमताओं की निपुण भारत की क्षमताओं के साथ मैपिंग करता है। (पेज-325)

अनुलग्नक-4 में भारत और दुनियाभर में ईसीसीई पर हुए शोध के सन्दर्भ शामिल हैं। (पेज-335)

रामचन्द्र कृष्णमूर्ति द्वारा प्रस्तुत

अज़ीम प्रेमजी स्कूल, धमतरी, छत्तीसगढ़। फोटो सौजन्य : बनिश्री महापात्रा

अनुवाद : भरत त्रिपाठी **पुनरीक्षण :** प्रतिका गुप्ता **कॉपी एडिटर :** अनुज उपाध्याय

खेल | फ़ाउंडेशनल स्टेज की शिक्षा के लिए आधार

किन्नरी पण्ड्या

फ़ाउंडेशनल स्टेज के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (एनसीएफ़-एफ़एस) ऐतिहासिक महत्त्व का दस्तावेज़ है, जो विस्तृत दिशा-निर्देश उपलब्ध कराता है – वे लक्ष्य, शैक्षणिक विचार और शिक्षा के मापदण्ड जिन्हें भारत की स्कूली व्यवस्था को बच्चों की स्कूली शिक्षा के प्रारम्भिक पाँच वर्षों में हासिल करने की कोशिश करनी चाहिए। यह लेख बच्चों के सीखने की प्रक्रिया, खेल के महत्त्व, खेल के माध्यम से सीखना और 3 से 8 साल के बच्चों के लिए सीखने के लक्ष्यों और मापदण्डों के साथ खेल के रिश्ते पर केन्द्रित है। इन चीज़ों की रूपरेखा पाठ्यचर्या की रूपरेखा के 1, 2 और 4 खण्डों में प्रस्तुत की गई है।

छोटे बच्चे और सीखने की प्रक्रिया

उदाहरण-1 : तीन साल का एक बच्चा कक्षा के किनारे चलती हुई चींटियों की क़तार को देख रहा है। बच्चा अति उत्सुकता के साथ देखता है कि एक बड़ी चींटी एक छोटी चींटी को लादे हुए बाक़ी चींटियों के पीछे-पीछे चली जा रही है। पाँच साल का एक अन्य बच्चा एक छोटा-सा पारदर्शी डिब्बा लेकर आता है, कुछ चींटियों को पकड़कर उसमें रखता है और डिब्बे को फुर्ती से बन्द कर देता है ताकि उन्हें संरक्षित कर उन्हें ग़ौर से देख सके।

उदाहरण-2 : कक्षा-1 की शिक्षिका नियमित रूप से कहानियाँ सुनाती है। बच्चे उसकी भाव-भंगिमाओं को देखते हैं और पूरी दिलचस्पी लेते हुए उसे ध्यान से सुनते हैं - शेर की हुंकार, चूहे की चीं-चीं, गिलहरी की वह आवाज़ जो वह साँप को पास आते देखकर निकालती है। कहानी सुनाए जाने की नियमित दिनचर्या के दौरान कई बच्चे पुस्तक उठाकर ज़ोर-ज़ोर से पढ़कर एक-दूसरे को सुनाते हैं; कुछ बच्चे ख़ाली समय में जानवरों की कठपुतलियाँ लेकर कहानी को अभिनय में ढालने लगते हैं।

ऊपर के उदाहरणों के आधार पर, हम नीचे लिखे प्रश्न और उनके उत्तर निकालते हैं :

ये उदाहरण छोटे बच्चों के बारे में क्या दर्शाते हैं?

- बच्चे जिज्ञासु होते हैं।
- बच्चे प्रकृति और अपने वातावरण के साथ जुड़ जाते हैं।
- बच्चे चीज़ों को ग़ौर से देखते हैं।
- बच्चे खोजबीन करना पसन्द करते हैं।
- बच्चे अनुकरण करते हैं।
- बच्चे अभिव्यक्त करते हैं।

बच्चों की सीखने की प्रक्रिया के बारे में वे क्या बताते हैं?

- बच्चे अपने वातावरण को ग़ौर-से देखते हैं और उससे सीखते हैं।
- बच्चे सीखने के लिए अपने आस-पास की सामग्री, लोगों, अनुभूतियों और चीज़ों में दिलचस्पी लेते हैं।
- बच्चे अपने आस-पास की दुनिया को समझने के लिए खोजबीन, जाँच-पड़ताल और जोड़-तोड़ करते हैं।

क्या हम इसे सीखने की आनन्ददायक प्रक्रिया कहेंगे?

एक 'प्रेक्षक' के रूप में चीटियों की क़तार को देखता हुआ बच्चा आनन्द और विस्मय महसूस करता है। यह सम्भवत: एक आनन्ददायी अनुभव है जिसके बारे में व्यापक तौर पर यह कहा जा सकता है कि बच्चा खेल और आनन्द के अनुभव में मग्न व तल्लीन होता है।

उदाहरण-2 में, कहानी को दोहराने की क्रिया, ख़ाली समय में पढ़ना, एक-दूसरे को पढ़कर सुनाना, कहानी के चरित्रों का चित्रांकन और अभिनय करना – सक्रिय रूप से सीखने के ये सारे अनुभव अपनी प्रकृति में आनन्द से भरे भी लगते हैं। बच्चों को यह सब करने में मज़ा आता है और यह वे अपने मन से करते हैं।

दोनों ही उदाहरणों में खेलना और सीखना दो भिन्न चीज़ें नहीं हैं। बच्चों के अनुभव में वे अखण्ड रूप से एक साथ चलती प्रक्रियाएँ हैं।

फ़ाउंडेशनल स्टेज में सीखना और सिखाना

हम दो स्थितियों पर नज़र डालते हैं।

स्थिति क : एक कक्षा के 25 बच्चे छोटे-छोटे समूहों में कक्षा के विभिन्न हिस्सों में बैठे काम कर रहे हैं। एक समूह कहानियाँ पढ़ रहा है, एक समूह ब्लॉक, मनकों और जोड़-तोड़ वाली चीज़ों के साथ खेल रहा है, तीसरे समूह के बच्चे रनिंग ब्लैकबोर्ड पर आकृतियाँ बना रहे हैं और चौथा समूह डॉक्टर-डॉक्टर खेल रहा है। शिक्षिका एक समूह से दूसरे समूह के पास

जाती है, पढ़ रहे समूह से कहानी-विशेष के बारे में सवाल पूछती है; मनकों से खेल रहे समूह के पास जाकर मनकों का एक पैटर्न तैयार करती है; रनिंग ब्लैकबोर्ड पर बच्चों द्वारा किए गए रेखांकनों को नाम देती है और डॉक्टर-डॉक्टर खेल रहे समूह की दवा-विक्रेता बन जाती है।

स्थिति ख : 25 विद्यार्थियों की एक और कक्षा जिसमें वे कॉपियाँ और पेन्सिलें लेकर बेंचों पर बैठे हुए हैं और अपनी किताबों पर नज़र गढ़ाए हुए समूचे पीरियड के दौरान कॉपी पर 1 से 100 तक संख्या उतारने की कोशिश कर रहे हैं। शिक्षिका कक्षा के एक सिरे से दूसरे सिरे तक चक्कर लगाती हुई यह सुनिश्चित कर रही है कि कहीं कोई आवाज़ न हो। अगर किसी बच्चे की लिखावट पढ़ने में नहीं आती तो वह उसे रबर से मिटा देती है और बच्चे से फिर-से लिखने को कहती है। यह तक़रीबन पूरे दिन जारी रहने वाला सिलसिला है – चुपचाप कई-कई बार ब्लैकबोर्ड को देखकर लिखना सिवा उन 15 और 30 मिनट के मध्यान्तरों के जब बच्चे यहाँ-वहाँ जाकर अपनी रुचि का काम कर सकते हैं।

दोनों कक्षाओं में 5 से 6 साल की उम्र के बच्चे हैं जो समान सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमियों से आए हैं।

इन दोनों स्थितियों में कौन-सी बात *समान* है?

1. दोनों कक्षाओं के भीतर सीखने-सिखाने की स्थितियाँ हैं।
2. दोनों ही स्थितियों में प्रतिबद्ध और चिन्ता करने वाले शिक्षक हैं जिनकी दिलचस्पी बच्चों के सीखने और पाठ्यक्रम को पूरा करने में है।
3. दोनों ही कक्षाओं में समान आयु-वर्ग के बच्चे हैं जिनके विकास के समान लक्षण हैं।

इन दोनों स्थितियों में *भिन्न* क्या है?

1. बच्चों की भागीदारी, स्वतंत्रता और नियन्त्रण :
   क. *स्थिति क* शोर से युक्त होगी जिसमें विद्यार्थी हलचल कर रहे होंगे, आपस में बतिया रहे होंगे और खिलौनों को आपस में बाँट रहे होंगे।
   ख. *स्थिति ख* में ख़ामोशी होगी और अनुशासन का स्पष्ट बोध होगा।
2. चयन और विद्यार्थियों की भूमिका :
   क. *स्थिति क* में बच्चे चल-फिर रहे हैं, बातचीत कर रहे हैं और नई चीज़ें आज़माकर देख रहे हैं और शिक्षिका बच्चों के चुने हुए काम में भागीदारी कर रही है। यहाँ शिक्षण सक्रिय अन्वेषण प्रतीत होता है।
   ख. *स्थिति ख* में एक वयस्क पढ़ा रहा है, बच्चे बैठे हुए हैं और ब्लैकबोर्ड से कॉपी पर उतारते हुए सीख रहे हैं, अभ्यास कर रहे हैं और शिक्षिका द्वारा उनके लिए तैयार किए गए कार्यों को दोहरा रहे हैं। यहाँ पर शिक्षिका के निर्देशों का पालन करना और उनके दिए हुए कार्य को पूरा करना प्रमुख उद्देश्य प्रतीत होते हैं।
3. आदान-प्रदान :
   1. *स्थिति क* में आदान-प्रदान उच्च स्तर पर है – आदान-प्रदान बच्चों के बीच, बच्चों और शिक्षिका के बीच और बच्चों और उनके वातावरण (खिलौनों और अन्य सामग्री) के बीच। यहाँ वातावरण को तीसरे शिक्षक के रूप में देखा गया है।
   2. *स्थिति ख* में बच्चों के बीच न्यूनतम आदान-प्रदान है; वह किन्हीं अवसरों पर बच्चों और शिक्षिका के बीच उच्च स्तर का हो सकता है; और बच्चों और खेल की सामग्री के बीच वह किसी गतिविधि-विशेष और काम को पूरा करने तक सीमित हो सकता है। मसलन, ऊपर के उदाहरण में बच्चे बेंच, कॉपी, पैन और ब्लैकबोर्ड के साथ सबसे ज़्यादा अन्तर्क्रिया करते हैं।

आख़िरी बात कि, *स्थिति क* में विस्मय और आनन्द प्रतीत होता है, जो ऐसे पहलू हैं जिनका *स्थिति ख* में पूरी तरह से अभाव है।

क्या हम *स्थिति क* को उस कोटि में रख सकते हैं जो सक्रिय रूप से सीखने के और इसीलिए समग्र विकास के, अधिक अवसर उपलब्ध कराएगी? सीखने के वातावरण में आनन्द का होना, उस निष्क्रिय भागीदारी और नक़ल तैयार करने के मुक़ाबले सीखने की प्रभावशाली प्रक्रिया में अधिक योगदान करता है, जिसके पास दिखाने के लिए बच्चों द्वारा किया गया ढेर सारा काम हो सकता है, लेकिन जिसका नतीजा वास्तविक शिक्षा के रूप में सामने नहीं आता – उस शिक्षा के रूप में जो बच्चों को अपने आस-पास की दुनिया को समझने की क़ाबिलियत प्रदान करती है।

यह सवाल तब भी बचा रहता है : *स्थिति ख* में शिक्षिका सीखने के उसी अनुभव को आनन्दपूर्ण कैसे बना सकती है?

शिक्षण के रूप में खेल और आनन्द का माहौल

एनसीएफ़-एफ़एस कहता है कि चयन, आनन्द और विस्मय *खेल* की विशेषताएँ होती हैं। विकास के तमाम क्षेत्रों में सीखने को सम्भव बनाने के लिए सीखने के वातावरण का आनन्द और खेल भरा होना ज़रूरी है। खेलते वक़्त बच्चे काफ़ी सक्रिय होते हैं : वे दुनिया को समझने की कोशिश में चीज़ों को व्यवस्थित करते हैं, योजना बनाते हैं, सोच-समझकर चीज़ों को नियंत्रित करते हैं, समझौता/ मोलभाव करते हैं, खोजबीन करते

हैं, जाँच-पड़ताल करते हैं और सृजन करते हैं। (एनसीएफ़-एफ़एस पेज-40)

सीखने की यह सक्रिय प्रक्रिया बच्चों को समृद्ध ऐन्द्रिय, संज्ञानात्मक, भाषिक, शारीरिक और गतिशीलता के अनुभवों के साथ-साथ लोगों और आस-पास की दुनिया के साथ आदान-प्रदान के अवसर उपलब्ध कराती है।

एनसीएफ़-एफ़एस आगे यह भी कहता है कि इस स्टेज में सीखना एक सक्रिय और संवादात्मक प्रक्रिया है जिसमें बच्चे खेल के तथा अन्य बच्चों व अधिक अनुभवी लोगों के साथ बातचीत के ज़रिए सीखते हैं। बच्चे अपने सामाजिक और सांस्कृतिक अनुभवों में सक्रिय रूप से मशगूल रहते हैं और वे अपने संवेदन और अनुभवों को समझने के लिए लगातार नई जानकारी को समायोजित और उपयोग करते हैं। बच्चों का खेलना और बिना किसी हिचक के मज़े से काम करना, इन दोनों को दूसरों के साथ सक्रिय भागीदारी के अनुभव देते हुए पोषित और मज़बूत किया जा सकता है। साथ ही प्राकृतिक व वास्तविक दुनिया की ऐसी सामग्री जो सीखने, कल्पना करने, रचनात्मकता, नवाचार तथा विविध और अनूठे तरीक़ों से समस्या समाधान की क्षमता की उद्दीप्त करती है और बेहतर भी करती है, वह भी इन्हें पोषित और मज़बूत करती है। (पेज-39)

यह दस्तावेज़, खेल की एहमियत के इस खण्ड में आगे कई तरह के खेलों की और इस बात की रूपरेखाएँ प्रस्तुत करता है कि मुक्त खेल से लेकर मार्गदर्शित और संरचित खेल तथा नियम-आधारित खेलों के बीच नियंत्रण और संरचना का स्तर किस तरह बदलता जाता है। इसके अतिरिक्त, यह कई खेलों के प्रकारों के उदाहरण देता है जो उन विकासपरक पहलुओं पर आधारित हैं जिन्हें खेल का वह प्रकार प्रोत्साहित करता है। *(तालिका-1 और 2)*

तालिका-1 : संरचना और नियंत्रण पर आधारित खेल के प्रकार।

	मुक्त खेल	**मार्गदर्शित खेल**	**संरचित खेल**
भूमिकाएँ	बच्चा नेतृत्वकर्ता बच्चे द्वारा निर्देशित	बच्चा नेतृत्वकर्ता शिक्षक मददगार की भूमिका में	शिक्षक नेतृत्वकर्ता बच्चों की सक्रिय भागीदारी
बच्चे क्या करते हैं?	खेल के सभी पहलुओं को लेकर बच्चे निर्णय लेते हैं – क्या खेलना है?, कैसे खेलना है? कितनी देर तक खेलना है, किसके साथ खेलना है?	बच्चे योजना बनाते हैं और ख़ुद ही खेल खेलते हैं, वैसे ही जैसे कि वे मुक्त खेल में करते हैं।	बच्चे ध्यानपूर्वक सुनते हैं, नियमों का अनुसरण करते हैं और शिक्षकों द्वारा सोची गई गतिविधियों और खेलों में भागीदारी करते हैं।
शिक्षक क्या करते हैं?	शिक्षक कक्षा में एक मज़ेदार खेल का माहौल बनाते हैं, बच्चों को ध्यानपूर्वक देखते हैं और जब बच्चे मदद के लिए कहते हैं तो उनकी सहायता करते हैं।	शिक्षक मदद करते हैं और सक्रिय रूप से खेल को आगे बढ़ाते हैं। बच्चे जो अलग-अलग टास्क कर रहे हैं उनमें शिक्षक उनको मार्गदर्शन देते हैं, उनसे प्रश्न पूछते हैं, बच्चों के साथ खेलते हैं ताकि वे सीखने के ख़ास प्रतिफलों को हासिल कर सकें।	शिक्षक सीखने के क्रम में आने वाली दक्षताओं को बढ़ाने के लिए विशेष नियमों को ध्यान में रखते हुए सोच-समझकर गतिविधियों और खेलों की योजना बनाते हैं। भाषा और गणित के खेल, प्रकृति के साथ सैर, गीत, कविताएँ आदि सभी रोज़ किए जाते हैं।

स्रोत : फ़ाउंडेशनल स्टेज के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा। 1.4.2. खेल के ज़रिए सीखना। तालिका 1.4 ए. पेज-42

ये तीन तरह के खेल – मुक्त खेल, मार्गदर्शित खेल, संरचित खेल – शिक्षक द्वारा नियंत्रण और योजना के उत्तरोत्तर बढ़ते स्तरों को और बच्चों के चयन के उत्तरोत्तर घटते हुए स्तरों को दर्शाते हैं। अक्सर, मार्गदर्शित खेल में, बच्चे गतिविधि की शुरुआत करते हैं (जैसा कि उदाहरण-1 और 2 में तथा स्थिति **क** में है) और शिक्षक इस प्रक्रिया में सक्रिय भागीदार तथा सुगमकर्ता बन जाता है।

यह दस्तावेज़ खेल की एक और कोटि निर्धारित करता है जो संलग्नता के प्रकार पर आधारित है – यह भूमिकाओं की कल्पना है, जोड़-तोड़ के सहारे वस्तुओं की छानबीन है या दौड़ने, कूदने, सन्तुलन बनाने आदि का शारीरिक संवेग है? बच्चे की सीखने की और विकासपरक चारित्रिकता को केन्द्र में रखने की पाठ्यक्रम की भूमिका बच्चों को लोगों के साथ घुलने-मिलने, कुछ गढ़ने, पड़ताल करने और अभिव्यक्त करने के अवसर उपलब्ध कराएगी – जो कि बच्चे के स्वाभाविक संवेग हैं (ड्यूई, 1900, पेज 43-44) – इसमें ज़्यादातर बातें ऐसी हैं जिनकी गुंजाइश सीखने का आनन्ददायक वातावरण उपलब्ध कराएगी।

तालिका-2 : खेल के प्रकार।

	खेल के प्रकार	उदाहरण
1	नाट्य खेल/ फ़न्तासी खेल	कहानी को नाट्य रूप देने के लिए, घोड़े को दर्शाने के लिए एक छोटी छड़ी का उपयोग करें। परिवार के सदस्यों, शिक्षकों और डॉक्टरों जैसे अभिनय करना। अपने पसन्दीदा चरित्र का नाट्य रूपान्तर करना जैसे झाँसी की रानी, रानी चेनम्मा, छोटा भीम, शक्तिमान।
2	खोजबीन खेल	जोड़ो, तोड़ो, फिर जोड़ो – वस्तुओं के भागों को तितर-बितर करके उन्हें फिर से जोड़ना (उदाहरण के लिए, घड़ी, टॉयलेट फ़्लश, तीन पहिए वाली साइकिल) । उपकरणों के साथ प्रयोग (उदाहरण : चुम्बक, प्रिज़्म, आवर्धक लैंस)। चना, राजमा को मिलाना और फिर अलग छाँटना। रेत का खेल, पानी का खेल।
3	पर्यावरण/ छोटी दुनिया के खेल	लघु जानवरों, फ़र्नीचर, किचन सैट, डॉक्टर सैट आदि का उपयोग करते हुए वास्तविक दुनिया को फिर से बनाना और इसके साथ जुड़ना। प्रकृति की सैर – पेड़ों, पौधों, कीड़ों, पक्षियों, जानवरों, ध्वनियों, रंगों की पहचान करना।
4	शारीरिक खेल	संगीत, शारीरिक हलचल, नाटक, आउटडोर खेल, सन्तुलन, खेलों के ज़रिए शरीर की पड़ताल।
5	नियमों के साथ खेल	हॉपस्कॉच (कित-कित, स्टापू, लँगड़ी, टैग, साँप-सीढ़ी, चौपड़, लट्टू, बुगुरी, कंचे, कोकला, चपकी, पिट्ठू, पल्लनगुझी)।

स्रोत : फ़ाउंडेशनल स्टेज के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा। 1.4.2. खेल के ज़रिए सीखना। तालिका 1.4 बी. पेज-43

सभी बच्चों के लिए सीखने का आनन्ददायक भरा वातावरण सुनिश्चित करते हुए, पाठ्यक्रम और सीखने के स्तरों की ज़रूरतों को पूरा करने के लिए पाठ्यक्रम और रोज़मर्रा की गतिविधियों की योजना बनाना चुनौतीपूर्ण लग सकता है, ख़ासतौर से उन बड़ी कक्षाओं में जहाँ विद्यार्थी-शिक्षक का अनुपात विषम होता है।

जो चीज़ें बच्चों के सीखने के अभीष्ट स्तर को सम्भव बनाती हैं, वे हैं बच्चों, उनके परिप्रेक्ष्य और उनकी आयु से सम्बन्धित विकासपरक प्रवृत्तियों के बारे में शिक्षक की समझ, समग्र विकास पर केन्द्रित पाठ्यचर्या सम्बन्धी लक्ष्य, सीखने के मापदण्ड, समय को नियोजित करने की युक्तियाँ और पाठ्यक्रम सम्बन्धी अनुभवों की योजनाएँ। प्री-स्कूल और आँगनवाड़ी के बहुत-से कार्यक्रमों ने दर्शाया है कि पाठ्यक्रम के सम्पूर्ण निष्पादन को सुनिश्चित करते हुए सीखने का एक आनन्ददायक भरा वातावरण तैयार करना और उसे बनाए रखना सम्भव है।

शिक्षक की भूमिका

छोटे बच्चों के शिक्षक के लिए कई तरह की तैयारियों की ज़रूरत होती है। उनकी भूमिका में पाठ्यक्रम के कार्यक्रम के अनेक पहलुओं की योजना बनाना और उन्हें आयोजित करना शामिल है, ताकि कार्यक्रम के लक्ष्यों को पूर्ण रूप से हासिल किया जा सके।

1. *आनन्ददायक सीखने में विश्वास* : पहली ज़रूरत होगी बच्चों को लेकर शिक्षक की अपनी समझ – उनकी विशेषताएँ और पूछने, पड़ताल करने, बात करने, छानबीन करने और समझने की उनकी प्रकृति; और सीखने की उनकी ज़रूरतों में फ़र्क़ की समझ। उतने ही महत्त्वपूर्ण हैं सीखने के सिद्धान्त, खेल से भरी सीखने की सम्भावनाओं और समग्र शिक्षा के लिए वातावरण रचने में गहरा विश्वास। उतना ही महत्त्वपूर्ण है खेल-आधारित सीखने के महत्त्व को देखते हुए अभिभावकों को उससे जोड़ना।
2. *स्रोत के रूप में बच्चे* : बच्चों की सूझें, मन:स्थितियाँ, दिनचर्या, रुचियाँ, सवाल और उनकी ऊर्जा तथा जिज्ञासा अक्सर उनके साथ शिक्षक की संलग्नता के लिए उत्कृष्ट प्रस्थान-बिन्दु उपलब्ध कराते हैं। बच्चों की अभिव्यक्ति और रुचियों को सीखने के लिए आवश्यक वातावरण रचने के लिए स्रोतों के रूप में सक्रिय रूप से इस्तेमाल किया जाना चाहिए।
3. *वातावरण की रचना* : सुन्दर ढंग से तैयार किए गए सीखने के वातावरण तीसरे शिक्षक की भूमिका निभाते हैं। ऐसे वातावरण की रचना में शामिल हैं : अन्दर और बाहर के उन विभिन्न स्थलों का उपयोग और प्रबन्धन जिनमें बच्चे संलग्न रहते हैं; खेल की सामग्री, रनिंग ब्लैकबोर्ड प्रदान करना और अभिव्यक्ति तथा पढ़ने, जोड़-तोड़ वाले सामानों

व विभिन्न रूपों में बरते जा सकने वाले खिलौनों को इस्तेमाल करने के स्थान प्रदान करना, रेत के ढेर में सामग्री और डॉल कार्नर आदि का बन्दोबस्त करना और ऐसी दिनचर्या तथा लय जिसका बच्चे अनुसरण कर सकें।

4. *इस वातावरण को बनाए रखना* : खेल-आधारित सीखने के महत्त्व को स्थापित करने के लिए, शिक्षक को भागीदारों का एक ताना-बाना खड़ा करने की ज़रूरत होगी, जिसमें बच्चे, अभिभावक और वृहत समुदाय शामिल हों। इसमें खेलने और सीखने के आनन्ददायक वातावरण में सक्रिय संलग्नता के समय की तुलना में लेखन से कॉपियों को भरने में बिताए गए समय के फ़ायदों का पुनरीक्षण शामिल होगा।

क्या इस स्टेज के अन्त तक खेल-आधारित शिक्षण विधि का इस्तेमाल करते हुए तमाम क्षेत्रों के सीखने के स्तरों तथा बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान के लक्ष्यों को हासिल करना मुमकिन होगा?

एनसीएफ़-एफ़एस विकास के तमाम क्षेत्रों के लिए पाठ्यक्रम-सम्बन्धी प्रमुख लक्ष्यों और दक्षताओं की रूपरेखा प्रस्तुत करता है। वह फ़ाउंडेशनल स्टेज के अन्त तक हासिल किए जाने वाले सीखने के स्तरों की रूपरेखा भी प्रस्तुत करता है। वह फ़ाउंडेशनल स्टेज के दौरान बच्चों द्वारा हासिल किए जाने वाले अनेक विकासपरक पहलुओं को भी उजागर करता है।

इस स्टेज में सीखने के भाषिक और साक्षरतापरक स्तरों में मौखिक भाषा से आगे बढ़कर विकासमान पठन और लेखन तथा औपचारिक अक्षर-ज्ञान तक बढ़त का एक सिलसिला दिखाई देता है। इसी तरह, गणित के आरम्भिक स्तरों में तमाम आरम्भिक और विकासमान गणितीय अवधारणाओं और उसके बाद आठ वर्ष की उम्र तक संख्याओं की समझ और फ़ाउंडेशनल अंकगणित व ज्यामिती के लिए एक विकासपरक शृंखला दिखाई देती है।

निष्कर्ष

'सुनियोजित शिक्षण' और खेल-आधारित सीखने के अवसरों के बीच समय और सन्तुलन के निर्धारण के सन्दर्भ में एनसीएफ़-एफ़एस स्पष्ट तौर पर कहता है :

> इस स्तर पर बच्चे खेल के माध्यम से सीखते हैं जिसमें गतिविधियों की एक विस्तृत शृंखला और प्रोत्साहित करने वाले अनुभव शामिल होते हैं। इन सभी गतिविधियों और अनुभवों को इस तरह से व्यवस्थित करने की आवश्यकता है कि बच्चे सीखने में मशगूल होने के साथ-साथ भावनात्मक और मानसिक रूप से प्रेरित भी होते रहें। खेल के इस व्यापक विचार के तहत, यह ध्यान दिया जाना चाहिए कि बच्चे भी अवलोकन करके, चीज़ों को ख़ुद करके, सुनकर, पढ़कर, बोलकर, लिखकर, सोचकर और अभ्यास करके सीखते हैं। वे नई अवधारणाओं को सीखते हैं, उनकी व्याख्या करते हैं और इस नए ज्ञान को अपने मौजूदा ज्ञान से जोड़ते हैं। स्पष्ट और व्यवस्थित शिक्षण, कुछ अभ्यास और अनुप्रयोग आवश्यक हैं, ख़ासकर जब बच्चे पढ़ना-लिखना और गणित की शुरुआत करते हैं। हालाँकि, यह सब, बच्चों के सकारात्मक जुड़ाव की बुनियादी ज़रूरत से सम्बद्ध होना चाहिए साथ ही इसमें मज़ा और खेल के तत्व शामिल हों।

स्रोत : फ़ाउंडेशनल स्टेज के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 1.4.3. बच्चों को खेल में मशगूल करना। पेज- 45

References

Dewey, J. (1990/1900). The School and Society. Chicago, IL: University of Chicago Press

National Curriculum Framework for the Foundational Stage. National Council of Educational Research and Training (NCERT). 2022

किन्नरी पण्ड्या अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय में बाल विकास, प्रारम्भिक बाल्यावस्था शिक्षा (ईसीई) और शिक्षक प्रशिक्षण पर विभिन्न कोर्स पढ़ाती हैं। वे अज़ीम प्रेमजी फ़ाउंडेशन के ईसीई प्रयासों की संकल्पना और उनके क्रियान्वयन में शामिल रही हैं, जैसे एमए शिक्षा (अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय) में विशेषज्ञता पाठ्यक्रम प्रदान करना और तेलंगाना, कर्नाटक, पुडुचेरी तथा मध्य प्रदेश में फ़ाउंडेशन की फील्ड पहलें। उन्होंने 2006 से अज़ीम प्रेमजी फ़ाउंडेशन की सार्वजनिक शिक्षा व्यवस्था में सुधार के प्रयत्नों से जुड़ी कई पहलों में योगदान दिया है। वे *टीचिंग द यंग : द अर्ली चाइल्डहुड प्रॉफेशन इन इंडिया* की सह-सम्पादक हैं। उनसे *kinnari@apu.edu.in* पर सम्पर्क किया जा सकता है।

अनुवाद : मदन सोनी **पुनरीक्षण :** भरत त्रिपाठी **कॉपी एडिटर :** अनुज उपाध्याय

सार्वभौमिक बुनियादी साक्षरता और संख्यात्मक ज्ञान की ओर

निमरत खण्डपुर

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 के अनुसार, 'शिक्षा प्रणाली की सर्वोच्च प्राथमिकता 2025 तक प्राथमिक विद्यालयों में सार्वभौमिक बुनियादी साक्षरता व संख्या ज्ञान प्राप्त करना होगा। सीखने की बुनियादी आवश्यकताओं (अर्थात बुनियादी स्तर पर पढ़ना, लिखना और अंकगणित) को हासिल करने पर ही हमारे विद्यार्थियों के लिए बाक़ी नीति प्रासंगिक होगी' (पैरा 2.2, एनईपी 2020)। बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान (एफ़एलएन) के महत्त्व को सबसे सुदृढ़ रूप से स्थापित करने वाला यह कथन सुनिश्चित करता है कि विद्यार्थी उन्हें मिलने वाली शिक्षा से लाभान्वित हों। फलस्वरूप यह शिक्षा उन्हें वृहत्तर समाज के सहयोगी व उत्पादक सदस्य बनने में तैयार करती है।

बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान की महत्ता

विभिन्न मापदण्डों के लिहाज़ से एफ़एलएन महत्त्वपूर्ण है। ऐसा लगता है कि अपने बहुत छोटे विद्यार्थियों के लिए स्कूलों के सरोकार भविष्य में विद्यार्थियों की भलाई के साथ-साथ राष्ट्र के कल्याण को भी प्रभावित करते हैं।

चलिए, शुरुआती स्तर से आरम्भ करते हैं। एफ़एलएन आजीवन शिक्षा अर्जित करने की नींव रखती है। मसलन, लेखांकन, सांख्यिकी, रुझान (trend), कार्य-कारण जैसी अवधारणाओं को समझने में संख्याओं और गणितीय संक्रियाओं की बुनियादी समझ, जोड़ने-घटाने के मानक अल्गोरिद्म का प्रयोग, त्रिआयामी स्थानिक समझ व डेटा-हैंडलिंग जैसी दक्षताएँ अहम होती हैं। यह समझ बच्चों को भौतिकी, रसायनविज्ञान, अर्थमिति आदि जैसे विषयों की 'भाषा' से जुड़ने में भी सक्षम बनाती है। प्रतीकों व ध्वनियों के सम्बन्ध को समझने और प्रतीकों के समूह द्वारा कही जा रही बात समझने की क्षमता सुनने और पढ़ने से अर्थ बनाने की, जो पढ़ा है उस पर विचार करने की और अपने विचारों को लेखन के माध्यम से व्यक्त करने की, अपने पढ़े के बारे में गम्भीर रूप से सोचने और उसे तार्किक ढंग से प्रस्तुत करने की नींव रखती है। इससे ऐतिहासिक व समकालीन स्रोतों की आलोचनात्मक व्याख्या करने की, प्रभावशाली लेखन और हिमायत करने, प्रयोगों के अवलोकनों और परिणामों को व्यक्त करने आदि की क्षमता विकसित होती है।

इस बात के पर्याप्त प्रमाण हैं कि जन्म से लेकर 8 वर्ष तक की उम्र अतिवृहत विकास का समय होता है। इसलिए, विद्यार्थियों से कक्षा-3 तक एफ़एलएन हासिल कर लेने की उम्मीद की जाती है। साथ ही, यह अवधि आस-पास की दुनिया को समझने और सामाजिक-भावनात्मक, नैतिक व सौन्दर्य बोध के अलावा सांस्कृतिक विकास के लिहाज़ से भी महत्त्वपूर्ण होती है। सारत: 3 से 8 साल की उम्र, काफ़ी हद तक, व्यक्ति के सीखने का पथ निर्धारित करती है, साथ-ही-साथ वयस्क उम्र में उसके सामाजिक सामंजस्य को भी निर्धारित करती है। इसीलिए, एनईपी 2020 में 'सीखने के लिए तात्कालिक आवश्यकता एवं पूर्वशर्त' (एनईपी 2020 के अध्याय-2 का शीर्षक) के बतौर एफ़एलएन के अधिग्रहण पर ज़ोर दिया गया है।

> क्या होगा यदि कक्षा-उपयुक्त आयु में एफ़एलएन क्षमता अर्जित नहीं की? विद्यार्थियों को उच्च कक्षाओं की दक्षताएँ हासिल करने में अधिकाधिक बाधाएँ आती हैं। उनसे अपेक्षित व उनकी वास्तविक क्षमताओं के बीच का अन्तर लगातार बढ़ता ही जाता है। फिर अक्सर, उन पर ऐसे ठप्पे लगा दिए जाते हैं जो दर्शाते हैं कि उनके स्कूलों और शिक्षकों ने उनसे कितनी कम उम्मीदें पाल रखी हैं। इस बात के पर्याप्त प्रमाण हैं कि यह स्थिति सीखने की चाह को कम कर देती है। विद्यार्थी या तो रटकर समस्या से जूझने लगते हैं या पूरी तरह से पढ़ाई छोड़ देते हैं। इस प्रकार, स्कूल प्रणाली की कमी के लिए विद्यार्थियों को दण्डित किया जाता है।

दूसरी ओर, जिन भी विद्यार्थियों को अपनी शिक्षा के प्रारम्भिक वर्षों के दौरान सही मदद मिलती है, वे समानियोजित व योगदान देने वाले वयस्क बनते हैं जो किसी-न-किसी तरह से कार्यरत हैं। शोध बताते हैं कि प्रारम्भिक बाल्यावस्था शिक्षा और एक स्वस्थ समाज के संकेतकों (मसलन, जनसंख्या वृद्धि की दर में कमी; लोकतंत्रीकरण और मानवाधिकार, राजनीतिक स्थिरता, अपराध दर में कमी, घटती ग़रीबी, विषमता में कमी, नागरिकों के स्वास्थ्य, प्रौद्योगिकी-प्रसार, बढ़ी हुई जीवन प्रत्याशा इत्यादि) के बीच एक स्पष्ट सम्बन्ध होता है। ऐसी शिक्षा प्राप्त व्यक्तियों के बच्चों के शैशव काल के बाद तक

जीवित रहने और अपनी स्कूली शिक्षा सन्तोषजनक ढंग से पूरी करने की सम्भावनाएँ अधिक होती हैं।

इसके अलावा, इन अपेक्षाकृत अमूर्त लाभों से इतर शिक्षा में निवेश के प्रतिफल जैसे ज़्यादा व्यावहारिक निमित्त भी तो हैं। इन प्रतिफलों की गणना, करों के ज़रिए अर्जित राजस्व के साथ-साथ कल्याण व बेहतर नागरिक समाजों से जुड़े सामाजिक कल्याण कार्यक्रमों पर सार्वजनिक व्यय में कमी से की जाती है। दुनिया भर में हुए शोध बताते हैं कि प्रारम्भिक वर्षों की शिक्षा में निवेश पर प्रतिफल अन्य चरणों में किए गए निवेश की तुलना में अधिक होता है। उदाहरण के लिए, 2014 में प्रकाशित एक रिपोर्ट के अनुसार प्रारम्भिक बाल्यावस्था शिक्षा के लिए मुद्रास्फीति-समायोजित अनुमानित वार्षिक लाभांश दर 7 प्रतिशत से लेकर 18 प्रतिशत तक के बीच थी। 1985-2012 के दौरान के विद्यार्थियों पर किए गए एक अन्य अध्ययन से पता चला है कि प्रारम्भिक बाल्यावस्था शिक्षा पर किए गए प्रत्येक डॉलर के निवेश पर लगभग सात डॉलर का रिटर्न मिला। हालाँकि भारत में प्रारम्भिक बाल्यावस्था शिक्षा से सम्बन्धित ऐसे अध्ययन नहीं किए गए हैं, लेकिन हम अनुमान लगा सकते हैं कि कमोबेश इसी तरह की प्रवृत्ति देखी जाएगी।

देश में एफ़एलएन की मौजूदा स्थिति

राष्ट्रीय उपलब्धि सर्वेक्षण (एनएएस) विभिन्न प्रकार के प्रबन्धन के तहत आने वाले स्कूलों में पढ़ने वाले कक्षा-3, 5, 8 व 10 वीं के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का एक देशव्यापी आकलन है। यह देश में शिक्षा की स्थिति का स्पष्ट दृश्य प्रदान करता है। एनएएस की नवीनतम उपलब्ध रिपोर्ट 2021 की है।

एक सन्दर्भ के बतौर, एनएएस में आकलित परिणामों के कुछ उदाहरण हैं :

(i) भाषा में : छोटे पाठों को समझ के साथ पढ़ते हैं (मुख्य विचारों, विवरणों, अनुक्रम की पहचान लेते हैं और निष्कर्ष निकाल लेते हैं) और कक्षा की दीवारों पर छपी लिखाइयाँ (कविताएँ, पोस्टर, चार्ट आदि) पढ़ते हैं।

(ii) गणित में : स्थानीय मान का उपयोग करके 999 तक की संख्याओं को पढ़ते हैं और लिखते हैं, रोज़मर्रा के कामों में गुणन तथ्यों (10 तक) को बनाते हैं और उपयोग करते हैं, दीवार घड़ी/ हाथ घड़ी का उपयोग करके समय को घण्टे तक सही ढंग से पढ़ लेते हैं, टैली मार्क्स/ मिलान चिह्नों का उपयोग करके डेटा रिकॉर्ड करते हैं, सचित्र रूप से दर्शाते हैं और निष्कर्ष निकालते हैं आदि।

एनएएस 2021 से पता चलता है कि कक्षा-3, 5, 8 और 10 में विद्यार्थियों का अधिगम स्तर कम है। कक्षा-3 में शिक्षार्जन का औसत स्तर 59 प्रतिशत, कक्षा-5 में 49 प्रतिशत, कक्षा-8 में 42 प्रतिशत और कक्षा-10 में 36 प्रतिशत है। ग़ौरतलब है कि छोटी कक्षाओं से बड़ी कक्षाओं तक शिक्षार्जन में गिरावट आई है; यह 2017 में किए गए पिछले एनएएस के परिणामों के समान ही है। हालाँकि, एनएएस 2017 की तुलना में 2021 में सभी विषयों के लिए इन सभी कक्षाओं में सीखने के स्तर में गिरावट आई है।

कक्षा-3 के लिए गणित का स्कोर 57 प्रतिशत था जबकि भाषा का स्कोर 62 प्रतिशत रहा। कक्षा-5, 8 और 10 में भाषा व गणित दोनों में प्रतिशत कक्षा-3 की तुलना में कम थे।

एनईपी 2020 के परिप्रेक्ष्य में एफ़एलएन के लक्ष्य कैसे प्राप्त किए जाएँगे

देश में एफ़एलएन की स्थिति में सुधार के लिए कई प्रयास किए गए हैं। 1968 में बनी शिक्षा नीति से ही बचपन के शुरुआती वर्षों के महत्त्व पर बल दिया गया है और बाद की नीतियों व प्रासंगिक दस्तावेज़ों ने भी इस पर ज़ोर देना जारी रखा।

1975 में शुरू की गई एकीकृत बाल विकास सेवाएँ (आईसीडीएस) योजना का उद्देश्य 2-6 वर्ष की आयु के बच्चों को शिक्षा प्रदान करना था। योजना के तहत देशभर में *आँगनवाड़ी* केन्द्र स्थापित किए गए।

1990 के दशक में ज़िला प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम (DPEP) के तहत, यथासम्भव *आँगनवाड़ी* केन्द्रों को प्राथमिक विद्यालय परिसर के भीतर स्थानान्तरित कर प्राथमिक शिक्षा को आईसीडीएस के साथ मिलाने का प्रयास किया गया।

2013 में, राष्ट्रीय प्रारम्भिक बाल्यावस्था देखभाल व शिक्षा (ईसीसीई) नीति जारी की गई थी, जिसमें '6 वर्ष से कम उम्र के सभी बच्चों के इष्टतम विकास और सीखने की सक्रिय क्षमताओं के लिए समावेशी, न्यायसंगत एवं प्रासंगिक अवसरों' की अनुशंसा की गई थी। 2014 में, महिला एवं बाल विकास मंत्रालय ने 3-6 वर्ष की आयु के बच्चों के लिए एक राष्ट्रीय प्रारम्भिक बाल्यावस्था देखभाल व शिक्षा पाठ्यक्रम की रूपरेखा तैयार की, इसके बाद एनसीईआरटी के द्वारा *प्री-स्कूल शिक्षा हेतु दिशा-निर्देशों* के साथ 2019 में एक प्री-स्कूल पाठ्यक्रम तैयार किया गया।

एनईपी 2020 स्कूली शिक्षा की संरचना में कुछ बुनियादी बदलावों के द्वारा इन प्रयासों को आगे बढ़ाती है। यह उस पारितंत्र के व्यापक सन्दर्भ में सर्वव्यापी एफ़एलएन की प्राप्ति को स्थापित करने का प्रयास करती है जिसके भीतर शिक्षा प्रणाली स्थित है। इसके मद्देनज़र, यह स्कूल के चरणों का

पुनर्गठन करती है। इसके तहत प्री-स्कूल (कक्षा-1 से पहले) शिक्षा के तीन साल और कक्षा-1 व 2 को मिलाकर एक फ़ाउंडेशनल स्टेज बनाया गया है। यह परिवर्तन पाठ्यचर्या सम्बन्धी और अकादमिक/ शैक्षिक है, इसका इरादा 3-6 वर्ष की आयु के विद्यार्थियों के लिए शिक्षा प्रदान करने वाले सभी केन्द्रों तथा प्राइमरी चरण के पहले दो वर्षों के लिए शिक्षा प्रदान करने वाले केन्द्रों को एक साथ एक छत के नीचे लाने का नहीं हैं। इसका महत्त्व यह है कि 3-6 वर्ष की आयु के सभी विद्यार्थियों के लिए पाठ्यक्रम में निरन्तरता और पढ़ाने का तरीक़ा समान होगा।

इसके बाद, यह सामाजिक आर्थिक रूप से वंचित समूहों के विद्यार्थियों को शामिल करने की एक परिकल्पना प्रस्तुत करती है। उन विद्यार्थियों के लिए जिन्हें कक्षा-1 से पहले शिक्षा का लाभ नहीं मिला है, यह स्कूली-तैयारी मॉड्यूल के माध्यम से आवश्यक दक्षताओं की प्राप्ति सुनिश्चित करने का प्रयास करती है। इसके लिए एनसीईआरटी ने *विद्या प्रवेश* नामक एक मॉड्यूल विकसित किया है और विभिन्न प्रदेशों ने या तो इसी मॉड्यूल को अपने हिसाब से ढाला है या फिर अपना ही एक मॉड्यूल विकसित किया है।

नए ढाँचे पर स्थानान्तरित होने के लिए एनईपी 2020 जहाँ सम्भव हो वहाँ प्राथमिक विद्यालयों के भीतर *बालवाटिकाएँ* या प्रारम्भिक कक्षाएँ लगाने की बात भी करती है, ताकि आँगनवाड़ी कर्मियों की क्षमताएँ विकसित होने तक अर्हता-प्राप्त शिक्षक विद्यार्थियों की सीखने में सहायता कर सकते हैं।

एनईपी 2020 जारी होने के बाद 2021 में, केन्द्र सरकार ने *समग्र शिक्षा* की केन्द्र प्रायोजित योजना के तत्वावधान में 'निपुण' (समझ के साथ पढ़ने और संख्या ज्ञान में प्रवीणता हेतु राष्ट्रीय पहल) भारत मिशन शुरू किया। 'निपुण' मिशन का फोकस 3 से 9 वर्ष की आयु के विद्यार्थियों पर है, जिसमें प्री-स्कूल से लेकर कक्षा-3 तक के विद्यार्थी शामिल हैं। साथ ही, चौथी व पाँचवीं के वे विद्यार्थी जो एफ़एलएन अर्जित नहीं कर पाए हैं, उन्हें आवश्यक दक्षताएँ हासिल कराने के लिए शिक्षक का व्यक्तिगत मार्गदर्शन, सहपाठियों की मदद और आयु-उपयुक्त व पूरक शिक्षण सामग्री प्रदान की जाएँ। मिशन के लक्ष्य और उद्देश्य सभी स्कूलों के लिए हैं ताकि 2026-27 तक समस्त एफ़एलएन कौशलों का सर्वव्यापी अर्जन हासिल किया जा सके।

एनईपी 2020 का कक्षाओं में अन्तरण

कक्षाओं में नीति का अन्तरण पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकों के माध्यम से किया जाता है। पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकों के मूल में आदर्श रूप से स्कूलों का परिवेश व सन्दर्भ होता है लेकिन ये राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा द्वारा निर्देशित होते हैं ताकि सीखने के व्यापक लक्ष्यों में एकरूपता रहे।

अक्टूबर 2022 में, फ़ाउंडेशनल स्टेज के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (एनसीएफ़-एफ़एस) जारी की गई थी। और अगस्त 2023 में, स्कूल शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (एनसीएफ़-एसई) जारी की गई। एनसीएफ़-एसई समस्त स्कूली शिक्षा के लिए है एवं एनसीएफ़-एफ़एस फ़ाउंडेशनल स्टेज पर केन्द्रित है।

एनसीएफ़-एफ़एस का प्रयोजन एनईपी 2020 के उद्देश्य और भावना के साथ सामंजस्य बनाते हुए देश भर में पाठ्यक्रम और पाठ्यचर्या के विकास में मदद करना है। इसका उद्देश्य उन प्रमुख स्थानान्तरण को रेखांकित करना भी है जो एनईपी 2020 के लक्ष्यों की प्राप्ति के लिहाज़ से महत्त्वपूर्ण हैं। इसे सबसे पहले, फ़ाउंडेशनल स्टेज के लिए पाठ्यचर्या, शैक्षणिक व मूल्यांकन विधियों को स्पष्ट करते हुए समर्थ बनाया गया है। इसके बाद, यह विभिन्न सन्दर्भों के उदाहरणों के साथ दैनन्दिन स्कूली प्रक्रियाओं व कक्षा अभ्यासों के स्तर पर विशिष्ट विवरण प्रदान करती है। सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह है कि एनसीएफ़-एफ़एस उन अधिगम मानकों को बताती है, जिनमें पाठ्यचर्या के वे व्यापक लक्ष्य और दक्षताएँ शामिल हैं जिन्हें फ़ाउंडेशनल स्टेज के अन्त तक हासिल किया जाना है। यह विद्यार्जन के ऐसे ब्यौरेवार प्रतिफल भी सुझाती है जिनसे फ़ाउंडेशनल स्टेज के अन्त तक वांछित दक्षताओं की प्राप्ति होगी। ये शिक्षा-प्रतिफल स्कूली शिक्षा के किसी विशिष्ट वर्ष से जुड़े नहीं होते, कारण कि प्रत्येक विद्यार्थी अपनी ख़ास गति से सीखता है।

एनसीएफ़-एफ़एस, एफ़एलएन लक्ष्यों की प्राप्ति से भी परे है। यह संज्ञानात्मक विकास तथा भाषा व साक्षरता विकास से परे अधिक व्यापक लक्ष्यों को हासिल करती है। इस प्रकार, जहाँ 'निपुण' भारत और एनसीएफ दोनों दक्षता-आधारित तरीक़ा अपनाते हैं, वहीं एनसीएफ़-एफ़एस, 'निपुण' भारत दक्षताओं से भी आगे जाता है। इस प्रकार, यह विभिन्न चरणों में शिक्षार्जन के लिहाज़ से आवश्यक समग्र विकास को सक्षम बनाती है।

निष्कर्ष

समस्त शिक्षार्जन के आधार के रूप में एफ़एलएन की बुनियादी दक्षताओं की धारणा, एनईपी 2020 और परिणामस्वरूप एनसीएफ़ के 'शिक्षार्जन के अभ्यास' के आग्रह से मेल खाती है। यह आग्रह स्पष्ट रूप से इस विचार का संकेत देता है कि

सब कुछ सिखाया नहीं जा सकता और न ही सिखाया जाना चाहिए। लेकिन जो सीखना है वह है स्कूल के वर्षों में या उसके बाद के वर्षों में विद्यार्थियों के लिए महत्त्वपूर्ण या रुचिकर चीज़ को सीखने की क्षमता। सीखना सिलसिलेवार होना चाहिए – यदि कोई कड़ी छूट जाती है, तो इसे पाटने में लम्बा समय या जीवन-भर लग सकता है। इस प्रकार, स्कूलों व शिक्षकों पर फ़ाउंडेशनल स्टेज के सभी क्षेत्रों में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा पर ध्यान केन्द्रित करने की ज़िम्मेदारी है।

आभार

इस लेख की संकल्पना और इस हेतु अपने बहुमूल्य योगदान प्रदान करने के लिए लेखक, अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय, बेंगलूरु में प्रवेश आउटरीच टीम की सदस्य प्रतीति प्रसाद के प्रति अपना आभार प्रकट करती हैं।

Bibliography

Prendergast, T., Diamant-Cohen, B. (2014). Investing in Early Childhood. What's the ROI? *Children and Libraries, Winter 2014*

Quinton, S. (2013). What San Antonio has to teach Washington, *National Journal, Vol. 36*

Ministry of Education. (2022). *National Achievement Survey*. https://nas.gov.in/

Ministry of Education. (2020). *National Education Policy*. https://www.education.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/NEP_Final_English_0.pdf

NCERT. (2022). *National Curriculum Framework for Foundational Stage*. https://ncert.nic.in/pdf/NCF_for_Foundational_Stage_20_October_2022.pdf

NCERT. (2023). *National Curriculum Framework for School Education*. *https://www.education.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/NCF-School-Education-Pre-Draft.pdf*

निमरत खण्डपुर 2011 में अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन से जुड़ीं थीं। वर्तमान में वे अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय के स्कूल ऑफ़ कंटीन्यूइंग एजुकेशन एंड यूनिवर्सिटी रिसोर्स सेंटर (SCE-URC) की सदस्य हैं। वे फ़ाउंडेशन के शिक्षा नीति से जुड़े काम में मदद करती आई हैं और नीति के प्रसार व समीक्षा में अपना योगदान देती रही हैं। साथ ही, प्रादेशिक व केन्द्रीय निकायों द्वारा की गई नीति सम्बन्धी पहल में भी सहायता करती हैं। उनसे *nimrat.kaur@azimpremjifoundation.org* पर सम्पर्क किया जा सकता है।

अनुवाद : मनोहर नोतानी **पुनरीक्षण :** उमा सुधीर **कॉपी एडिटर :** अनुज उपाध्याय

मैंने देखा है कि शिक्षक उन विद्यार्थियों के साथ अधिक समय बिताते हुए दिखते हैं जो तेज़ी से सीखते हैं और चीज़ों को बेहतर ढंग से समझते हैं, जबकि जिन्हें वास्तव में अतिरिक्त समय की आवश्यकता होती है उन्हें बहुत कम समय दिया जाता है। मेरा मानना है कि यदि सभी शिक्षक इस प्रश्न पर विचार करें कि, *इन बच्चों को कक्षा स्तर तक आने में मदद करने के लिए मुझे क्या करना चाहिए ताकि वे भी सीखना शुरू कर सकें?* तो वे इन बच्चों के लिए सीखने-सिखाने की रणनीति विकसित करने पर ध्यान दे सकते हैं और उन्हें कक्षा में निश्चित रूप से सफलता मिलेगी।

- सतवीर सिंह चौहान, मिश्रित क्षमता वाली कक्षा में समय का नियोजन, पेज 44

कला एवं सामाजिक-भावनात्मक और नैतिक शिक्षा

मालविका राजनारायण

हर महीने, कुछ दिन मैं अज़ीम प्रेमजी स्कूलों में कला की कक्षाओं का अवलोकन करती हूँ। कलाओं को सीखने की प्रक्रिया को समझने के साथ ही यह मुझे इस बात को समझने के लिए अतीव मूल्यवान लगता है कि किस तरह यह प्रक्रिया शिक्षा के अन्य सभी आयामों से जुड़ी हुई है। एक कला सुगमकर्ता होने के नाते, मैं कला शिक्षकों के सामने मौजूद रोज़मर्रा की चुनौतियों से परिचित हूँ। सभी अज़ीम प्रेमजी स्कूलों के दृश्य कलाओं और संगीत शिक्षकों से बने एक समूह के रूप में, हमने लगातार 5 साल से भी ज़्यादा समय तक स्कूली शिक्षा के विभिन्न चरणों में बेहतर कक्षा व्यवहारों को विकसित करने के लिए काम किया है।

ऐसा माना जाता है कि कला 'स्वतः' ही सामाजिक-भावनात्मक और नैतिक शिक्षा (Socio-Emotional and Ethical Learning) (एसईईएल) को प्रोत्साहित करती है। आज के समय में हम शिक्षकों और पालकों में कलाओं के सीखने के फ़ायदों और इस हक़ीक़त के बारे में जागरूकता विकसित होते देख रहे हैं कि किस प्रकार यह बच्चों के समग्र विकास और कल्याण में मदद करता है। शिक्षक और पालक यह भी चाहते हैं कि उनके बच्चे 'अच्छी तरह' से चित्र बनाना सीखें। यह आकांक्षा अक्सर कला की गतिविधियों के उद्देश्य को मुख्यतः तकनीकी कौशलों तक सीमित कर देती है, जो बच्चों के सीखने के फ़ाउंडेशनल स्टेज में सूक्ष्म प्रेरक कौशलों के विकास (हाथ-आँख का संयोजन और सामान्य वस्तुओं व उपकरणों का नियंत्रण) से सम्बन्धित होती हैं। बेशक यह भी महत्त्वपूर्ण है लेकिन हम बिना किसी सचेत योजना के सामाजिक-भावनात्मक और नैतिक शिक्षा पर ध्यान देने की उम्मीद नहीं कर सकते।

बच्चों को व्यस्त रखने के लिए वर्कशीट में रंग भरना एक आम गतिविधि बन गई है, और उन्हीं की तारीफ़ की जाती है जो रेखाओं के भीतर 'ढंग से' रंग भरते हैं। लेकिन क्या ऐसी वर्कशीटों में बच्चों के अपने विचार और भावनाएँ व्यक्त हो पाती हैं? अगर वे वर्कशीट में अपनी पसन्द के रंग भी भर रहे हैं, तब भी क्या हम इस बात के लिए मुतमईन हो सकते हैं कि बच्चों द्वारा किया गया रंगों का चुनाव उन भावनाओं और अहसासों से मेल खाता है जिन्हें वे सचेत तौर पर अभिव्यक्त करना चाहते हैं?

मेरी कला की कक्षा में कक्षा-2 के एक बच्चे ने स्लेट पर चाक से एक तस्वीर बनाई। इसमें उसने दिखाया कि दो सड़कें एक-दूसरे को काट रही हैं। इससे स्लेट चार भागों में बँट गई थी। जहाँ दोनों सड़कें एक-दूसरे को काट रही थीं उसके पास ही एक बस और एक दो पहिया गाड़ी थी। जब मैंने पूछा कि उस दृश्य में क्या हो रहा है, तो उसने बताया कि दोनों गाड़ियाँ आपस में भिड़ गई थीं। लोग घायल हो गए थे और एक एम्बुलेंस बुलाई गई थी और उन्हें अस्पताल ले जाया गया था। उसने कुछ कक्षाओं में बार-बार यही चित्र बनाया। थोड़ा चिन्तित होते हुए मैंने क्लास टीचर को यह बताया। फिर उन्होंने बच्चे की देखभाल करने वालों से पूछा कि क्या बच्चे ने किसी सड़क दुर्घटना को देखा है, और उस पर इसका प्रभाव पड़ा है। परिवार ने हमें आश्वस्त किया कि ऐसी कोई घटना नहीं घटी है और बच्चे को यह विचार टीवी देखने से आया होगा! कला की खुली गतिविधियाँ बच्चों को यह मौक़ा देती हैं कि वे उन विभिन्न विचारों और अनुभवों को अभिव्यक्त कर सकें जिनसे उनका सामना हुआ है। उनके कला के काम और उनसे होने वाले हमारे संवाद, दोनों के माध्यम से उनकी भावनात्मक अभिव्यक्ति का अन्दाज़ा लगाया जा सकता है। पहले से बनी हुई मछली, फूल या तितली वाली रंग भरने की वर्कशीटों में सम्भवतः उनके व्यक्तिगत और भावनात्मक कहन के लिए जगह नहीं बचती।

आइए, एनसीएफ़ में उल्लिखित कुछ विचारों और कक्षा में उनके निहितार्थ पर नज़र डालते हैं।

सकारात्मक आत्म-अवधारणा

जब बहुत छोटे बच्चे हमें अपनी गोंचा-गांची (scribbles – स्क्रिबल) दिखाते हैं, और उन्हें सकारात्मक प्रतिक्रियाएँ मिलती हैं तो उन्हें लगता है कि उन्हें समझ लिया गया है। बच्चे कभी-कभी अपनी इन अस्पष्ट रेखाओं के इर्द-गिर्द अपनी ख़ुद की कहानी गढ़ लेते हैं। जब वे चेहरे या मनुष्यों के सीधी रेखाओं वाले चित्र बनाने लगते हैं, तो मैं उनसे पूछती हूँ - *यह व्यक्ति कौन है?* उन मामलों में जहाँ ज़्यादा लोगों और चीज़ों के चित्र होते हैं, मैं पूछती हूँ - *इस चित्र में तुम कहाँ हो? इस चित्र में अन्य लोग कौन हैं? क्या यह तुम्हारा घर/कुत्ता/सामान है?* इन सवालों से उन्हें अपने परिवारों और अपने निकट के परिवेश के बारे में बात करने का मौक़ा मिलता है।

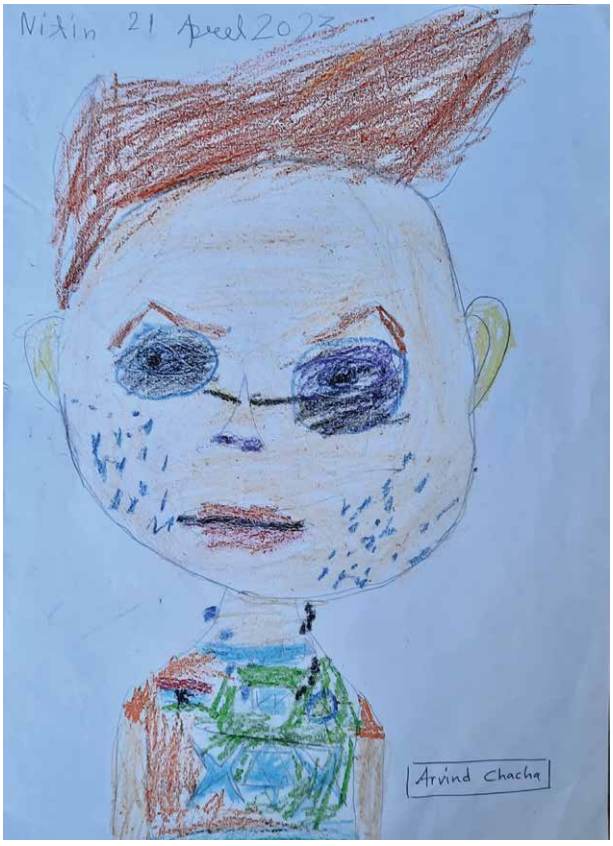

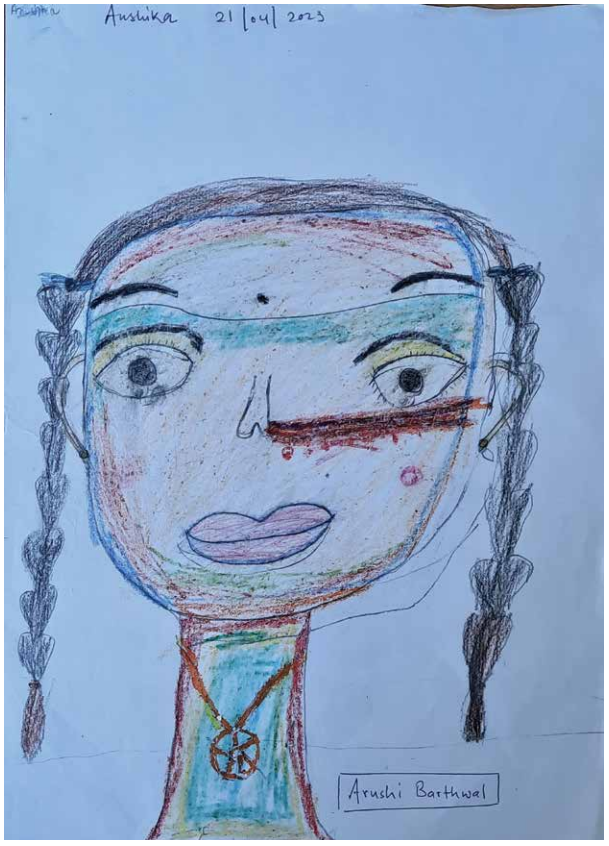

अज़ीम प्रेमजी स्कूल, उत्तरकाशी के कक्षा-2 के विद्यार्थियों द्वारा बनाई गई ख़ुद को, दोस्तों/परिवार को दर्शाती कलाकृतियाँ।

मैंने अन्य कला शिक्षकों को चित्र बनाते हुए बच्चों से बातें करते देखा है : *यह आदमी कैसे कपड़े पहनता है? क्या तुम मुझे दिखा सकती हो? अपने कपड़ों को देखो... इसमें एक कालर है, बटन हैं, बाजू हैं... क्या तुम्हारे चित्र में यह व्यक्ति*

इसी तरह का कुछ पहने हुए है? क्या यह कोई बच्चा है या बड़ा आदमी है? इस तरह की बातों के बाद बच्चे न केवल ख़ुद को और अपनी चीज़ों को देखते हैं बल्कि अपने आस-पास बैठे दोस्तों का भी बारीकी से अवलोकन करते हैं। वे इन व्यक्तिगत अवलोकनों को अपनी तरह से दर्ज करते हैं। हो सकता है वास्तविक न लगें लेकिन ब्यौरों की एक नई दुनिया खुल जाती है जब बच्चे चप्पल, बिन्दियों, चूड़ियों, बटनों, बाल बनाने के तरीक़ों, बस्तों, दाँतों और यहाँ तक कि किसी चेहरे पर लुढ़कते आँसुओं को भी चिन्हित करते हैं। उनका आत्मविश्वास और बढ़ता है और वे अपने ख़ुद के विचार और अभिव्यक्तियों को विकसित करने के लिए प्रोत्साहित होते हैं जब इनके बारे में कक्षा के भीतर सभी के बीच चर्चा होती है, उन्हें प्रदर्शित किया जाता है और देखा जाता है।

कक्षा-1 के संगीत कक्ष में मैंने एक शिक्षिका को बच्चों को तालियों, चुटकियों, जाँघों पर थाप देने और ज़बान और तालू के संयोग के द्वारा आवाज़ निकालते हुए सामान्य ध्वनि पैटर्न सिखाते हुए देखा। इसे 'लीडर का अनुसरण करो' के प्रारूप में खेला गया। इसमें हर एक बच्चे की बारी आती, और हर एक को यह आज़ादी दी गई कि वे अपनी तरह से – अपनी गति और अपने पैटर्न से – इन आवाज़ों को प्रस्तुत कर सकते हैं। शेष बच्चे उनका अनुसरण करते थे। यहाँ एक बार फिर, बच्चों को यह मौक़ा दिया गया कि वे ख़ुद के बारे में सकारात्मक विचार विकसित कर सकें क्योंकि उनके प्रत्येक विचार को वैधता मिल रही थी और उसे पूरे समूह द्वारा दोहराया जा रहा था।

भावनात्मक जागरूकता एवं नियमन

मैं कक्षा-1 में एक कला शिक्षिका के साथ थी। बच्चे कुछ रचने के लिए काग़ज़ की शीट हासिल करने को बेक़रार थे। इसी बीच दो बच्चों में कुछ हाथापाई हो गई। उनमें से एक इतना ग़ुस्सा हो गया कि उसने दूसरे बच्चे को मार दिया। शिक्षिका ने हस्तक्षेप किया और उनसे कहा कि वे अपनी-अपनी जगह पर बैठ जाएँ। फिर भी, मुद्दा सुलझा नहीं था। जो बच्चा ग़ुस्सा हुआ था, वह अभी भी ग़ुस्से में था और परेशान था। उस दिन के कार्य को पूरा करना उसके लिए कोई तार्किक विकल्प नहीं लग रहा था। कक्षा के अन्य बच्चे अपना काम शुरू करने के लिए बेचैन थे और शिक्षिका बच्चों को सामग्री बाँटने में व्यस्त हो गई थीं।

मैं उस परेशान बच्चे को देख रही थी और फिर मैंने उससे बात करने का निर्णय किया। मैंने उससे पूछा कि क्या हुआ। उसने शिकायत की कि उस दूसरे बच्चे ने उससे कुछ ख़राब बात बोल दी थी। मैंने उससे पूछा, 'क्या इसी कारण से तुम इतना ग़ुस्सा हुए?' उसने 'हाँ' में सिर हिलाया। 'क्या इसीलिए तुमने उसे मार दिया?' मैंने उससे धीरे से पूछा और उसने फिर से 'हाँ' में सिर हिलाया। मैंने उससे कहा मैं समझ गई कि तुम ग़ुस्से में हो। जब लोग मुझसे अच्छे से बात नहीं करते तो मैं भी ग़ुस्से में आ जाती हूँ और परेशान हो जाती हूँ। वह बच्चा रोने लगा। सम्भवतः वह निश्चिन्त हो गया कि इसके लिए किसी ने उसे डाँटा नहीं और किसी और ने उसकी निराशा को समझा। हमने इस बारे में बात की कि ग़ुस्सा होने पर किसी को मारने की बजाय वह दूसरी तरह से भी निपट सकता था। एक तरीक़ा यह हो सकता था कि अगले व्यक्ति को बताया जाए कि जब वे ख़राब बातें कहते हैं तो हमें बुरा लगता है और धक्का पहुँचता है। और दूसरा तरीक़ा था कि उस जगह से हट जाएँ और कहीं और बैठ जाएँ।

मैंने हाथापाई में शामिल दोनों बच्चों से कहा कि चित्रकारी करते वक़्त, आज जो भी हुआ उसके बारे में सोचें। उनके चित्र में जो कुछ घटा था वह कुछ भी नहीं दिखाई दिया। लेकिन उन्हें चित्र बनाने और उनमें रंग भरने का समय देने से उन्हें शान्त होने, पुनः अपना ध्यान केन्द्रित करने और यह महसूस करने में मदद मिली कि उन्हें कोई समझ रहा है। शिक्षिकाओं के लिए यह चुनौती होती है कि उन्हें एक कक्षा में अकेले ही प्रत्येक बच्चे की ज़रूरतों और मसलों को सम्हालना पड़ता है। इसके लिए कुछ रणनीतियाँ पहले से ही तैयार करके रखने से मदद मिलती है। बच्चों की भावनाओं को महत्त्व देना, और उनके अहसासों को अभिव्यक्त करने वाले शब्द अथवा चित्र तलाश करने में उनकी मदद करना एक ऐसी ही रणनीति हो सकती है।

सामाजिक विकास

कलाएँ बच्चों के लिए साथ में काम करने और अपने सामान दूसरों से साझा करने के लिए अनेक अवसर तैयार करती हैं। मैं कक्षा-1 के विद्यार्थियों के एक समूह का अवलोकन कर रही थी जब वे एक बड़ी-सी तस्वीर पर एक साथ काम कर रहे थे। कुछ ने नेतृत्व करते हुए ड्राइंग शीट पर अलग-अलग जगहें चिन्हित कीं और समूह के प्रत्येक सदस्य को एक-एक जगह काम करने के लिए सौंप दीं। मैंने ध्यान दिया कि एक बच्चा भागीदारी नहीं कर रहा था और बैठा हुआ था। जब मैंने उससे कारण पूछा कि वह कुछ क्यों नहीं कर रहा है तो उसने कहा, 'मुझे चित्र बनाना नहीं आता।' तुरन्त समूह के कुछ बच्चों ने फुसफुसाया, 'दीदी इसको नहीं आता है।' क्षुब्ध होकर मैंने उनसे कहा कि ड्राइंग शीट पर थोड़ी-सी जगह उसके लिए भी बचाएँ। फिर मैंने उस बच्चे से पूछा कि क्या उसे पेन्सिल पकड़ना आता है। उसने कहा 'हाँ'। मैंने उसे कहा क्या वह इसे काग़ज़ पर रखकर अपना हाथ फिरा सकता है। उसने कहा वह ऐसा कर सकता है। मैंने बताया इसी तरह तो हम सब चित्र बनाते हैं। अगर वह जानता है तो वह भी चित्र बना सकता है।

मैंने उसे पेन्सिल दी और उसे कहा कि मुझे दिखाए कि वह कैसे इसे काग़ज़ पर चलाता है। उसने एक दरवाज़े और एक खिड़की वाला छोटा-सा एक घर बनाया। मैंने सभी से कहा कि उसकी चित्रकारी देखें और उनसे पूछा कि क्या वह चित्र बना सकता है या नहीं। वे सभी मुस्कराए और इस बात को मान गए कि वह कर सकता है।

कई कला शिक्षिकाएँ नियमित रूप से कक्षा में कलाकृतियों को प्रदर्शित करने और उन पर चर्चा करने का समय निकालती हैं। इस प्रक्रिया में बच्चे अन्य लोग क्या सोचते और महसूस करते हैं, उसे सुनते हैं और उस पर ध्यान देते हैं। वे कई तरह की अभिव्यक्तियों की सराहना करना सीखते हैं। सभी बच्चों के साथ सकारात्मक रिश्ता बनाने में शिक्षिका की भूमिका महत्त्वपूर्ण होती है, ख़ासतौर से उन बच्चों के साथ जो शर्मीले होते हैं, या जिनका आत्मविश्वास कम होता है। इनमें से कई समस्याएँ हल हो सकती हैं अगर शिक्षिका कक्षा की पारस्परिक गतिविधियों पर नज़र रखती हों, उनके प्रति सचेत और संवेदनशील हों। कला की कक्षा में सामाजिक-भावनात्मक और नैतिक शिक्षा के विकास में सहयोग करने वाले प्रमुख तत्व हैं - शिक्षणविधि और कक्षा में सुगमता बनाना, न कि बस कोई भी आकर्षक कला गतिविधि।

मालविका राजनारायण वड़ोदरा, गुजरात में रहती हैं। वे एक दृश्य कलाकार और शिक्षक हैं। वे एम.एस. यूनिवर्सिटी ऑफ़ बड़ौदा के फाइन आर्ट्स विभाग से चित्रकला में स्नातकोत्तर हैं। उन्होंने भारत और भारत से बाहर कई जगह अपने काम की प्रदर्शनी लगाई है और आर्टिस्ट-इन-रेसीडेंस कार्यक्रमों में हिस्सेदारी की है। वे अज़ीम प्रेमजी स्कूलों के लिए कला की रिसोर्स पर्सन के रूप में काम करती हैं और अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय,भोपाल में अतिथि शिक्षक भी हैं। वे भारत और मध्य एशिया की लघु चित्रकला परम्पराओं में, और साथ ही, दुनियाभर की विविध वस्त्र कलाओं और शिल्पों में दिलचस्पी रखती हैं। उनसे *malavika.rajnarayan@azimpremjifaoundation.org* पर सम्पर्क किया जा सकता है।

अनुवाद : अमिता शीरीं **पुनरीक्षण :** भरत त्रिपाठी **कॉपी एडिटर :** अफसाना पठान

एक जीवन्त गाँव के बीचोबीच, आँगनवाड़ी केन्द्र के पास, एक शाम बच्चों के समूहों के साथ बीतती है जो ख़ुशी-ख़ुशी विभिन्न प्रकार के खेल, खेल रहे हैं। शिक्षाविद उनकी सामाजिक भागीदारी को देखकर प्रसन्न होते हैं। विभिन्न प्रकार के खेल – चीज़ों के साथ, जैसे प्लास्टिक के कप के साथ; प्रतीकात्मक खेल जिसमें वे मिट्टी से विभिन्न आकृतियाँ बनाते हैं; नियमों वाले खेल, जैसे लागोरी; सामाजिक-नाटकीय खेल – बच्चों का एक समूह 'गणेश जुलूस' निकालने का अभिनय करता है; और निश्चित रूप से, शारीरिक खेल भी जैसे कूदना, कुलाँचे भरना और दौड़ना आदि, ये सभी बच्चों की समृद्ध कल्पना और स्थानीय परम्पराओं से उनके सम्बन्ध को प्रदर्शित करते हैं। यह दृश्य जादुई है।

- उमामहेश्वर राव जग्गेना, जादुई पिटारा - बचपन में खेलों का जादू, पेज 58

बुनियादी संख्याज्ञान का शिक्षण

अंकित शुक्ला

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (एनईपी) में सुझाए गए सुधारों के आधार पर, राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा - फ़ाउंडेशनल स्टेज 2022 (एनसीएफ़-एफ़एस) बनाया गया था। इसका अनुसरण करते हुए इस लेख में, प्रारम्भिक संख्याज्ञान के लिए कक्षा में उपयोग की जाने वाली परिवर्तित शिक्षण तकनीकों का वर्णन करते हुए कुछ कक्षा प्रक्रियाओं का सुझाव दिया गया है।

कुल मिलाकर, एनसीएफ़-एफ़एस दस्तावेज़ में, गणित के शिक्षण के लिए कहा गया है कि, "बच्चे अपने परिवेश और संस्कृति से विभिन्न गणितीय कौशल कक्षा में लेकर आते हैं, जो गणित सीखने का आधार होना चाहिए।" इसे आधार मानते हुए, इस लेख में बात की गई है कि एक शिक्षक को कक्षा शिक्षण में कैसे आगे बढ़ना चाहिए।

गणितीय रूप से दक्ष बनने के लिए, बच्चों में अवधारणात्मक समझ, प्रक्रियात्मक समझ, अनुप्रयोग, सम्प्रेषण और तर्क तथा गणित के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण बनाने की आवश्यकता है।

दैनिक कक्षा प्रक्रिया के लिए गणितीय दक्षता के इन सभी पहलुओं को निम्नलिखित चार ब्लॉकों में डिज़ाइन किया जा सकता है। किसी गणितीय अप्रोच/ प्रक्रिया को कार्य की प्रकृति के अनुरूप और उस पर आधारित होना चाहिए।

स्रोत : फ़ाउंडेशनल स्टेज के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2022, पृष्ठ-121

कक्षा शिक्षण के लिए शिक्षण ब्लॉक

शिक्षक विद्यार्थियों से एक संक्षिप्त बातचीत के साथ गणित की कक्षा शुरू कर सकते हैं, जिसमें मानसिक गणना, गणित से सम्बन्धित कविताएँ (उदाहरण अन्त में दिए गए हैं), या उनके रोज़मर्रा के जीवन से जुड़ी कोई बात शामिल हो सकती है, क्योंकि औपचारिक शिक्षण को शुरू करने से पहले, ये चर्चाएँ माहौल बनाने का कार्य करती हैं।

इसके बाद, विद्यार्थियों को गणित की उस अवधारणा के अनुरूप गतिविधियों में संलग्न किया जा सकता है जो शिक्षक पढ़ाने वाले हैं। शिक्षक को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि गतिविधियाँ अवधारणा से जुड़े विभिन्न अधिगम प्रतिफलों से मेल खाती हों। इन गतिविधियों का उद्देश्य संख्यात्मक कौशल में दक्षता हासिल करना हो सकता है। दक्षता वह अवस्था है

चित्र-1 : *गणित शिक्षण के लिए चार-ब्लॉक मॉडल।*

स्रोत : फ़ाउंडेशनल स्टेज के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा। 4.5.2.3 गणित शिक्षण के लिए शिक्षण ब्लॉक। पृष्ठ-121

जहाँ कोई विद्यार्थी समस्या को समझ सकता है, समस्या हल कर सकता है, एक ही समस्या को हल करने के लिए विभिन्न रणनीतियाँ विकसित कर सकता है और संख्यात्मकता के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण रखता है।

तीसरे ब्लॉक के अन्तर्गत विद्यार्थियों को अवधारणा के अभ्यास का अवसर देने के उद्देश्य को ध्यान में रखा गया है। विद्यार्थी किसी कार्यपुस्तिका या पाठ्यपुस्तक में दिए गए अभ्यास-कार्यों की सहायता से इन अवधारणात्मक कौशलों का अभ्यास कर सकते हैं। इस अभ्यास से, वे कक्षा में चर्चा की जाने वाली अवधारणा की प्रक्रियात्मक और अवधारणात्मक समझ विकसित कर पाएँगे। अवधारणा के पर्याप्त अभ्यास से विद्यार्थी अपने उत्तरों के लिए तर्क विकसित कर पाते हैं।

चूँकि, बच्चों को खेल से जुड़ी कोई भी चीज़ पसन्द होती है, अन्तिम खण्ड में, बच्चों को एक ऐसा खेल खेलने के लिए कहा जा सकता है, जो उनके द्वारा अभी-अभी हासिल किए गए कौशल से सम्बन्धित हो। यह विद्यार्थियों में संख्यात्मक कौशलों को सीखने को सुदृढ़ करेगा और उनमें समस्या-समाधान कौशल विकसित करने पर लक्षित होगा।

इस प्रक्रिया से जुड़ा मेरा अनुभव

लेख के अगले हिस्से में, मैं दुर्ग ज़िले के अंजोरा क्लस्टर में खपरी प्राइमरी स्कूल में उपयोग में ली जा रही इस प्रक्रिया के अपने प्रत्यक्ष अनुभव का वर्णन कर रहा हूँ। कक्षा-1 में 34 विद्यार्थी उपस्थित थे।

ब्लॉक-1 : मौखिक गणित बातचीत

अध्यापिका 10-50 तक गिनती पढ़ा रही थीं। उन्होंने अपना पाठ आरम्भ किया और बातचीत शुरू हुई :

अध्यापिका : अच्छा, बताओ हमारी कितनी आँखें हैं?

सभी बच्चों ने दो-दो उँगलियाँ दिखाकर कहा : दो!

अध्यापिका ने एक बच्चे का नाम लेते हुए पूछा : ठीक है नीलम, बताओ तुम्हारी कितनी नाक हैं?

नीलम : बस एक ही मैडम।

अध्यापिका : ठीक है मालती, अब तुम बताओ कि तुम्हारे कितने दाँत हैं?

मालती : 24, मैडम।

अध्यापिका : तुमने इतनी जल्दी गिनती कर ली? बहुत ख़ूब। टिकेश, तुम्हारे सिर पर कितने बाल हैं?

टिकेश : बहुत सारे मैडम। गिनने में बहुत समय लगेगा।

अध्यापिका : हाँ, तुम बिल्कुल ठीक कह रहे हो। अब, आओ एक गतिविधि करते हैं।

ब्लॉक-2 : कौशल शिक्षण : स्थानीय मान

शिक्षिका स्थानीय मान की अवधारणा पढ़ाने जा रही थीं। वे पहले ही संख्याओं की खुली इकाइयों और बण्डल वाली इकाइयों की अवधारणाएँ और अर्थ समझा चुकी थीं।

शिक्षिका ने प्रत्येक विद्यार्थी को कुछ माचिस की तीलियाँ दीं। फिर, उन्होंने उनसे गिनकर बताने को कहा कि प्रत्येक के पास कितनी माचिस की तीलियाँ हैं। विद्यार्थियों ने अपनी-अपनी तीलियाँ गिनीं। एक विद्यार्थी के पास 17 तीलियाँ थीं और दूसरे के पास 22। शिक्षिका ने पूछा, "तुम्हारे पास खुली और बण्डल रूप में कितनी तीलियाँ हैं?" सभी विद्यार्थी अपनी-अपनी तीलियों से 10-10 तीलियों के बण्डल बनाने लगे। जिस विद्यार्थी के पास 17 तीलियाँ थीं, अब उसके पास

चित्र-2 : *कार्यपुस्तिका में अभ्यास करती एक छात्रा।*

चित्र-3 : *शिक्षिका और विद्यार्थी गणित का खेल खेलते हुए।*

एक बण्डल के अलावा सात खुली तीलियाँ थीं। एक अन्य विद्यार्थी जिसके पास 22 तीलियाँ थीं, उसने दो बण्डल बना लिए थे और उसके पास दो और तीलियाँ बची थीं। विद्यार्थी खुली और बन्धी हुई तीलियों को शिक्षिका को दिखाते हुए उनकी संख्या बताने लगे।

ब्लॉक-3 : कौशल अभ्यास

इसके बाद, पाठ्यपुस्तक में अध्याय के अन्त में दिए गए अभ्यास-कार्यों को करके अवधारणा का अभ्यास करने का समय था। शिक्षिका ने सभी प्रश्नों को एक-एक करके समझाया और सभी बच्चे निर्देशानुसार प्रश्नों को हल करने लगे। शिक्षिका इस बात पर नज़र रख रही थीं कि विद्यार्थी किस प्रकार प्रगति कर रहे हैं और समस्याओं से जूझ रहे विद्यार्थियों की मदद कर रही थीं।

ब्लॉक-4 : गणित खेल

विद्यार्थियों द्वारा अभ्यास पूरा करने के बाद, शिक्षिका ने उनसे पूछा कि क्या वे कोई खेल खेलना चाहेंगे और विद्यार्थियों ने सर्वसम्मति से हाँ में उत्तर दिया। शिक्षिका कुछ कार्ड लाईं और उन्हें कक्षा के सामने बिखेर दिए। कार्ड दो प्रकार के थे – कुछ पर संख्याएँ (अंक) लिखी थीं और कुछ पर विभिन्न संख्याओं के लिए केवल बिन्दु बने हुए थे। शिक्षिका ने प्रत्येक विद्यार्थी से एक कार्ड चुनने को कहा।

जब शिक्षिका एक संख्या का नाम पुकारतीं, तो जिस विद्यार्थी के पास उस अंक वाला कार्ड होता और जिसके पास उतने ही बिन्दुओं वाला कार्ड होता, वे आगे आकर जोड़ी बना लेते। शिक्षिका ने 1 से 10 तक सभी संख्याओं के नाम बोले और विद्यार्थियों ने अंकों को अपने कार्ड पर बिन्दुओं से मिलाया और जोड़े बनाए।

आकलन

मुझे कक्षा-2 की शिक्षिका द्वारा साप्ताहिक आकलन गतिविधि का अवलोकन करने का भी अवसर मिला। मैं कक्षा में पीछे विद्यार्थियों के साथ बैठ गया। शिक्षिका के निर्देश देने के बाद, विद्यार्थियों ने कार्यपुस्तिका का एक पृष्ठ खोला। फिर शिक्षिका ने प्रत्येक सवाल को पढ़ा और विद्यार्थियों को बताया कि उन्हें क्या करना होगा। जैसे ही विद्यार्थियों ने सवालों पर काम करना शुरू किया, शिक्षिका उनके बीच घूम-घूमकर काम की जाँच करने लगीं, उनके सवालों के जवाब देने लगीं और उनकी शंकाओं का समाधान करने लगीं।

इसके बाद, शिक्षिका ने कुछ और अभ्यास के लिए ब्लैक बोर्ड पर प्रश्न लिखे। विद्यार्थी उन प्रश्नों को हल करने लगे। इस दौरान, शिक्षिका ने चारों ओर जाकर विद्यार्थियों की अभ्यास पुस्तिकाओं की जाँच की और उन्हें अंक दिए। कुछ बच्चों को शिक्षिका अंक देना भूल गईं, तो बच्चों ने उन्हें याद दिलाया। अन्त में, शिक्षिका ने कम अंक प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों का एक समूह बनाया और उनके साथ अलग से काम किया।

निष्कर्ष

यदि हम चार-ब्लॉक मॉडल की जाँच करते हैं, तो यह स्पष्ट है कि शिक्षिका को इसे लागू करने से सकारात्मक परिणाम मिले। शिक्षिका ने उल्लेख किया कि यह दृष्टिकोण विद्यार्थियों को बेहतर सीखने में मदद कर रहा है और कुछ विद्यार्थी जो स्कूल से ग़ायब रहते थे, वे नियमित रूप से आने लगे हैं।

इस चार-ब्लॉक प्रक्रिया के दौरान, विद्यार्थी बहुत सारा ज्ञान स्वयं प्राप्त करते हैं। जो पीछे रह जाते हैं या उन्हें समझने के लिए अधिक समय या सहायता की आवश्यकता होती है, उन्हें एक समूह में रखा जाता है और उनके साथ व्यक्तिगत रूप से काम पूरा किया जाता है। इससे, सभी विद्यार्थी इस प्रक्रिया में भागीदारी महसूस करते हैं।

शिक्षिका के इन अनुभवों से ऐसा लगता है कि यदि हम अपनी नियमित शिक्षण प्रक्रिया में इस मॉडल को अपनाएँ और शिक्षकों के पास पर्याप्त सामग्री हो, तो बच्चों का सीखना सुनिश्चित है।

एक-एक-एक,
नाक हमारी एक।
दो-दो-दो,
हाथ हमारे दो।
तीन-तीन-तीन,
रिक्शा के पहिये तीन।
चार-चार-चार,
कार के पहिये चार।
पाँच-पाँच-पाँच,
हर हाथ में अँगुली पाँच।
छह-छह-छह
चींटी की टाँगें छः।
सात-सात-सात,
हफ्ते में दिन सात।
आठ-आठ-आठ,
मकड़ी की टाँगें आठ।
नौ-नौ-नौ,
मेरे पास रुपये नौ।
दस-दस-दस,
हो गई गिनती बस।

एक राजा की बेटी,
दो दिन से बिस्तर पर लेटी।
तीन डॉक्टर देखने आए,
चार दवा की पुड़िया लाए।
पाँच घंटे में घोली दवाई,
छः घंटे के बाद पिलाई।
सात बजे जब आँखें खोली,
आठ बजे वह माँ से बोली।
नौ बजे पी दूध-मलाई,
दस बजे ही दौड़ लगाई।

अंकित शुक्ला ने उत्तर प्रदेश तकनीकी विश्वविद्यालय, लखनऊ से बीटेक और एमबीए किया। वह गणित शिक्षणशास्त्र के क्षेत्र में काम करते हैं। उनके काम का एक बड़ा हिस्सा सरकारी स्कूलों के गणित शिक्षकों में गणित की विषयवस्तु, परिप्रेक्ष्यों और शिक्षणशास्त्र के सन्दर्भ में क्षमतावर्धन से सम्बन्धित है। उनसे *ankitshkl67@gmail.com* पर सम्पर्क किया जा सकता है।

अनुवाद : यशोधरा कनेरिया **पुनरीक्षण :** सुशील जोशी **कॉपी एडिटर :** अनुज उपाध्याय

समावेशी तरीक़े से सिखाने के लिए समय का नियोजन करना

बनिश्री महापात्रा

अपनी कक्षा में बच्चों को सीखने की सहूलियत के लिए मैं उन्हें सुनने, चर्चा करने, विचार साझा करने, अन्वेषण करने, खेलने, चित्र बनाने, पढ़ने और लिखने के पर्याप्त अवसर देती हूँ। शिक्षण की जो पद्धति मैं अपनाती हूँ वह विषयगत है और मैं जितना सम्भव हो, सीखने[i] के कई क्षेत्रों को एक साथ रखने की कोशिश करती हूँ। कक्षाओं को ज़्यादा दिलचस्प बनाने और विद्यार्थियों की भागीदारी बेहतर हो, इसका ध्यान रखने के लिए मैं ऑडियो-विजुअल, गतिविधियों, चित्रों और टीएलएम का इस्तेमाल करती हूँ। मैं यह भी सुनिश्चित करती हूँ कि संगीत/कला और शारीरिक शिक्षा (पीई) की एक कक्षा हर रोज़ लगे।

> पूरे दिन के लिए ध्यानपूर्वक योजना बनाने की आवश्यकता होती है ताकि बच्चों के विकास के सभी क्षेत्रों पर पर्याप्त समय और ध्यान दिया जा सके। वैसे हर विकास क्षेत्र की गतिविधियाँ दूसरे विकास क्षेत्र से सम्बद्ध होती हैं, (उदाहरण के लिए, एक अच्छी कहानी भाषा के विकास में तो मदद करेगी ही पर साथ-ही-साथ सामाजिक-भावनात्मक और नैतिक विकास में भी मदद करेगी)। तय की गई दिनचर्या यह सुनिश्चित करे कि बच्चों को ऐसे अधिक-से-अधिक अवसर मिलें, जहाँ वे हर क्षेत्र में अलग-अलग तरह के अनुभव प्राप्त कर सकें।

स्रोत : फ़ाउंडेशनल स्टेज के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा । खण्ड-7.1. दिन का नियोजन पृष्ठ-187

बुनियादी स्तर पर एकीकृत शिक्षण की हमारी पद्धति के कुछ महत्त्वपूर्ण पहलू आगे दिए गए हैं।

समय-सारणी

दैनिक कार्यक्रम में गणित, हिन्दी, अँग्रेज़ी, सुबह की सभा और क्लब गतिविधियों के साथ-साथ संगीत, कला और शारीरिक शिक्षा का सन्तुलित संयोजन शामिल होता है जो बच्चे के समग्र विकास में मदद करता है। प्रारम्भिक कक्षाओं में, हम प्रतिदिन भाषा अध्ययन के लिए औसतन दो घण्टे, गणित के लिए एक घण्टा और शारीरिक शिक्षा, कला और संगीत के लिए औसतन 30 मिनट रखते हैं। भाषा की कक्षाएँ कला और संगीत के साथ सहजता से जुड़ी होती हैं और अँग्रेज़ी भाषा के अध्ययन में हम पर्यावरण अध्ययन (ईवीएस) को शामिल करते हैं।

पूरे दिन की योजना बनाना

एक शिक्षक के तौर पर, मैं विद्यार्थियों के पिछले ज्ञान और

कक्षा-2

दिन / समय	09:15 am - 9:55 am	10:00 am - 10:45 am	10:45 am - 11:30 am	11:30 am - 11:35 am	11:35 am - 12:20pm	12:20 pm - 1:05pm	1:05 pm - 1:50 pm	1:50 pm - 2:35 pm	2:35 pm - 3:20 pm	3:20 pm - 3:25 pm	3:25 pm - 4:10 pm
सोम	सुबह की सभा	हिन्दी गजेन्द्र	हिन्दी गजेन्द्र	छोटा ब्रेक	शारीरिक शिक्षा देवेन्द्र	लंच ब्रेक	गणित गौतम	संगीत खिलेन्द्र	अँग्रेज़ी बनिश्री	छोटा ब्रेक	कला गौतम
मंगल	सुबह की सभा	कला गौतम	हिन्दी गजेन्द्र	छोटा ब्रेक	हिन्दी गजेन्द्र	लंच ब्रेक	गणित गौतम	शारीरिक शिक्षा देवेन्द्र	अँग्रेज़ी बनिश्री	छोटा ब्रेक	लाइब्रेरी गौतम
बुध	सुबह की सभा	हिन्दी गजेन्द्र	गणित गौतम	छोटा ब्रेक	अँग्रेज़ी मोख्तार	लंच ब्रेक	गणित गौतम	संगीत खिलेन्द्र	अँग्रेज़ी बनिश्री	छोटा ब्रेक	अँग्रेज़ी बनिश्री
गुरु	सुबह की सभा	अँग्रेज़ी मोख्तार	गणित गौतम	छोटा ब्रेक	हिन्दी गजेन्द्र	लंच ब्रेक	कला गौतम	हिन्दी गजेन्द्र	अँग्रेज़ी बनिश्री	छोटा ब्रेक	हिन्दी गजेन्द्र
शुक्र	सुबह की सभा	शारीरिक शिक्षा देवेन्द्र	लाइब्रेरी गौतम	छोटा ब्रेक	गणित गौतम	लंच ब्रेक	हिन्दी गजेन्द्र	अँग्रेज़ी मोख्तार	अँग्रेज़ी बनिश्री	छोटा ब्रेक	गणित गौतम
शनि	सुबह की सभा	गतिविधि कक्षा	गतिविधि कक्षा	छोटा ब्रेक	गतिविधि कक्षा	लंच ब्रेक	गतिविधि कक्षा				

चित्र-1 : *कक्षा-2 की समय-सारणी।*

ईसीई (सोमवार-शुक्रवार)								
09:15 am to 9:35 am	**9:35 am to 10:15 am**	**10:15 am to 10:45 am**	**10:45 am to 10:55 am**	**10:55 am to 11:35 am**	**11:35 am to 12:10 pm**	**12:10 pm to 1:00 pm**	**1:00 pm to 1:45 pm**	**1:45 pm to 2:30 pm**
नाश्ता	सर्किल टाइम/ बातचीत (थीम आधारित)	अँग्रेज़ी भाषा, सामाजिक-भावनात्मक कहानी कहना, पढ़ना, लिखना	छोटा ब्रेक	संज्ञानात्मक : संख्या-पूर्व अवधारणा, संख्या और ईवीएस	हिन्दी भाषा : कहानी, कविताएँ, पढ़ना-लिखना	लंच ब्रेक	मोटर सम्बन्धी विकास आउटडोर तथा इनडोर खेल	सारांश, पुनरीक्षण, मूल्यांकन

चित्र-2 : *प्री-प्राइमरी की समय-सारणी।*

सामाजिक सन्दर्भ के आधार पर अपनी कक्षाओं की योजना बारीकी से बनाती हूँ। दृश्य-श्रव्य (ऑडियो-वीडियो) साधनों और गतिविधियों के ज़रिए सुनने और बोलने पर ज़ोर दिया जाता है। वीडियो देखने के लिए एक नियत स्थान का होना विद्यार्थियों को सामग्री से जुड़ने में मदद करता है। कक्षाएँ दिलचस्प वार्म-अप गतिविधियों के साथ शुरू होती हैं, इसके बाद ध्वन्यात्मक अभ्यास, सम्बन्धित वीडियो देखने, चर्चाओं और लेखन से जुड़ी गतिविधियाँ होती हैं। सुनने, बोलने के कौशल और व्याकरण को विकसित करने के लिए कई तरह की गतिविधियों को शामिल किया गया है, जैसे *दिखाओ-बताओ,* रोल प्ले और सस्वर पाठन।

प्रभावी ढंग से सिखाने के लिए मैं अपनी 45 मिनट की कक्षा को चार प्रमुख हिस्सों में बाँटती हूँ :

1. 5 मिनट : पाठ का माहौल तैयार करने के लिए वार्म-अप गतिविधियों और पुनरावृत्ति से शुरुआत करना।
2. 15 मिनट : सुनने और बोलने की गतिविधियाँ करवाना जैसे कविता पाठ, वीडियो देखना और कहानी सुनाना।
3. 15-20 मिनट : विषय से सम्बन्धित पढ़ने और लिखने के अभ्यास पर ध्यान देना।
4. 5-10 मिनट : प्रमुख बिन्दुओं का सारांश देते हुए समापन करना।

यहाँ कविता, *कम बैक सून* की एक विस्तृत योजना दी गई है:

Take a bus	Maybe near
Or take a train,	Or maybe far,
Take a boat	Take a rocket
Or take a plane,	To the moon,
Take a taxi,	But be sure
Take a car,	To come back soon.

स्रोत : एनसीईआरटी कक्षा-2 इंग्लिश मृदंग। अध्याय-5 - कम बैक सून। पृष्ठ-38

पाठ : Come Back Soon (कम बैक सून, कविता)

सीखने के परिणाम

• सामान्य : सुनने, बोलने, पढ़ने और लिखने के कौशल को विकसित करना (LSRW)

• विशिष्ट : परिवहन के विभिन्न माध्यमों को समझना

शब्दावली

- परिवहन के विभिन्न माध्यमों के नाम जानना, और far (फ़ार, दूर), near (नियर, पास), soon (सून, जल्दी), sure (श्योर, निश्चित) और Moon (मून, चन्द्रमा) जैसी अवधारणाओं को समझना।

गतिविधियाँ

1. डिस्प्ले बनाना : परिवहन के हरेक माध्यम से जुड़े विभिन्न वाहनों को दर्शाने वाले चार्ट बनाने के लिए कक्षा को तीन समूहों (वायु, जल और भूमि) में बाँटना।
2. दिखाओ-बताओ : विभिन्न वाहनों के फ़्लैशकार्ड वाले 'मैजिक बैग' का इस्तेमाल करना, हरेक बच्चे को एक कार्ड चुनने और उसके बारे में बोलने के लिए प्रोत्साहित करना।
3. पहेली बनाना : विद्यार्थियों की जोड़ी बनाना और उन्हें विभिन्न वाहनों से जुड़ी पहेलियाँ बनाने का काम देना।
4. ओरिगेमी : काग़ज़ के रॉकेट और नावें बनाकर बाहरी (आउटडोर) गतिविधियों में शामिल कराना ताकि सीखने के अनुभव में वृद्धि हो सके।

मल्टीमीडिया का इस्तेमाल

- वीडियो : शैक्षिक गाने, जैसे *व्हील्स ऑन द बस, रो, रो, रो योर बोट,* और परिवहन के साधनों पर जानकारीपूर्ण वीडियो शामिल करना।
- पुस्तकें : तूलिका बुक्स की पुस्तक *लेट्स गो* पढ़ने के कौशल को बढ़ाने में उपयोगी है।

सामाजिक-भावनात्मक घटक

- सार्वजनिक परिवहन में दूसरों की मदद करने और यातायात नियमों के पालन के महत्त्व पर केन्द्रित एक नाटक गतिविधि के साथ समापन करना।

इस पद्धति से विद्यार्थियों को सीखने का एक व्यापक और संवादमूलक अनुभव मिलता है जिसमें भाषा विकास और विषय केन्द्रित ज्ञान के विभिन्न पहलू भी शामिल होते हैं।

पाठ्यचर्या योजना

हमारी कक्षाएँ गतिविधि-आधारित और मनोरंजक होने के लिए डिज़ाइन की गई हैं, जिसमें हमारी शिक्षण पद्धति में कई दिलचस्प काम शामिल हैं। हालाँकि ईवीएस को औपचारिक रूप से पाठ्यक्रम में शामिल नहीं किया गया है लेकिन अँग्रेज़ी भाषा की कक्षाओं में हम ईवीएस विषयों को शामिल करते हैं, जैसे शरीर के अंग, परिवार, पौधे, जानवर, परिवहन आदि। यह न केवल विद्यार्थियों की शब्दावली को समृद्ध करता है बल्कि उनके आस-पास के वातावरण के साथ उनके जुड़ाव को भी बढ़ाता है।

सीखने के अनुभव में भाषा को शामिल करने के मामले में कला, संगीत और शारीरिक शिक्षा कक्षाएँ भी कोई अपवाद नहीं हैं। इन कक्षाओं में शिक्षक अँग्रेज़ी में निर्देश देते हैं जिससे भाषा के विकास में योगदान मिलता है। संगीत सत्र में विद्यार्थी हिन्दी और अँग्रेज़ी, दोनों भाषाओं में गाने सीखते हैं। कला कक्षाएँ केवल रचनात्मकता बढ़ाने को लेकर नहीं होतीं; उनमें संख्याओं और अक्षरों के इस्तेमाल से जानवरों का चित्र बनाना भी शामिल है। मुखौटा निर्माण और ओरिगेमी जैसी गतिविधियाँ सीखने में एक रचनात्मक और हस्त-कौशल सम्बन्धी आयाम जोड़ती हैं।

विद्यार्थी अलग-अलग तरह के इनडोर और आउटडोर खेलों में सक्रिय रूप से भाग लेते हैं जिससे शारीरिक फ़िटनेस के साथ-साथ उनकी मानसिक दक्षता भी बढ़ती है। इसके अतिरिक्त, योग और आसन को पाठ्यक्रम में शामिल करने से उनके समग्र विकास में मदद मिलती है।

कक्षा योजना

प्रिंट-समृद्ध कक्षा

फ़ाउंडेशनल स्टेज की कक्षाएँ चार्ट, कहानियाँ, कविताएँ और चित्र कार्ड जैसी छपी हुई सामग्री के साथ और समृद्ध होती हैं। कक्षा के अन्दर और बाहर अलग-अलग तरह की प्रिंट सामग्री लगाने से विद्यार्थियों की पढ़ने में दिलचस्पी बढ़ती है। प्रिंट-समृद्ध वातावरण बनाने से पढ़ने की आदत को भी बढ़ावा मिलता है। कक्षा के विषयों के आधार पर चार्ट लगाना और कक्षा में वस्तुओं पर नाम लिखना (लेबल लगाना) इसमें और

***चित्र-4** : कक्षा के लिए डिस्प्ले बनाते विद्यार्थी।*

मदद करता है। अक्षर कार्ड, चित्र कार्ड और कहानी कार्ड जैसे कार्डों से खेलने से विद्यार्थियों को शब्दों और चीज़ों के बीच सम्बन्ध को समझने में मदद मिलती है और उनकी पढ़ने की क्षमता बढ़ती है। इनमें से कुछ प्रिंट सामग्री बनाने में विद्यार्थियों और शिक्षकों के बीच होने वाला सहयोग रचनात्मकता को बढ़ावा देता है।

बच्चों का कोना

कक्षा में विद्यार्थियों की कृतियों जैसे चित्र को प्रदर्शित करने वाला बच्चों का कोना उन्हें एक-दूसरे से सीखने के लिए प्रेरित करता है।

रनिंग ब्लैकबोर्ड

कक्षा में रनिंग ब्लैकबोर्ड (यानी कक्षा की दीवार पर बच्चों के कद जितनी ऊँचाई तक बने ब्लैकबोर्ड) का इस्तेमाल करने से विद्यार्थियों को चित्रकारी और लेखन के ज़रिए अपने विचारों को स्वतंत्र रूप से व्यक्त करने का अवसर मिलता है। कभी-कभी तो विद्यार्थी जन्मदिन की शुभकामनाएँ, अपरिचित शब्द लिखकर और कक्षा में सुनी गई कहानी से सम्बन्धित चित्र बनाकर हमें भी हैरान कर देते हैं।

बैठक व्यवस्था

विद्यार्थियों द्वारा किए जाने वाले कार्य के आधार पर बैठने की व्यवस्था में बदलाव किया जाता है; हम बड़े समूह में गतिविधियाँ करने के लिए 'यू' आकार में बैठते हैं।

चित्र-5 : *फ़्लैशकार्ड के माध्यम से सीखते विद्यार्थी।*

कक्षा पुस्तकालय

प्रथम, बरखा और तूलिका प्रकाशनों की स्तर-वार पुस्तकों से व्यवस्थित, कक्षा पुस्तकालय में बिग-बुक्स शामिल हैं। शुरुआत में तो विद्यार्थी पढ़ने का 'दिखावा' करते रहते हैं, बाद में परिचित शब्दों को पहचानने और चित्रों के आधार पर अपनी कहानियाँ बनाने की कोशिश करते हैं। कक्षा-2 के विद्यार्थियों के लिए हम बरखा और तूलिका शृंखला की स्तर-1 की किताबें घर ले जाने देते हैं ताकि वे घर पर पढ़ने के लिए प्रोत्साहित हो सकें।

सह-शिक्षक

बहु-स्तरीय कक्षा में, हरेक बच्चे के सीखने को एक-सा बनाए रखना चुनौतीपूर्ण होता है। इसे सम्भव बनाने के लिए सह-शिक्षकों की भूमिका महत्त्वपूर्ण है। मुख्य शिक्षक सह-शिक्षक के साथ सहयोग करता है जो शुरू में हर उस बच्चे पर ध्यान देता है जिसे इसकी ज़रूरत होती है। सीखने में मदद के लिए स्पिनर, वर्णमाला और फ़्लैश कार्ड और वर्कशीट जैसे अलग-अलग तरह के टीएलएम का इस्तेमाल किया जाता है। और कुछ ही हफ़्तों में सकारात्मक परिणाम देखने को मिलते हैं, जिससे सभी विद्यार्थियों का एक ही कक्षा में समावेश हो जाता है।

माता-पिता की भागीदारी

किसी बच्चे के समग्र विकास के लिए माता-पिता, स्कूल और शिक्षकों के बीच सहयोग महत्त्वपूर्ण है। ओरिएंटेशन कार्यक्रम, पालक-शिक्षक बैठकें (पीटीएम), नियमित कॉल और व्हाट्सएप पर निर्देशात्मक वीडियो साझा करना कुछ ऐसे तरीक़े हैं जिनका उपयोग हम माता-पिता को शामिल रखने के लिए करते हैं। माता-पिता को अपने विद्यार्थियों की गतिविधियों के वीडियो रिकॉर्ड करने के लिए प्रोत्साहित करने से बच्चों की सीखने की प्रक्रिया में जुड़ाव और समझ भी बढ़ती है।

निष्कर्ष

हमारी भली-भाँति नियोजित गतिविधियाँ और शिक्षकों, अभिभावकों और समुदाय के सहयोगात्मक प्रयास एक बच्चे की शैक्षिक यात्रा को मज़बूती देते हैं। इससे यह भी सुनिश्चित होता है कि प्रत्येक बच्चे को उनके समग्र विकास के लिए ज़रूरी ध्यान और मदद मिले। हम लगातार अनुसन्धान और अन्वेषण के लिए प्रतिबद्ध हैं, साथ ही विद्यार्थियों की निरन्तर वृद्धि और विकास को बढ़ावा देने के लिए लगातार नए तरीक़ों और अध्यापन-कला को खोज रहे हैं।

Endnotes

i NCF-FS specifies five domains of development: physical development, socio-emotional and ethical development, cognitive development, aesthetic and cultural development.

बनिश्री महापात्रा अज़ीम प्रेमजी स्कूल धमतरी, छत्तीसगढ़ में शिक्षिका हैं। उन्हें शिक्षण के क्षेत्र में 12 साल का अनुभव है। वे दयानन्द एंग्लो-वैदिक स्कूलों में प्रारम्भिक शिक्षा विकास कार्यक्रम (ईईडीपी) में मास्टर ट्रेनर भी रही हैं। उनसे *banishree.mohapatra@azimpremjifoundation.org* पर सम्पर्क किया जा सकता है।

अनुवाद : अमेय कान्त **पुनरीक्षण :** उमा सुधीर **कॉपी एडिटर :** अनुज उपाध्याय

संगारेड्डी की आँगनवाड़ियों में पोर्टफ़ोलियो का उपयोग

दसन्ना मरेड्डी और सुजाता रावी

फ़ाउंडेशनल स्टेज पर बच्चे के आकलन की दो मुख्य विधियाँ हैं – बच्चे का अवलोकन और उसके सीखने के दौरान बनी रचनाओं/कृतियों (artefacts) का विश्लेषण। इन कृतियों को बच्चे अपने सीखने के अनुभव के हिस्से के रूप में तैयार करते हैं।

शुरुआती कक्षाओं (early childhood classroom) के सन्दर्भ में कृतियों या आर्टिफेक्ट का तात्पर्य सीखने की प्रक्रिया के दौरान तैयार की गई वस्तुओं/रचनाओं से है। बच्चों द्वारा बनाए गए आर्टिफेक्टों को देखकर हम समझ सकते हैं कि बच्चों ने कोई अवधारणा कितनी भली-भाँति सीखी है और बच्चों के समझने का स्तर उनके द्वारा बनाई गई वस्तुओं को कैसे प्रभावित करता है। आर्टिफेक्ट बच्चे की क्षमताओं व सामर्थ्यों की समृद्ध जानकारी प्रदान करते हैं।

एक पोर्टफ़ोलियो बच्चों के महत्त्वपूर्ण काम के नमूनों और रिकॉर्ड का संग्रह होता है जो कि सीखने के तय उद्देश्यों का आकलन करने में बच्चों के प्रयास व उपलब्धियों के प्रमाण होते हैं। शिक्षक को तय उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए बच्चे के पोर्टफ़ोलियो का विश्लेषण करके उनकी प्रगति का आकलन करना चाहिए। एक बच्चे के पोर्टफ़ोलियो को इस तरह आयोजित किया जाना चाहिए जिसमें प्रतिफलों को प्राप्त करने के स्पष्ट मापदण्ड हों। प्रत्येक बच्चे के पास अपने प्रासंगिक आर्टिफेक्ट्स को रखने के लिए एक विशेष फोल्डर होना चाहिए।

स्रोत : फ़ाउंडेशनल स्टेज के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा। खण्ड 6.2 प्रक्रिया तथा आकलन के उपकरण। पेज 173, एवं 177-78.

संगारेड्डी आँगनवाड़ी के सन्दर्भ में, शिक्षक बच्चों के पोर्टफ़ोलियो बनाते हैं जिनमें उन बच्चों की सम्पूर्ण जानकारी जैसे - उनका काम, प्रगति के मापदण्ड, अभिभावकों से प्राप्त जानकारी तथा शिक्षकों के अवलोकन से जुड़ी बातें शामिल होती हैं।

हर साल की शुरुआत में शिक्षक प्रत्येक बच्चे के लिए एक बैग/फोल्डर तैयार करते हैं। इन बैगों में बच्चों से जुड़ी जानकारी ऊपर लिखी जाती है ताकि आसानी से उनकी पहचान की जा सके। इनके अन्दर बच्चों की चित्रकलाएँ, क्राफ्ट की गई वस्तुएँ, शिक्षक का अवलोकन, संक्षिप्त व्याख्या व वर्कबुक सिलसिलेवार ढंग से रखी जाती हैं। हर तिमाही के अन्त में, प्रत्येक बच्चे के पोर्टफ़ोलियो के आधार पर शिक्षक उनका आकलन कार्ड भरकर बच्चों के पोर्टफ़ोलियो में रखते है। यह आकलन कार्ड महिला एवं बाल विकास विभाग (DWCD) द्वारा मुहैया कराया जाता है।

इस लेख में हम दो ऐसी केस स्टडीज़ प्रस्तुत कर रहे हैं जिसमें शिक्षकों द्वारा पोर्टफ़ोलियो की मदद से बच्चों के विकास को आँका जा रहा है तथा उन्हें नए अवसर दिए जा रहे हैं। और साथ ही, कैसे इन पोर्टफ़ोलियो की मदद से अभिभावकों को उनके बच्चों की प्रगति समझायी जा रही है।

केस स्टडी-1 : पोर्टफ़ोलियो बनाना व व्यवस्थित रखना

मल्लेश्वरी, आँगनवाड़ी शिक्षिका, नागसनपल्ली, सदाशिवपेट योजना, ज़िला संगारेड्डी, तेलंगाना

मल्लेश्वरी ने 2002 में संगारेड्डी ज़िले के सदाशिवपेट ब्लॉक के एक गाँव में आँगनवाड़ी शिक्षिका के रूप में काम करना शुरू किया था। उन्होंने दसवीं कक्षा तक पढ़ाई की है। फिलहाल उनकी आँगनवाड़ी में 3 से 6 वर्ष की आयु के कुल 13 बच्चे आते हैं।

हालाँकि, उन्होंने बच्चों के पोर्टफ़ोलियो व्यवस्थित करना 2015 से ही शुरू किया है। शुरुआत में, उन्होंने पोर्टफ़ोलियो का इस्तेमाल कक्षा में प्रदर्शनी के तौर पर किया। वे छोटे-छोटे झोलों पर बच्चों के नाम व कुछ अन्य ज़रूरी जानकारियाँ (जन्मतिथि, लिंग, अभिभावकों के नाम तथा सम्पर्क आदि) लिखकर कक्षा में रखती थीं। उन झोलों में क्या रखा जाए या बच्चों के काम की जानकारियाँ कैसे उनके विकास के दस्तावेज़ों के तौर पर इस्तेमाल की जाएँ, इसकी समझ उन्होंने क्षमतावर्धन कार्यक्रमों, साथियों व अपने निजी अनुभवों से धीरे-धीरे हासिल की। और धीरे-धीरे उन्होंने बच्चे के विकास के आकलन में पोर्टफ़ोलियो के फ़ायदे एवं उसकी महत्ता की समझ भी विकसित कर ली।

उन्होंने बच्चों की रचनाओं और वर्कबुकों को पोर्टफ़ोलियो में रखना शुरू कर दिया। जब उनकी सुपरवाइज़र ने उनकी आँगनवाड़ी का दौरा किया और उन्हें यह सलाह दी कि वे बच्चों का काम पूरे होते ही उस पर उस दिन की तारीख डाल दिया करें, तो उन्होंने ऐसा करना शुरू कर दिया। इस अभ्यास ने उन्हें पालक मीटिंग के दौरान बच्चों के माता-पिता को बच्चों के कामों की प्रगति समझाने में काफ़ी मदद की। लेकिन उनके लिए अगली चुनौती यह थी कि जब माता-पिता अपने बच्चों के किसी ख़ास काम की जानकारी माँगते थे तो वे उसका पूरा विवरण याद नहीं रख पाती थीं। इसलिए उन्होंने बच्चों के हर काम में तारीख डालने के साथ उसका संक्षिप्त विवरण भी लिखना शुरू कर दिया। अगली मीटिंगों में वे अभिभावकों को बच्चों के काम से जुड़ी जानकारियाँ भी दे पाती थीं। माता-पिता इस प्रक्रिया से बेहद ख़ुश थे क्योंकि वे समय के साथ अपने बच्चों का विकास देख पा रहे थे।

बच्चों के लिए तैयारी करने और जहाँ ज़रूरी है वहाँ और सीखने के अवसर देने में पोर्टफ़ोलियो ने मल्लेश्वरी की काफ़ी मदद की। इससे उन्हें यह भी एहसास हुआ कि पोर्टफ़ोलियो के होने से वे प्रत्येक बच्चे के आकलन कार्ड को और बेहतर व सटीक ढंग से भर पा रही थीं। इससे पहले तक उन्हें लगता था कि बच्चों के विकास को समझने के लिए एकमात्र तरीक़ा अवलोकन ही है।

पोर्टफ़ोलियो की मदद से कक्षा में होने वाली दैनिक गतिविधियों व प्रत्येक बच्चे की ज़रूरतों पर न केवल ध्यान देने का मौक़ा मिल रहा था बल्कि वे बच्चों का सहयोग भी कर पा रही थीं। एक और ख़ास बात यह कि बच्चों को अपना पोर्टफ़ोलियो देखने का मौक़ा मिलता था। बच्चे उत्साहित होने के साथ-साथ अपने काम के विभिन्न आयामों को बताने के लिए प्रोत्साहित भी होते थे। मल्लेश्वरी बच्चों को अपने अन्य साथियों के कामों को देखने व उन पर बातचीत करने के लिए भी प्रोत्साहित करती हैं, जिससे बच्चों में सामाजिक कौशल विकसित होते हैं और वे अन्य बच्चों के कामों की सराहना कर पाते हैं।

साल के अन्त में, जब बच्चे आँगनवाड़ी से निकलकर सरकारी प्राथमिक शालाओं में दाखिल होते हैं तो मल्लेश्वरी वहाँ के शिक्षकों के साथ बच्चों के पोर्टफ़ोलियो साझा करती हैं। जो बच्चे प्राइवेट स्कूलों में दाखिला लेते हैं, उनके पोर्टफ़ोलियो उनके माता-पिता को दे दिए जाते हैं ताकि उन्हें बच्चों के नए शिक्षकों के साथ साझा किया जा सके। इससे प्राथमिक स्कूल के शिक्षक इन बच्चों के अभी तक के विकास को समझ पाते हैं और पोर्टफ़ोलियो से प्राप्त जानकारी के आधार पर अगले अकादमिक सत्र की तैयारी कर पाते हैं।

चित्र-1 व 2 : *बच्चे के रंग भरने के कौशल में सुधार स्पष्ट है।*

केस स्टडी-2 : आर्टिफेक्टों का विश्लेषण

जे. इन्दिरा, आँगनवाड़ी शिक्षिका, लिंगापुर, नारायणखेड़ प्रोजेक्ट, ज़िला संगारेड्डी, तेलंगाना

साल 2018 से इन्दिरा सक्रिय रूप से पूर्व-प्राथमिक (आँगनवाड़ी) कार्यक्रम चला रहीं हैं और बच्चों के समग्र विकास के लिए उन्हें विकासात्मक रूप से जुड़े अवसर प्रदान कर रही हैं। साथ ही, पिछले तीन साल से, बच्चों के विकास की बेहतर समझ बनाने के लिए वे लिखित अवलोकन व पोर्टफ़ोलियो को भी सम्हालकर रख रही हैं।

आँगनवाड़ी शिक्षकों की एक क्षमतावर्धन कार्यशाला के दौरान इन्दिरा बच्चों के पोर्टफ़ोलियो लेकर आईं और अन्य शिक्षिकाओं को समझाया कि कैसे वह इन पोर्टफ़ोलियों का इस्तेमाल करती हैं। उस सत्र में उन्होंने एक बच्चे के (रेखाकृति के भीतर) रंग भरने का उदाहरण लिया और समझाया कि कैसे लगातार अभ्यास ने कुछ महीनों के भीतर उस बच्चे की उँगलियों के क़लम पकड़ने और उसे नियंत्रित करने के कौशल को बेहतर किया था। सितम्बर 2022, में एक गेंद में भरे रंग व अक्टूबर 2023 में एक फूल व पत्तियों में भरे रंग में साफ़ फ़र्क देखा जा सकता है। (देखें **चित्र-1 व 2**)

एक शिक्षक-पालक मीटिंग (आँगनवाड़ी के सन्दर्भ में ECCE दिवस) में इन्दिरा ने एक पालक को उनके बच्चे का पोर्टफ़ोलियो दिखाया। इस बच्चे के पालक ने अपने बच्चे को आँगनवाड़ी से निकालकर एक प्राइवेट प्री-स्कूल में भेज दिया था। परन्तु जब उन्होंने देखा कि यहाँ इन्दिरा ने उनके बच्चे के काम और विकास को किस तरह सम्हालकर रखा है तो वे इतने खुश और भावुक हो गए कि वे वापस अपने बच्चे को आँगनवाड़ी में भेजने लगे।

निष्कर्ष

बच्चों की प्रगति का रिकॉर्ड रखने में पोर्टफ़ोलियो की महत्ता को संगारेड्डी की कई आँगनवाड़ी शिक्षिका बहुत अच्छे से समझती हैं। ये शिक्षिकाएँ बच्चों की विकासात्मक प्रगति को समझने के लिए पोर्टफ़ोलियो को प्रभावी ढंग से बनाए रखती हैं और उनका इस्तेमाल करती हैं।

इस नए अभ्यास से अभिभावकों व समुदाय के लोगों में आँगनवाड़ी को लेकर जो उनकी सोच थी वह बदली है। आँगनवाड़ी सिर्फ़ खाना बाँटने की जगह से बदलकर सीखने की जगह बन गई है। इसी के फलस्वरूप, माता-पिता अब अपने बच्चों को और अधिक नियमितता से आँगनवाड़ी भेजते हैं तथा घर में उनके साथ खेलते, कहानियाँ सुनाते और अन्य गतिविधियाँ करते हुए समय बिताते हैं। समुदाय भी अलग-अलग तरह से आँगनवाड़ी को सहयोग करता है जैसे- खेलने-पढ़ाने के लिए लगने वाली वस्तुएँ देना, बिना पैसों के जगह मुहैया कराना, सफ़ाई में मदद, बच्चों के इस्तेमाल के लिए आँगनवाड़ी के आस-पास की जगह को समतल करना इत्यादि।

दसन्ना मरेड्डी तेलंगाना के संगारेड्डी ज़िले के नारायणखेड़ ब्लाक में अज़ीम प्रेमजी फ़ाउंडेशन के फील्ड कार्य का समन्वय करते हैं। वे अर्ली चाइल्डहुड एजुकेशन (ECE) से जुड़े विभिन्न हितधारकों व छोटे बच्चों के साथ सीखने के अनुभवों पर काम करना पसन्द करते हैं। इंजीनियरिंग में ग्रेजुएट दसन्ना पिछले 10 साल से शिक्षा के क्षेत्र में कार्यरत हैं, इसके पहले 2 साल वे 'इनफ़ोसिस' के साथ काम कर चुके हैं। उनसे *Dasanna.mareddy@azimpremjifoundation.org* पर सम्पर्क किया जा सकता है।

सुजाता रावी तेलंगाना के संगारेड्डी ज़िले में बतौर ब्लॉक समन्वयक काम कर रहीं हैं। वे आँगनवाड़ी कार्यकर्ताओं के क्षमतावर्धन और बच्चों के आकलन के लिए पाठ्यक्रम तैयार करने वाली टीम की सदस्य हैं। वे अन्य राज्यों, जहाँ फाउण्डेशन काम कर रहा है, में ECE विस्तार की टीम में भी शामिल हैं। उनसे *raavi.sujatha@azimpremjifoundation.org* पर सम्पर्क किया जा सकता है।

अनुवाद : शिवम **पुनरीक्षण :** उमा सुधीर **कॉपी एडिटर :** अफसाना पठान

भाषा शिक्षण | कुछ मज़ेदार प्रयास

ललिता यदुवंशी

पिछले कुछ वर्षों में मुझे हिन्दी भाषा सीखने-सिखाने के लिए कक्षा-1 और कक्षा-2 के साथ जुड़ने का मौक़ा मिला। बच्चों के व्यवहार के गठन में और उनकी क्षमताओं के विकास में भाषा विशेष भूमिका अदा करती है। चूँकि बच्चों और उनकी भाषा के बीच का सम्बन्ध उनके अनुभवों पर निर्भर करता है, इसलिए यह सम्बन्ध उन चीज़ों पर निर्भर करता है जिनके वे सम्पर्क में आते हैं। मैं अपनी कक्षा में बच्चों के अनुभवों को शामिल करने और उन्हें कक्षा के संचालन में जोड़ने का प्रयास करती हूँ।

भाषा शिक्षण की प्रक्रिया में कई तरह की गतिविधियों को शामिल किया जा सकता है। लेकिन किसी भी गतिविधि को अपनाने का सोचा-समझा कारण होना चाहिए। मैंने कई अभिनव तरीक़ों से सामग्रियों को उपयोग करने का प्रयास किया है और ये निरन्तर जारी हैं। गतिविधियाँ, जैसे मौखिक अभिव्यक्ति और समाचार (अज़ीम प्रेमजी स्कूल समाचार), भ्रमण, कहानी सुनाना, कविता पाठ, साझा पाठ, निर्देशित अध्ययन, अनुभवों के बारे में लिखना, भाषा-खेल, द्विभाषी बातचीत सहित और भी बहुत कुछ एक योजना के अनुसार चरणबद्ध तरीक़े से मेरी कक्षा में आज़माए गए हैं। ऐसा करने से, मुझे कई चुनौतियों पर विचार करने का अवसर मिला और इन्हें सहकर्मियों के साथ साझा करने पर, मुझे और गतिविधियों की योजना बनाने का मौक़ा मिला। भाषा शिक्षण के दौरान, मेरा प्राथमिक उद्देश्य बच्चों को यह सोचने के लिए प्रेरित करना रहता है कि वे जो कर रहे हैं उसका क्या महत्त्व है, ताकि संवाद के अवसरों को सार्थक बनाया जा सके।

मैं चार अभ्यासों को साझा करना चाहूँगी जो मेरी कक्षा शिक्षण के अंग रहे हैं।

1. डायरी हाउस

बच्चों के पास कई अनुभव होते हैं। वे अपने मन की हर उस बात को उसी उत्साह के साथ सभी से साझा करना चाहते हैं जितना वे स्वयं महसूस करते हैं। कक्षा-2 में 30 छात्र-छात्राएँ हैं, इसलिए हमने तय किया कि हर दिन पाँच विद्यार्थी पूरी कक्षा के साथ अपने अनुभव साझा करेंगे। इसके बाद, बाक़ी विद्यार्थी जोड़ियों में एक-दूसरे के साथ अपने अनुभव साझा करेंगे। फिर, इन अनुभवों को मिलकर लिखेंगे जिसे एक डायरी हाउस में रखा जाएगा।

हमने कक्षा में एक डायरी हाउस बनाया। रंगीन काग़ज़ के टुकड़ों को चिपकाकर इसे सजाया गया था। कक्षा में हर दिन

चित्र-1 : डायरी हाउस।

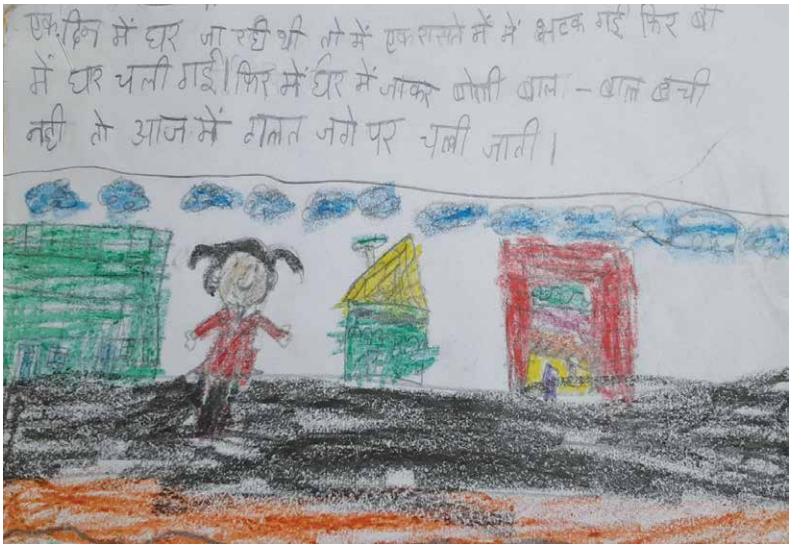

चित्र-2 : डायरी हाउस के लिए एक बच्चे का काम।

चित्र-3 : *डायरी हाउस के लिए एक अन्य बच्चे का काम।*

विद्यार्थी काग़ज़ के एक टुकड़े पर अपने अनुभव लिखते या घर में लिखे गए किसी अनुभव को लाकर उसमें रखते थे।

वे चित्र बनाते और रंगते थे और दूसरों को दिखाने के बाद उन्हें डायरी हाउस में रखते थे। कक्षा-2 में इस तरह अनुभवों को लिखना बाद में विद्यार्थियों को डायरी लिखने के लिए प्रेरित कर सकता है। अपने अनुभवों को मौखिक और लिखित रूप में व्यक्त करने के अवसरों को, सहज रूप से ख़ुद को प्रस्तुत करने की उनकी क्षमता के रूप में देखा जाता है।

2. कहानी लेखन और प्रश्न बनाना

इस गतिविधि का प्राथमिक उद्देश्य कहानियों को समझ के साथ पढ़ना और फिर प्रश्न बनाने में बच्चों की मदद करना था। इसमें उनकी कब, क्यों, कहाँ, कैसे, कौन, इस प्रकार के प्रश्नों का उत्तर देने और इसी तरह के और प्रश्न बनाने की क्षमता शामिल है। इसके साथ ही, उन्हें कक्षा में अपनी कहानियाँ बनाने के भी अवसर दिए गए – वे चित्रों की मदद से कहानियाँ गढ़ते हैं, एक-दूसरे की कहानियाँ सुनते हैं और उन्हें लिखते भी हैं।

कहानी गढ़ने के बाद, उन्होंने उसी कहानी से जुड़े सवाल भी बनाए। सवाल बनाने की इस गतिविधि के दौरान कुछ अवलोकन सामने आए, जैसे कि 30 में से 21 विद्यार्थी सही वाक्य संरचना के साथ सवाल बना पा रहे थे, जबकि शेष के साथ प्रश्नवाचक शब्द के सही स्थान (बच्चे वाक्य की शुरुआत में प्रश्नवाचक शब्द लिख रहे थे) पर चर्चा करनी पड़ी।

इसके बाद, मैं उनकी लिखी हुई सामग्री से सभी के लिए पढ़ने की सामग्री तैयार करती थी। ऐसा करने से, हम विद्यार्थियों के स्तर के अनुसार उपयुक्त पठन सामग्री बना सकते थे। सभी बच्चों को उनकी अपनी कहानियाँ (मेरे द्वारा थोड़े से बदलाव के साथ) पढ़ने (की समझ) के लिए कार्यपत्रों (वर्कशीट) के रूप में दी गईं।

3. किताबों का पेड़

कक्षा-2 के विद्यार्थियों में पढ़ने का आनन्द जगाने के लिए, 'कहानी का समय' रखा गया। उन्हें बरखा सीरीज़ की तीन और चार लाइन वाली किताबों से कहानियाँ सुनाई गईं। धीरे-

धीरे हम प्रथम, एकलव्य, कथा, तूलिका और अन्य प्रकाशनों की कहानियों की ओर बढ़े। इसके साथ ही, हमने इकतारा के बड़े चार्टों का उपयोग करके कविता पाठ पर भी काम किया और बच्चे इन्हें अपने ख़ाली समय में मिलकर उत्साहपूर्वक पढ़ते हैं।

बच्चों ने सुझाव दिया कि उन्हें पेड़ के नीचे पढ़ने में मज़ा आता है, इससे मुझे कक्षा में 'किताबों का पेड़' बनाने की प्रेरणा मिली। 'किताबों का पेड़' पेड़ की सूखी शाखाओं से बना होता है जो एक पेड़ की तरह ही लगता है। यह कक्षा के एक कोने में रखा होता है जिस पर किताबें लटकाई जाती हैं, यह बच्चों को नई किताबें खोजने और पढ़ने के लिए आकर्षित करता है। बच्चों ने किताबों के बेहतर रखरखाव के लिए एक 'किताबों का अस्पताल' भी बनाया, जहाँ फटे पन्नों को चिपकाया गया और उनकी मरम्मत की गई और किताबों को अच्छी तरह से रखा गया।

पुस्तकालय में भी बच्चों को उनके स्तर के अनुसार उपयुक्त साहित्य से अवगत कराया गया। उन्होंने जिन किताबों को पढ़ने में रुचि दिखाई, उन्हें कक्षा में लाया गया और सावधानी से 'किताबों के पेड़' पर टाँग दिया गया। बच्चे रोज़ाना 'किताबों के पेड़' से अपनी पसन्दीदा किताबें पढ़ते थे।

अब स्थिति यह है कि अगर कक्षा ख़त्म होने में सिर्फ़ पाँच मिनट बाक़ी हैं, तब भी वे उत्साहपूर्वक पूछते हैं : दीदी, क्या हम किताबें पढ़ सकते हैं? क्या हम पेड़ से किताबें ले सकते हैं?

4. शनिवार विशेष

नियमित रूप से गतिविधियों में नवीनता लाई जाती है, ताकि विद्यार्थियों को विभिन्न प्रकार के अनुभव और अपने भाषा कौशल को स्वयं उन्नत करने के अवसर मिल सकें। कक्षा-1 और कक्षा-2 के शिक्षक प्रत्येक महीने के दो शनिवार को एक साथ मिलकर ऐसी गतिविधियों का संचालन करते हैं, जिनमें भाषा के साथ-साथ अन्य विषय भी शामिल होते हैं।

किसान परिवार और कृषि : बातचीत

जब हम किसान के ऊपर एक कविता पर काम कर रहे थे, तब खेती से जुड़े परिवारों के सदस्यों को आमंत्रित किया गया था। विद्यार्थियों में से एक के दादाजी ने बच्चों के सवालों का

चित्र-4 : *कक्षा में पुस्तकों का पेड़।*

चित्र-5 : *किसान परिवारों के साथ बातचीत करते हुए विद्यार्थी।*

जवाब दिया। वे अपने साथ दिखाने के लिए अलग-अलग बीज लाए और बीज बोने के लिए खेत तैयार करने के बारे में बताया। बच्चों ने पढ़ी गई कविता के आधार पर बहुत सारे प्रश्न पूछे, जिसने चर्चा को सार्थक बना दिया। बच्चों की स्वाभाविक जिज्ञासा साफ़ झलक रही थी।

ख़ाना-ख़ज़ाना : परियोजना कार्य

कक्षा-1 में 'आलू की सड़क' और कक्षा-2 में 'मूली' की कहानी पढ़ने के दौरान हमने व्यंजन बनाने की बात की। आलू और मूली के पराठे बनाने में इस्तेमाल होने वाली सामग्री पर चर्चा की और उन्हें बनाने की विधि को करके देखने का प्रयास किया। बच्चों ने कुछ बहुत अच्छे प्रयास किए। फिर कक्षा में अन्य सामग्री और वस्तुओं को शामिल करके इसे लिखित कार्य के रूप में दिया गया और विद्यार्थियों द्वारा इसकी रेसिपी लिखी गई।

पढ़ने का अभियान

कक्षा-1 और कक्षा-2 के विद्यार्थियों को तीन समूहों में बाँटा गया था। पुस्तकालय की किताबों का उपयोग करके और समूह की क्षमता (स्तर) और उनकी रुचियों के आधार पर गतिविधियों को शामिल किया गया, जैसे साथ में पढ़ना, पढ़ने में मदद करना, मात्राओं के उपयोग में स्पष्टता लाना। कहानी पढ़ने के बाद बच्चों ने उपयुक्त हाव-भाव और अभिव्यक्ति के साथ उसे सुनाने का अभ्यास किया। चारों दिशाओं से आती हुई उनकी आवाज़ें सुनकर हम सभी शिक्षक अपने आपको मुस्कराने से रोक नहीं सके – एक तरफ़ से हाथियों की आवाज़ें आ रही थीं और दूसरी तरफ़ से बकरियों की। उस दिन, हम सब एक साथ इकट्ठे हुए और हमने मिलकर स्कूल के एक हिस्से में किताबों का प्रदर्शन किया। बच्चों ने बड़े डिस्प्ले चार्टों (हमारे पास इकतारा प्रकाशन के चार्ट हैं जिनमें छोटी कहानियों और तुकबन्दियों को चित्रों और बड़े फोंट का उपयोग करके दिखाया गया है) से बड़े उत्साह के साथ कहानियाँ प्रस्तुत कीं और पढ़ा।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्चा की रूपरेखा – फ़ाउंडेशनल स्टेज (NCF-FS) में इस बात को रेखांकित किया गया है कि बच्चों को संवाद (बातचीत), कहानियों और कविताओं के माध्यम से सीखना अच्छा लगता है। ये उनकी स्वाभाविक जिज्ञासा और गहराई से सोचने की कुशलता और मूल्यों के विकास में मदद करते हैं, ख़ासकर जब उन्हें सोचने, अनुमान लगाने, प्रश्न पूछने और परिकल्पना करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है।

ललिता यदुवंशी अज़ीम प्रेमजी स्कूल, टोंक, राजस्थान में भाषा की शिक्षिका हैं। वे वर्ष 2005 से अध्यापन कार्य कर रही हैं। उन्होंने शिक्षा और हिन्दी साहित्य में स्नातकोत्तर उपाधि हासिल की हैं। पढ़ना, संगीत सुनना और नई जगहों पर घूमना उनकी रुचियों में शामिल है। उन्हें बच्चों के साथ बातचीत करना पसन्द हैं। उनसे *lalita.yaduvanshi@azimpremjifoundation.org* पर सम्पर्क किया जा सकता है।

अनुवाद : विजय सेन **पुनरीक्षण :** उमा सुधीर **कॉपी एडिटर** : अनुज उपाध्याय

भावनात्मक विकास को बढ़ावा | एक सकारात्मक प्री-स्कूल वातावरण

समीक्षा एम.

"तारा दिन भर चुप रहती है। वह सिर्फ़ अपनी दोस्त रिया के साथ खेलते वक़्त बात करती है। इसके अलावा वह किसी से एक शब्द भी नहीं बोलती। यदि अध्यापक उससे बात करें, तो वह उन्हें इशारों में जवाब देती है। उसकी घरेलू भाषा हिन्दी है, इसलिए लगता है कि वह कन्नड़ा में कही गई बातों को नहीं समझ पाती।"

"गौरी इधर-उधर दौड़ती फिरती है और अपने काम में कोई रुचि नहीं दिखाती। उसे एक ही निर्देश बार-बार देना पड़ता है और उसे कक्षा की बातचीत को समझने में काफ़ी कठिनाई होती है।"

यह हमारे प्री-स्कूल कक्षा में पढ़ रही दो छात्राओं के बारे में उनके अध्यापकों के बयान हैं। इन दोनों ही मामलों में बच्चों के इस बर्ताव और उसके समाधान के लिए ज़रूरी रणनीतियों को लेकर भ्रम की स्थिति थी।

फिर एक दिन कुछ बदलाव आया तथा तारा और गौरी दोनों के बर्ताव में ऐसा कुछ देखने को मिला जो पहले कभी नहीं देखा गया था। इस बदलाव का क्या कारण था? और कक्षा में शिक्षकों ने इसमें क्या सहारा दिया था?

बदलाव के लिए 'SEEL' का इस्तेमाल

हम अक्सर बच्चों को समझने की बात करते हैं, लेकिन इस बात को शब्दों में बयाँ कर पाना काफ़ी मुश्किल है। एनसीएफ़-एफ़एस बच्चों में सामाजिक, भावनात्मक एवं नैतिक शिक्षा [Social, Emotional and Ethical Learning (SEEL)] को बढ़ावा देने पर ज़ोर देता है। 'सील' मुख्य रूप से बच्चों की आत्म-अवधारणा में सकारात्मकता, भावनात्मक जागरूकता एवं नियंत्रण और सामाजिक विकास को सही ढंग से बढ़ाने की एक नीति है। ये सारी चीज़ें आपस में जुड़ी हैं और इन्हें आगे चलकर अधिगम प्रतिफलों (एलओ) और संकेतकों में विभाजित किया गया है जिनके ज़रिए हम 'सील' को अपने शिक्षण में शामिल कर सकते हैं। इन्हीं की मदद से हम अपने स्कूल के अलग-अलग क्षेत्रों में 'सील' को नियोजित ढंग से लागू कर पाए। बच्चों के साथ हमारी बातचीत को और अर्थपूर्ण बनाने के लिए भी हमने इन्हें मार्गदर्शक के तौर पर उपयोग में लिया।

कक्षा में भावनात्मक विकास को बढ़ावा देने की बात सशक्त विद्यार्थी-शिक्षक सम्बन्ध से शुरू होती है। यह ज़रूरी होता है कि बच्चे स्वयं को स्वीकृत और महत्त्वपूर्ण महसूस करें। तारा और गौरी की पसन्द और नापसन्द समझने के लिए मैंने समय निकालकर यह अवलोकन किया कि वे अन्य के साथ कैसे मेलजोल करती हैं, किस तरह के खेल खेलती हैं और कौन-से काम करना पसन्द करती हैं। इसके माध्यम से मैंने उनसे जुड़ाव बनाया। मैंने तारा से उसके घर की भाषा में बात करना शुरू किया और देखा कि उसे गाड़ियाँ (वाहन) पसन्द हैं। तब मैं तारा को गाड़ियों से सम्बन्धित गतिविधियाँ देने लगी। फिर एक दिन तारा मेरे पास आई और उसने मुझे एक रेलगाड़ी का चित्र बनाने को कहा और तब से हमारी बातें बढ़ती चली

चित्र-1 : *तारा ने बनाया मिट्टी से।*

गईं। तारा के साथ बिताए समय में मैं उन लम्हों की तलाश करने लगी जहाँ मैं उसके द्वारा की जाने वाली पहलों के माध्यम से हो रहे उसके विकास पर अपना समर्थन जता सकूँ।

उदाहरणस्वरूप, जब वह मिट्टी की चीज़ें बनाकर उनके नाम रखकर मुझे बताती थी तो मैं हर बार ताली देकर उसके काम के प्रति अपनी उत्सुकता और समर्थन ज़ाहिर करती थी। मैं उससे उसके काम के बारे में सवाल भी करती रहती थी। धीरे-धीरे तारा जुड़ने लगी और ज़्यादा मेलजोल करने लगी।

गौरी ऊर्जा से भरपूर रहती थी और वह बार-बार गतिविधि बदलती रहती थी। उसे बग़ैर भटकाव के किसी काम में जोड़ पाना और यहाँ तक कि कक्षा के रीति-रिवाज़ों का पालन करवा पाना भी मुश्किल था। तो मैं गौरी के संग उसके कल्पनाशील क़िरदारों वाले खेल में जुड़ने लगी और दिन-ब-दिन इस खेल का समय बढ़ाती गई। इससे हमारी बातें ज़्यादा होने लगीं और मैं उन हाव-भावों को समझ पाई जिन पर गौरी सबसे बेहतर प्रतिक्रिया देती थी। इसके बाद से गौरी में बदलाव ज़ाहिर था। वह मेरे पास रहने में सहज महसूस करने लगी और बातचीत करने के लिए मेरी तलाश करने लगी। जल्द ही वह अन्य बच्चों को दिए जाने वाले कार्यों को करने में रुचि लेने लगी।

व्यक्तिगत स्तर पर, यह विद्यार्थी-शिक्षक सम्बन्ध ही किसी बच्चे के शैक्षणिक अनुभव की बुनियाद बनता है। इसी के साथ बच्चों को बेहतर तरीक़े से 'सील' की शिक्षा प्रदान करने के लिए हम और भी रणनीतियाँ अपनाते हैं। यहाँ ऐसी कुछ रणनीतियाँ हैं जिन्हें मैं इस्तेमाल करती हूँ।

कुछ रणनीतियाँ

भावनाएँ व्यक्त करना

कक्षा में हम बच्चों को *मैं, मेरा परिवार और मेरे पड़ोसी* (यह विद्यार्थी को समाज का एक सदस्य होने की पहचान कराता है) और *मेरी पसन्द और नापसन्द* जैसे विषयों पर कार्य देते हैं। बच्चों के साथ ऐसी गतिविधियाँ करते हैं जिनमें वे स्कूल के बाहर के अपने अनुभव साझा कर सकते हैं। इससे बच्चों को एक-दूसरे को ज़्यादा जानने में मदद मिलती है। बच्चों में भावनात्मक जागरूकता लाने के लिए हम ऐसी गतिविधियाँ करते हैं जो उन्हें अपनी भावनाओं को और दूसरे बच्चों द्वारा प्रकट की गई भावनाओं को पहचानने में मदद करती हैं। हम कला, शारीरिक शिक्षा और भाषा सम्बन्धी गतिविधियों से ऐसी कहानियों पर नज़र डालते हैं जिनका केन्द्र बिन्दु भावनाएँ रहती हैं। फिर कक्षा में इन कहानियों पर बच्चों से बातें होती हैं और एक नाटक के तौर पर हम कहानियों के अलग-अलग पहलुओं को चेहरे के भावों और शारीरिक क्रियाओं से प्रदर्शित करते हैं। इनके माध्यम से यह व्यक्त किया जाता है कि विभिन्न भावनाएँ उभरने पर कैसा महसूस होता है।

कक्षा में 'इमोशन कार्ड्स' मौजूद रहते हैं और दिन के आख़िर में हम इन कार्ड्स के ज़रिए एक-दूसरे को जताते हैं कि हम कैसा महसूस कर रहे हैं। इन कार्ड्स के ज़रिए हम बच्चों को दिन के उन लम्हों के बारे में बात करने के लिए प्रेरित करते हैं जब उन्हें ख़ुशी महसूस हुई, किस चीज़ से उन्हें ख़ुशी महसूस हुई, उन्हें कब ग़ुस्सा आया आदि। ये कार्ड्स तब भी मददगार होते हैं जब बच्चे बोलने में हिचक रहे हों। दिन के आख़िर में सब बच्चे एक घेरे में बैठते हैं और बताते हैं कि कैसे आज उन्होंने किसी की मदद की या दूसरों से मदद ली। इस तरह की गतिविधियाँ कक्षा की संस्कृति को आकार देती हैं और बच्चों के सकारात्मक व्यवहार को सुदृढ़ करती हैं। दृश्य कला, नृत्य

***चित्र-2** और 3 बच्चों के बनाए चित्र।*

और नाटक के माध्यम से बच्चों को अपनी बातें रचनात्मक ढंग से व्यक्त करने को प्रेरित किया जाता है और उनकी रचनाएँ सभी के सामने प्रदर्शित की जाती हैं।

हर दिन की शुरुआत एक मूक खेल से की जाती है जहाँ हम ज़ेन संगीत के साथ बच्चों को साँस का अभ्यास कराते हैं। बच्चों का ध्यान उनके श्वसन पर जाता है, कैसे साँस अन्दर लेते हुए और छोड़ते हुए उनका शरीर फैलता-सिकुड़ता है। बच्चों को साधारण योगाभ्यास भी करवाए जाते हैं जिनसे उनके शरीर की अकड़न कम होती है। मैंने यह भी देखा है कि जब शिक्षक बच्चों के साथ यह व्यायाम करते हैं तो कक्षा का वातावरण हल्का-फुल्का हो जाता है और सभी को खुलने में आसानी महसूस होती है। इससे विद्यार्थियों का अपने शिक्षक के साथ रिश्ता और मज़बूत होता है। कभी-कभी विषयवस्तु से बोझिल सत्रों के बीच-बीच में भी थोड़ा विश्राम लेने और एकाग्रता बढ़ाने के लिए हम योगाभ्यास कराते हैं।

दिनचर्या

एक जानी-पहचानी दिनचर्या प्री-स्कूल बच्चों को सुरक्षित महसूस कराती है। इसीलिए हम एक तयशुदा दिनचर्या का पालन करते हैं और कोई भी बदलाव पहले ही बच्चों को बता दिया जाता है। बच्चों के घरों में बोली जाने वाली भाषाओं को प्रोत्साहित करके और घर में मिलने वाले विविध अनुभवों को महत्त्व देकर और उनकी चर्चा करके विविधता को स्वीकार किया जाता है। हमारी कक्षा में तीनों कक्षाओं के विद्यार्थी– प्री-केजी, एलकेजी और यूकेजी साथ में पढ़ते हैं। इस मौक़े का इस्तेमाल करते हुए हम बच्चों की ऐसी जोड़ियाँ बनाते हैं जिनमें एक अपनी बातें और भावनाएँ प्रकट करने में थोड़ा सक्षम रहता है और दूसरा अभी सीख रहा होता है। इससे बच्चे आपस में एक-दूसरे से सीखने लगते हैं और हमने कई बार देखा है कि बच्चे अपने साथियों को बेहतर संवाद करने में मदद करते हैं। माता-पिता से बच्चों के बारे में बात करना बच्चों को भावनात्मक सहारा देने के लिए महत्त्वपूर्ण होता है।

शान्ति नुक्कड़/ 'पीस कार्नर'

कक्षा के एक कोने को हमने 'पीस कॉर्नर' का नाम दिया है। इस पीस कॉर्नर को आराम करने और किताबों के साथ वक़्त बिताने के लिए अलग रखा जाता है ताकि जिन बच्चों को कुछ देर आराम करना हो, कुछ वक़्त अकेले बिताना हो या फिर शान्ति से किताबें पढ़नी हों तो वे इस पीस कॉर्नर में कर सकें। दिन-भर में बच्चे जब भी उदास या थका हुआ महसूस करते हैं या फिर वह एकान्त में किताब पढ़ना या चित्रकारी करना चाहते हैं तो वे इस पीस कार्नर में जाने की गुज़ारिश करते हैं।

हदें बाँधना

कक्षा के नियमों को समझना और उनका पालन करना महत्त्वपूर्ण है। साल की शुरुआत में बच्चों के साथ बातचीत में नियम निर्धारित किए जाते हैं, पोस्टर्स बनाए जाते हैं और नाटकों के द्वारा यह प्रदर्शित किया जाता है कि उन नियमों का पालन कैसे किया जा सकता है। अगर इन नियमों का उल्लंघन होता है तो उस पर चर्चा की जाती है और इसे बच्चों को सिखाने के एक मौक़े की तरह देखा जाता है जहाँ हम प्रदर्शित करते हैं कि समस्याओं को सार्थक ढंग से कैसे हल किया जाए। ज़रूरी होने पर सख़्ती की जाती है, लेकिन मेरा मानना है कि एक समान नियम काम नहीं करते। दरअसल, शिक्षक और विद्यार्थियों के बीच सम्बन्ध तथा सहपाठियों के बीच अन्तर्क्रिया पर टिकी बुनियाद ही ग़ैर-मददगार व्यवहार को रोकने तथा सीखने का एक सकारात्मक माहौल बनाने में सबसे निर्णायक है।

अन्त में

बच्चों की भावनात्मक ज़रूरतें पूरी किए बिना उनकी शिक्षा को आगे बढ़ाना उन्हें असफलता की ओर ले जाने जैसा है। NCF-FS SEEL के परिणामों ने शिक्षकों को मौक़ा दिया है कि वे सचेत रूप से ऐसे तरीक़े अपना सकें जो बच्चों की सामाजिक और भावनात्मक जागरूकता को विकसित करने में मदद करे जिससे सीखने का एक समृद्ध माहौल बन सके।

*बच्चों की पहचान की सुरक्षा के लिए उनके नाम बदल दिए गए हैं।

समीक्षा एम. अज़ीम प्रेमजी स्कूल, बेंगलूरु की प्री-प्राइमरी टीचर हैं। उन्होंने अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय से शिक्षा में स्नातकोत्तर उपाधि प्राप्त की है। वे 5 साल से शिक्षा के क्षेत्र में काम कर रही हैं। समीक्षा को पेंटिंग, नृत्य और पढ़ने का शौक़ है। उन्हें दुनिया को लेकर बच्चों के दृष्टिकोण के बारे में जानना और समझना दिलचस्प लगता है।

अनुवाद : सूर्यवर्धन **पुनरीक्षण :** सुशील जोशी **कॉपी एडिटर :** अनुज उपाध्याय

सामाजिक-भावनात्मक और नैतिक शिक्षा के लिए संगीत

सन्तोष राज के.

संगीत से जुड़ी क्षमताओं को बढ़ाने के लिए शारीरिक हलचलों और संकेतों का इस्तेमाल हर स्तर पर फ़ायदेमन्द होता है लेकिन ये सबसे ज़्यादा असरदार बुनियादी स्तर के विद्यार्थियों के साथ होता है। छोटी उम्र के विद्यार्थियों में गानों या कविताओं को गाने, नाचने और संगीत पर थिरकने के प्रति बहुत तगड़ा रुझान होता है। संगीत से जुड़ी वे गतिविधियाँ जिनमें शारीरिक हरकतें शामिल हों, शिक्षकों को कक्षा में भिन्न-भिन्न प्रकार की चीज़ें लाने की सम्भावना देती हैं, जैसे :

1. ताल की गति में बदलाव, जिनके लिए बच्चों को लगातार ध्यान देने की आवश्यकता होती है
2. लगातार, छोटे एवं बड़े समूहों में विद्यार्थियों के साथ मिलकर काम करना
3. जब बच्चे दी गई गतिविधि का विश्लेषण करते हैं और नियमों व निर्देशों के आधार पर करने या न करने वाली बातों को तय करते हैं और इस तरह वास्तविक समय में समस्या समाधान करना सीखते हैं।

चूँकि फ़ाउंडेशनल स्टेज के बच्चों के साथ जुड़े सीखने के प्रतिफल (एलओ) उनमें हो रहे सामाजिक-भावनात्मक और नैतिक शिक्षा (एसईईएल) के विकास को सम्बोधित करते हैं, इसलिए सीखने के प्रतिफलों को विद्यार्थियों के शुरुआती दौर के संगीत के सफ़र के एक हिस्से के रूप में समझना ज़रूरी है। यह ऐसी गतिविधियों की मदद से किया जा सकता है जो संकेतों को समझने और अपने सहपाठियों के साथ भागीदारी करते हुए कई सारे व्यावहारिक पहलुओं और सामाजिक ज़रूरतों को सीखने में विद्यार्थियों की मदद करती हों। जब ये गतिविधियाँ लगातार कक्षा की योजना का हिस्सा बनती हैं तो विद्यार्थी इन मूल्यों को ज़्यादा तेज़ी से सीख सकते हैं।

ये गतिविधियाँ विद्यार्थियों में सामाजिक-भावनात्मक और नैतिक शिक्षा के कई पहलुओं के विकास में सहायता करती हैं, जैसे सामाजिक जागरूकता और संवाद; रिश्ते; संज्ञानात्मक, समस्या हल करने और निर्णय लेने के कौशल; और आत्म प्रबन्धन। यहाँ कुछ गतिविधियाँ सुझाई गई हैं।

गतिविधि-1 : गेंद को पहले ताल पर आगे बढ़ाएँ

टीएलएम : 3-4 फुटबॉल/ बड़ी गेंदें

निर्देश :

1. विद्यार्थियों की संख्या के मुताबिक़ उन्हें एक बड़े या कई छोटे घेरों में बैठने या खड़े होने को कहें।
2. यदि कई सारे समूह बने हैं तो, हर समूह से एक विद्यार्थी को स्कोर रखने का काम दिया जाए या फिर शिक्षक/ सुगमकर्ता

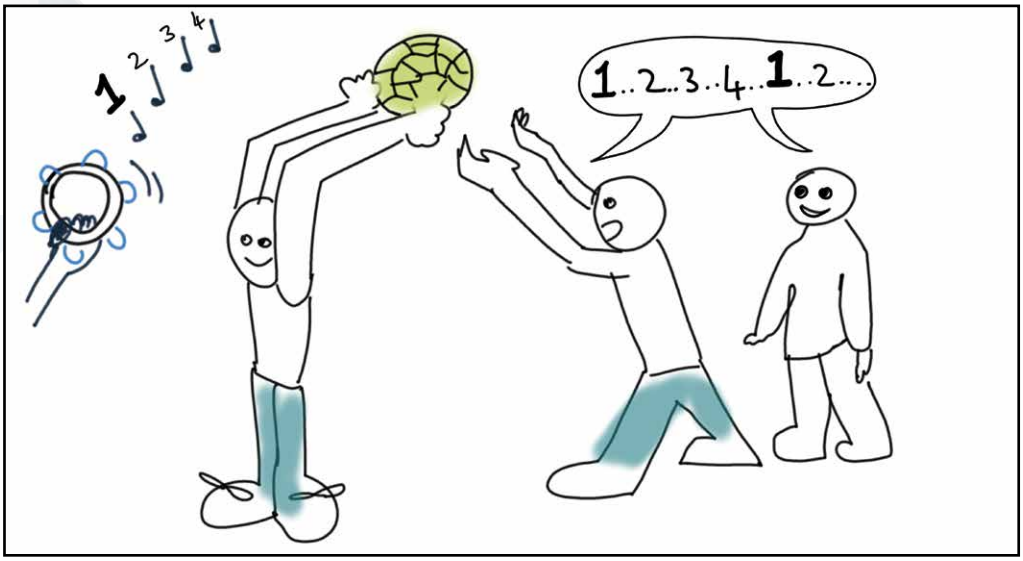

चित्र-1 : *पहली ताल पर गेंद को साथी को पास करने की गतिविधि का लेखक द्वारा बनाया गया चित्र।*

ख़ुद भी स्कोर रख सकते हैं। अलग-अलग समूहों के स्कोर ब्लैकबोर्ड पर लिखे जा सकते हैं।

3. खेल शुरू करने के लिए किसी भी ताल वाले वाद्य, जैसे ड्रम या ढफली, पर सरल तरीक़े से चार-ताल बजाएँ। हर समूह के विद्यार्थियों से कहें कि वे बजते हुए ताल के साथ 'एक, दो, तीन, चार' दोहराएँ और जब वे दोबारा से 'एक' ताल तक आएँ तो गेंद दूसरे विद्यार्थी को दे दें। यदि कोई समूह गेंद गिरा देता है या पहली ताल पर गेंद अपने साथी को देने से चूक जाता है तब स्कोर की गिनती की जा सकती है।
4. खेल का एक राउंड निर्धारित समय तक या फिर तब तक खेला जा सकता है जब तक कोई समूह 10 बार गेंद पकड़ने से चूक न जाए या उसे गिरा न दे।
5. यदि यह गतिविधि विद्यार्थियों के बड़े समूह के साथ की जाती है, तो तेज़ ताल पर 6 से 7 राउंड किए जा सकते हैं, ताकि विद्यार्थियों को खेलने और ज़रूरी कौशल सीखने के ज़्यादा मौक़े मिल सकें।

प्रतिफल :

- गेंद मिलने के लिए अपनी बारी आने का इन्तज़ार करने से विद्यार्थियों में धैर्य विकसित होता है।
- विद्यार्थी पूरी गतिविधि के दौरान सुगमकर्ता की आवाज़/ताल या किसी भी तरह के संकेत को ग़ौर से सुनते हैं जो उनकी ध्यान केन्द्रित करने की क्षमता को बढ़ाता है।
- विद्यार्थी निरन्तर ताल को एक सरल पैटर्न से गाते या गिनते हैं, जैसे 'एक, दो, तीन, चार...' और अगले को गेंद देने के लिए सही ताल के प्रति सतर्क रहते हैं। इससे विद्यार्थियों में ताल की समझ विकसित होती है।
- विद्यार्थी पूर्वानुमान की एक समझ विकसित करते हैं, जैसे ताल की आवाज़ या अपने सहपाठियों की हलचल पर प्रतिक्रिया देना।
- धीरे-धीरे ताल की गति की पेचीदगी को बढ़ाने से विद्यार्थी तुरन्त फ़ैसला लेने की क्षमता का इस्तेमाल करते हुए ध्यान लगाने, अन्दाज़ा लगाने, किसी चीज़ का पूर्वानुमान लगाने और उस पर प्रतिक्रिया देने के क़ाबिल बनते हैं।
- जो विद्यार्थी सभी का स्कोर रख रहे होते हैं, वे लगातार अवलोकन के आधार पर तुरन्त निष्पक्ष फ़ैसले लेना सीखते हैं।
- जैसे-जैसे विद्यार्थी इस खेल का मज़ा लेने लगते हैं, वे अपने सहपाठियों की ग़लतियों को नज़रअन्दाज़ करना भी सीखते हैं और साथ मिलकर खेलने के लिए एक-दूसरे को प्रोत्साहित और सहायता भी करते हैं।

गतिविधि-2 : कहानी सुनाना और संगीत की दृश्यात्मक कल्पना करना

टीएलएम : एक छोटी कहानी जो शिक्षिका याद करके सुना सकें और एक वाद्य यंत्र।

निर्देश :

1. विद्यार्थियों को कहानी का सार देते हुए शुरुआत करें। फिर उन्हें कहानी का पहला हिस्सा नाटक के रूप में पेश करने के लिए अपनी जगह लेने को कहें। जैसे कहानी की शुरुआत इस तरह हो सकती है कि "बच्चे उठते हैं" और विद्यार्थी सोने और फिर उठने का नाटक करते हैं।
2. पूरी कहानी को अलग-अलग आवाज़ के साथ कहें और उसके साथ ही अपने वाद्य यंत्र से उसी समय तैयार किया हुआ कुछ संगीत बजाएँ।
3. विद्यार्थियों को इस बात के संकेत दे दें कि संगीत बजने पर उन्हें कब हिलना है। वे बज रहे संगीत की ताल और गति को ध्यान में रखते हुए अपने मन के हिसाब से भी शारीरिक गतिविधि कर सकते हैं।
4. संगीत कहानी की रफ़्तार को और रोचक और सुन्दर बना सकता है। जैसे कहानी के धीमे हिस्सों, जैसे चलना, बातें करना, इत्यादि के लिए धीमा संगीत। कुछ दिलचस्प हिस्सों, जैसे दौड़ने या कूदने के लिए तेज़ रफ़्तार वाला संगीत; और उदास/ख़ुशमिजाज़ संगीत उन हिस्सों के लिए जो वैसे ही भाव दर्शाते हों। इससे विद्यार्थियों को ये संकेत मिल सकते हैं कि वे क्या शारीरिक गतिविधियाँ कर सकते हैं और इस तरह उन्हें अपनी गतिविधियों को लेकर अधिक रचनात्मक होने की प्रेरणा मिलती है।

प्रतिफल :

1. विद्यार्थी पूरी कहानी को ग़ौर से सुनते हैं और बिना चिल्लाए या दूसरों को परेशान किए, सोच-समझकर कहानी पर प्रतिक्रिया देते हैं।
2. वे दूसरों का सम्मान करना और दूसरों को मौक़ा देना भी सीखते हैं।
3. यदि कहानियों को संगीत के साथ जोड़कर सुना जाए तो कई बार बच्चों के लिए कहानी के मुख्य अर्थ को समझना और भी आसान हो जाता है।

C-4.1 : परिवार और समुदाय से सम्बन्धित व्यक्ति के रूप में 'स्व' को पहचानने लगते हैं।

C-4.3 : अन्य बच्चों और वयस्कों के साथ आराम से बातचीत करते हैं।

C-4.4 : दूसरे बच्चों के साथ सहयोगात्मक व्यवहार प्रदर्शित करते हैं।

C-4.6 : दूसरों (जानवरों, पौधों सहित) के प्रति ज़रूरत के वक़्त दयालुता और मदद का भाव प्रदर्शित करते हैं।

CG-6 : बच्चे अपने आस-पास के प्राकृतिक वातावरण के प्रति सकारात्मक सोच विकसित करते हैं।

C-6.1 : सभी सजीवों के प्रति परवाह और उनसे जुड़ने में ख़ुशी दिखाते हैं।

स्रोत : फ़ाउंडेशनल स्टेज के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा। 2.4.2 कार्यक्षेत्र : सामाजिक-भावनात्मक और नैतिक विकास, पेज-60

संगीत की गतिविधियाँ समावेशन को बढ़ावा देती हैं

चूँकि हर विषय कुछ बड़े संज्ञानात्मक कौशलों की माँग करता है और छोटे कामों में उनके कुछ हिस्सों का प्रदर्शन भी चाहता है, इसलिए कभी-कभी कक्षा में हो रहे आपसी संवाद किसी भी तरह की सीखने की अक्षमता रखने वाले विद्यार्थियों को परेशान कर सकते हैं। लेकिन संगीत की कक्षा में सही गतिविधियाँ होने से, विद्यार्थी अपनी क्षमताओं को अभिव्यक्त कर सकते हैं और उन्हें तलाश सकते हैं। उदाहरण के तौर पर, "सुनो और ताली बजाओ" जैसी गतिविधि में, बच्चे, शिक्षकों द्वारा बजाए गए लयबद्ध पैटर्न को सुनते हैं और तालियों से उसको दोहराते हैं। किसी भी मौखिक प्रतिक्रिया की ज़रूरत के बिना, इस तरह की गतिविधि विद्यार्थियों में संगीत के कौशलों को बढ़ाती है, उन्हें ध्यान लगाने और खुलकर भाग लेने तथा अपने सहपाठियों के साथ शामिल महसूस करने के लिए प्रेरित करती है।

निष्कर्ष

मैं दूसरी क्लास के विद्यार्थियों को उनकी पाठ्यपुस्तकों, या *चंपक* जैसी पत्रिकाओं से छोटी कविताएँ देता हूँ, उन्हें एक धुन पर सेट करता हूँ और उन्हें इन्हें बिना रुके, एक के बाद एक, गाने के लिए कहता हूँ। हम तीन गानों से शुरू करते हैं और उसमें और गाने जोड़ते जाते हैं। अन्त तक आते-आते सभी विद्यार्थी बिना कोई टेक्स्ट देखे आठ गाने गा पाते हैं।

मुद्रित टीएलएम के साथ चार-पाँच पंक्तियों वाली छोटी कविताओं के इस्तेमाल के दो सकारात्मक नतीजे होते हैं :

पहला कि, यह सीधे एनसीएफ़ की दक्षताओं/ सीखने के प्रतिफलों से मेल खाता है :

- सरल गीतों, तुकबन्दियों और कविताओं को सुनते-सराहते हैं।
- स्मृति से दो/तीन छन्दों वाले गीत गाते/कविता सुनाते हैं।

दूसरा, मुद्रित टीएलएम या पाठ्यपुस्तक के ज़रिए उन्हीं गानों पर लेखन की गतिविधियाँ कराने से मुझे उन बच्चों को रचनात्मक रूप से जोड़ने में मदद मिलती है जिनका ध्यान अक्सर इधर-उधर रहता है या जो बहुत चंचल होते हैं। इससे उनका ध्यान उनकी अपनी एक गतिविधि के साथ-साथ सामूहिक गायन के सत्र पर भी रह पाता है। इससे फ़ाउंडेशनल स्टेज पर कक्षा के प्रबन्धन की अक्सर आने वाली चुनौतियों से निपटा जा सकता है, ख़ासतौर से कुछ विद्यार्थियों के सन्दर्भ में। कक्षा में दूसरे विद्यार्थियों से जुड़ने की यह इच्छा धीरे-धीरे सामाजिक-भावनात्मक और नैतिक शिक्षा के इन पहलुओं को उभारती है :

C-4.2 : अलग-अलग भावनाओं को पहचानते हैं और उनका उपयुक्त तरीक़े से नियमन करने के लिए सुविचारित प्रयास करते हैं।

C-4.4 : दूसरे बच्चों के साथ सहयोगात्मक व्यवहार प्रदर्शित करते हैं।

C-4.7 : दूसरे बच्चों के विभिन्न विचारों, प्राथमिकताओं और भावनात्मक ज़रूरतों को समझते हैं और उनके प्रति सकारात्मक रूप से प्रतिक्रिया देते हैं।

स्रोत : फ़ाउंडेशनल स्टेज के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा। 2.4.2 कार्यक्षेत्र : सामाजिक-भावनात्मक और नैतिक विकास, पेज-60

संगीत की कक्षा में बुनियादी चरण के कई कार्यक्षेत्रों को समझने के मौक़े मिलते हैं। सिर्फ़ गाने की बजाय दृश्यात्मक और प्रदर्शन कलाओं, दोनों के बड़े कार्यक्षेत्रों, जैसे नृत्य और रंगमंच से विचारों को लेने से विद्यार्थी आपसी सहयोग विकसित करने वाली मज़ेदार और समावेशी गतिविधियों के माध्यम से एक पुख़्ता और पूर्ण स्कूली अनुभव विकसित कर पाएँगे। ऐसे संवाद सहज भागीदारी को सामने लाते हैं, विद्यार्थियों को सामाजिक मेलजोल के ज़रिए अपनी भावनाओं को परिष्कृत करने और अपने साथियों के बीच 'स्वयं' को ठीक से पहचान पाने का मौक़ा प्रस्तुत करते हैं और यह सब उनके विकास और चेतना को मदद करता है ताकि वे सही समय पर जो सही हो उसे कर सकें।

और अधिक जानकारी के लिए आप अज़ीम प्रेमजी स्कूल, बाड़मेर, राजस्थान में संगीत शिक्षा पर बने इस छोटे-से वीडियो को देख सकते हैं : https://youtu.be/evuF-qhUfhM

देखने के लिए स्कैन करें।

सामाजिक-भावनात्मक और नैतिक शिक्षा की दक्षताओं पर ध्यान केन्द्रित करने वाले कुछ गीत जिनका कक्षा में उपयोग किया जा सकता है :

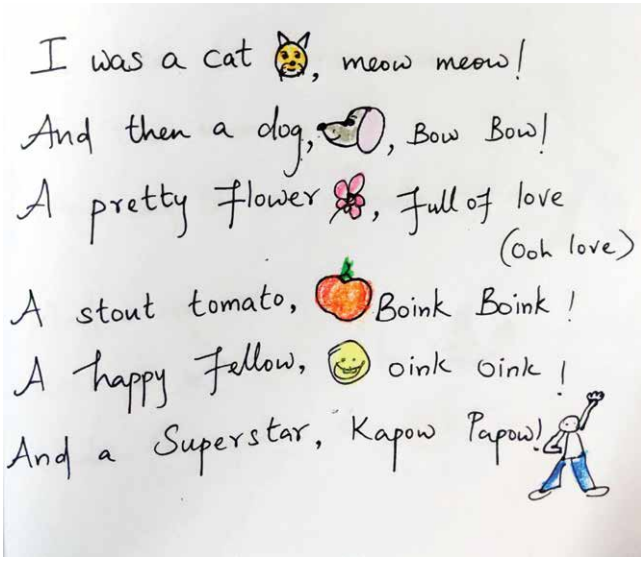

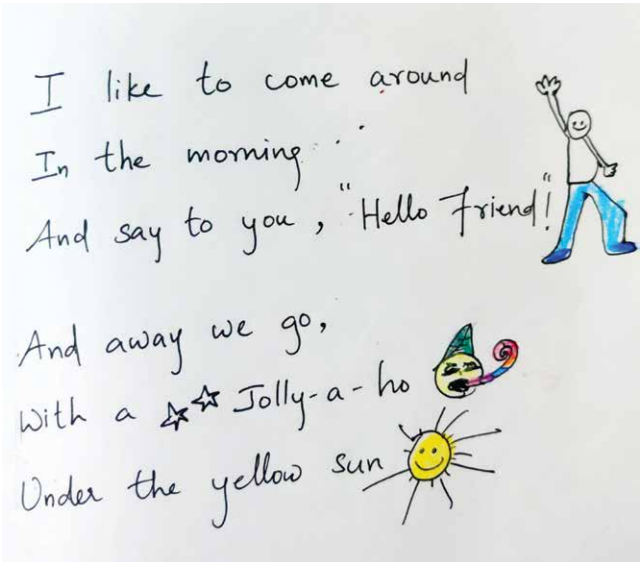

सन्तोष राज के. अज़ीम प्रेमजी स्कूल, बाड़मेर में संगीत और अँग्रेज़ी के शिक्षक हैं। उन्होंने अन्ना विश्वविद्यालय से मैकेनिकल इंजीनियरिंग में स्नातक स्तर की और के. एम. म्यूज़िक कंज़रवेटरी, चेन्नई से ऑडियो इंजीनियरिंग की पढ़ाई की है। उन्होंने कई तमिल और तेलुगू फिल्मों में असिस्टेंट म्यूज़िक प्रोग्रामर/ गिटारिस्ट के रूप में तथा नागपुर, वेल्लूर और चेन्नई में *मेक अ डिफरेंस* के साथ एजुकेशनल सपोर्ट असिस्टेंट के रूप में काम किया है। उनकी रुचि के क्षेत्र हैं संगीत, भाषा और डॉक्यूमेंटरी फिल्ममेकिंग। उनसे *santhosh.kumaravel@azimpremjifoundation.org* पर सम्पर्क किया जा सकता है।

अनुवाद : सोनम कुमारी **पुनरीक्षण :** भरत त्रिपाठी **कॉपी एडिटर :** अनुज उपाध्याय

मिश्रित क्षमता वाली कक्षा में समय का नियोजन

सतवीर सिंह चौहान

मैं कक्षा-1 और कक्षा-2 में भाषा और गणित पढ़ाता हूँ। जिसमें सात घण्टे विद्यार्थियों के साथ कक्षा में काम करने और अलग से एक घण्टा उन्हें अतिरिक्त शिक्षण के लिए दिया जाता है।

पिछले साल मैंने स्कूल में एक ओपन लाइब्रेरी शुरू की। मैं स्कूल जल्दी पहुँच जाता हूँ और यदि कोई विद्यार्थी जल्दी आ जाते हैं तो मैं उन्हें कुछ पढ़कर सुनाता हूँ, नई किताबों से उनका परिचय करवाता हूँ और उन्हें कहानियाँ सुनाता हूँ। इस दौरान मैं ख़ुद भी पढ़ता हूँ या कभी-कभार इस समय को मैं क्लास की लाइब्रेरी व्यवस्थित करने, नए चार्ट बनाने, TLM बनाने/जमाने या ऐसे ही अन्य काम को करने में लगाता हूँ।

सप्ताह के 3 दिन स्कूल की शुरुआत आधे घण्टे की प्रार्थना सभा से होती है, बाक़ी के 3 दिन विद्यार्थियों के व्यवहारगत एवं कक्षाओं के मुद्दों पर और स्कूल के नियमों पर चर्चा होती है। इसका अगला आधा घण्टा हर रोज़ किताबें पढ़ने के लिए होता है। लाइब्रेरी में बच्चों की पढ़ने की क्षमता अनुरूप ही किताबें हैं ताकि वे अपने पसन्द की किताब चुनें और पढ़ें। मैं उन बच्चों के बाजू में ही बैठता हूँ जिन्हें पढ़ना कठिन लगता है। इसके बाद सुबह 10 से 10:15 का समय नाश्ते का होता है।

एक बहु–स्तरीय कक्षा के लिए योजना

मैं कक्षा-1 और 2 के विद्यार्थियों के साथ काम करते हुए दिन के पाँच पीरियड बिताता हूँ। भाषा सीखने के लिए दोनों ही कक्षाओं के लिए दो पीरियड रहते हैं और दो दिन के अन्तराल में एक अतिरिक्त पीरियड भाषा अध्ययन के लिए रहता है।

सीखने के स्तर का आकलन

मेरी कक्षा-1 में 28 में से 11 विद्यार्थी नए हैं, इसलिए स्कूल शुरू होने के 10–15 दिन बाद तक हमने कुछ ऐसी गतिविधियाँ कीं जो कि आमतौर पर पूर्व–प्राथमिक कक्षाओं के लिए होती थीं। इनमें लिखित और मौखिक कार्य शामिल थे जिनसे मुझे बच्चों के सीखने के स्तर का पता लगाने में मदद मिली।

एक शिक्षक को कक्षा के विद्यार्थियों के सीखने के स्तर का आकलन कर लेना चाहिए, समूह बना लेना चाहिए और उसके बाद ही उनके साथ काम करना चाहिए। इसके बाद, यह बात महत्त्वपूर्ण है कि कक्षा के समय का बँटवारा कैसे किया जाए क्योंकि शिक्षक को एक ही साथ अलग-अलग कौशल स्तर वाले बच्चों के साथ काम करना होगा।

मेरी कक्षा में, भाषा सीखने के विभिन्न स्तर स्पष्ट हैं। एक समूह चित्रों को पहचान सकता है, उनके नाम पुकार सकता है और अपने विचारों को कुछ शब्दों में व्यक्त करने की कोशिश कर सकता है। अगले स्तर के बच्चे मेरी सहायता से कुछ अक्षरों की पहचान कर सकते हैं, चित्र नामों की पहली ध्वनि का उच्चारण कर सकते हैं और मानक भाषा में अपनी राय सही ढंग से व्यक्त कर सकते हैं। तीसरे स्तर के बच्चे पाठ पढ़ सकते हैं, कहानियाँ सुना सकते हैं और कविताएँ सुना सकते हैं; वे अक्षरों और मात्राओं में भी अन्तर कर सकते हैं।

तीनों समूहों के साथ एक साथ काम करने के लिए कई प्रकार के संसाधन और कार्य योजनाएँ चाहिए होती हैं। मैंने देखा है कि शिक्षक उन विद्यार्थियों के साथ अधिक समय बिताते हुए दिखते हैं जो तेज़ी से सीखते हैं और चीज़ों को बेहतर ढंग से समझते हैं, जबकि जिन्हें वास्तव में अतिरिक्त समय की आवश्यकता होती है उन्हें बहुत कम समय दिया जाता है। मेरा मानना है कि यदि सभी शिक्षक इस प्रश्न पर विचार करें कि, *इन बच्चों को कक्षा स्तर तक आने में मदद करने के लिए मुझे क्या करना चाहिए ताकि वे भी सीखना शुरू कर सकें?* तो वे इन बच्चों के लिए सीखने-सिखाने की रणनीति विकसित करने पर ध्यान दे सकते हैं और उन्हें कक्षा में निश्चित रूप से सफलता मिलेगी।

हम हरेक बच्चे के सीखने के तरीक़े और उसके कक्षा में व्यवहार को उनके साथ कक्षा में काम करते समय ही जान पाते हैं। विभिन्न समूह में सीखने के विभिन्न स्तर पर बच्चों के साथ काम करना ही शिक्षक का प्राथमिक कर्तव्य होता है। और इसके लिए निम्नलिखित चीज़ों का होना आवश्यक है :

1. बच्चों की किताबों का स्तर के अनुसार वर्गीकरण
2. फोटो कार्ड
3. शब्द कार्ड
4. कहानी कहता चित्र
5. अक्षर और मात्रा कार्ड
6. कहानी, कविता और चार्ट का संग्रह

7. कहानियाँ पढ़ने और कविता सुनाने का कौशल

8. सामग्रियों के उपयोग की समझ

उपरोक्त बिन्दु-8 के सम्बन्ध में यह देखा जाता है कि प्रचुर मात्रा में सामग्री उपलब्ध होने पर भी अक्सर उसका उपयोग कम होता है या उपयोग कैसे किया जाना चाहिए इस पर समझ की कमी होती है। इस सम्बन्ध में मैं अपने कुछ काम साझा करना चाहूँगा।

सम्बन्ध निर्मित करना

जब बच्चे, जो सिर्फ़ 5 या 6 साल के होते हैं, एक नई तरह की व्यवस्था में जाते हैं तब स्कूल और इसके अन्दर की बाक़ी सब चीज़ें उन्हें अनजानी-सी लगती हैं। मैं उन्हें कहानियाँ और कविताएँ सुनाने और उनसे उनके परिवारों, उनके परिवेश और खेलों के बारे में बात करने से शुरुआत करता हूँ। इससे उन बच्चों की पहचान करने में सहायता मिलती है जो कक्षा में सहज महसूस करने लगे हैं और हम उन्हें बेहतर सीखने और कुछ नया सिखाने में मदद कर सकते हैं। कुछ बच्चों को विभिन्न कारणों से नए माहौल के साथ तालमेल बिठाने के लिए अधिक समय लगता है, इसका मुख्य कारण यह है कि वे नियमित रूप से स्कूल नहीं आते हैं। इन गतिविधियों के माध्यम से बच्चों में अपने शिक्षकों के प्रति पूर्ण विश्वास विकसित होता है।

पढ़ने का समय

मैं हर रोज़ 30 मिनट अपने विद्यार्थियों को पढ़कर सुनाता हूँ। जिन बच्चों को पढ़ने में कठिनाई आती है, उन पर मैं विशेष ध्यान देता हूँ और उन्हें कहानियाँ और कविता सुनाता हूँ। मैं उन्हें बरखा सीरीज़ और लाइब्रेरी की अन्य मज़ेदार किताबें देकर पढ़ने के लिए प्रोत्साहित करने की कोशिश करता हूँ। और अगले दिन जो पढ़ सकते हैं वे उनके द्वारा पढ़ी गई किताब में से कहानियों को पूरे समूह को सुनाते हैं। कुछ विद्यार्थी जो मात्रा और अक्षर को पहचान सकते हैं, उन्हें पिक्चर और शब्द कार्ड की सहायता दी जाती है, ताकि वे बुनियादी अक्षर और ध्वनियों को पिक्चर कार्ड से खेलते हुए ख़ुद सीखना शुरू करें।

कक्षा-2 का एक विद्यार्थी जो सहायता के साथ केवल कुछ सरल शब्दों को पढ़ सकता था वह बरखा सीरीज़ की *मिली का गुब्बारा* से बहुत प्रेरित हुआ और उसने और भी दूसरी किताबों को पढ़ना शुरू कर दिया। इन दिनों वह सुबह की प्रार्थना सभा में इतने अच्छे से पढ़कर सुनाता है कि वह सभी का सबसे पसन्दीदा कहानी सुनाने वाला बन गया है।

भाषा का काम

विभिन्न स्तर पर विद्यार्थियों के साथ एक साथ काम करना कठिन हो सकता है। इसलिए इस कार्य को सफलतापूर्वक पूरा करने के लिए शिक्षकों के पास एक योजना होनी ही चाहिए। कक्षाओं में विद्यार्थियों के साथ काम करने के लिए कई संसाधन उपलब्ध होने चाहिए जिनमें रीडिंग पोस्टर्स, कहानी–कविता के चार्ट, कहानी पट्टियाँ (स्टोरी स्ट्रिप्स), शब्द कार्ड, स्टोरी कार्ड आदि शामिल हैं।

28 विद्यार्थियों की मेरी कक्षा में, 7-8 विद्यार्थी स्वतंत्र रूप से काम कर सकते हैं, जबकि कई पहली बार स्कूल आए हैं और उन्हें अक्षर और मात्रा पहचानने के लिए अभ्यास की ज़रूरत है। भाषायी नज़रिए से मैं लिखने, बोलने, सुनने और पढ़ने पर काम कर रहा हूँ। इसलिए, पूरी कक्षा के साथ-साथ छोटे समूहों में भी काम करना होगा।

कहानी : रानी भी

सामग्री : नरेटिव कार्ड, पिक्चर कार्ड, अक्षर कार्ड और मात्रा कार्ड

चरण-1 : मैंने कक्षा को एक कहानी पढ़कर सुनाई।

चरण-2 : फिर मैंने हरेक बच्चे को सवालों से बातचीत में शामिल किया, जैसे – आपके परिवार में कौन-कौन है? आप किसके साथ खेलते हो? आपके छोटे भाई-बहन क्या करते हैं? क्या वे आपके साथ स्कूल आना चाहेंगे?

महत्त्वपूर्ण बात है सवालों को पढ़कर सुनाई गई कहानी से जोड़ना और विद्यार्थियों को उससे सम्बन्ध बनाने में मदद करना। जो बच्चे कक्षा में ज़्यादा बात नहीं करते, शिक्षक को उनसे जवाब लेने का प्रयास करना चाहिए और यदि वे फिर भी झिझक रहे हों तो उन्हें जवाब देने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए। जो विद्यार्थी विस्तार से समझ नहीं पाए हों और ग़लत जवाब देते हों उन्हें फिर से सोचकर जवाब देने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

चरण-3 : एक समूह को अपने आप से कुछ लिखने का कार्य दिया गया जबकि दूसरे समूह को अक्षरों से शब्दों को बनाने के लिए कहा गया। कुछ बच्चों को पिक्चर कार्ड दिए गए और उन्हें पिक्चर कार्ड में दर्शाई गई वस्तु के नाम की पहली ध्वनि पहचानने के बाद एक अक्षर पहचानने को कहा गया।

चुनौतियाँ और संकल्प

मिश्रित क्षमता वाली कक्षा में शिक्षक को तरह-तरह की चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। कुछ विद्यार्थियों की गतिविधियाँ और व्यवहार उनके सीखने में रुकावट पैदा करते

हैं। इसके कारण शिक्षक उन बच्चों से बात करने में बहुत समय ख़र्च कर देते हैं जिससे पूरी कक्षा बाधित होती है और शिक्षक की उस दिन की रणनीति विफल हो जाती है।

कुछ विद्यार्थियों की अनियमित उपस्थिति उनके सीखने में बाधा बनती है जिससे शिक्षक को उन पर अधिक समय देने की ज़रूरत पड़ती है। कई बच्चे स्कूल के अलावा घर पर भी पढ़ते और सीखते हैं। हालाँकि उनमें से कुछ बच्चों के पास घर पर पढ़ने का समय या सहायता उपलब्ध नहीं होती है, यहाँ तक कि वे अपना होमवर्क तक नहीं कर पाते हैं।

इन चुनौतियों का सबसे सही हल यह है कि शिक्षक को बच्चे की पृष्ठभूमि का पता हो। यह जानने के लिए शिक्षक को बच्चों के माता-पिता के सम्पर्क में रहना चाहिए। विद्यार्थियों का रिकॉर्ड रखना और उनके साथ काम करना आसान होगा यदि शिक्षक समुदाय में जाए और बच्चों के माता-पिता से मिले और उनके बारे में अधिक जानकारी जुटाए, जैसे – बच्चे के माता-पिता क्या करते हैं? वे बच्चे के साथ कितना समय बिताते हैं? बच्चे घर पर क्या करते हैं? अभिभावक किस हद तक बच्चे की पढ़ाई में मदद करते हैं।

अभिभावकों को स्कूल और कक्षा के नियम के साथ-साथ उनके बच्चों का बर्ताव भी पता होना चाहिए, जिसे शिक्षक को समय-समय पर अभिभावकों के साथ साझा करना चाहिए। अभिभावकों को स्कूल में होने वाली प्रगति और बदलावों के बारे में पता होना चाहिए और समय-समय पर उनके बच्चे की सीखने की ताज़ा स्थिति के बारे में भी बताया जाना चाहिए।

स्कूल के समय के बाद

चार्ट बनाने और अगले दिन की कार्ययोजना बनाने के लिए हमारे पास एक घण्टे का समय होता है। इसके अलावा, शिक्षक के पेशेवर विकास, स्कूल संस्कृति और मासिक योजना एवं समीक्षा सहित स्कूल से सम्बन्धित कार्यों को पूरा करना होता है। हम आकलन प्रपत्र और विद्यार्थियों की प्रोफ़ाइल बनाते हैं और उनकी नोटबुक की जाँच करते हैं। इसके बाद जो काम इस दौरान पूरा नहीं हो पाता, उसे मैं घर पर पूरा करता हूँ।

Endnotes

i Barkha Series: https://ncert.nic.in/dee/barkha-series.php?ln=en

सतवीर सिंह चौहान 2016 से अज़ीम प्रेमजी स्कूल, सिरोही, राजस्थान में पढ़ा रहे हैं। उनके पास भूगोल में स्नातकोत्तर और बीएड की डिग्री है। इसके पहले उन्होंने 6 वर्ष तक विभिन्न निजी विद्यालयों में प्राथमिक और उच्च दोनों कक्षाओं में पढ़ाने का कार्य किया है। उनसे *Satvir.chauhan@azimpremjifoundation.org* पर सम्पर्क किया जा सकता है।

अनुवाद : प्रियेश गुप्ता **पुनरीक्षण :** प्रतिका गुप्ता **कॉपी एडिटर :** अनुज उपाध्याय

सामाजिक और भावनात्मक विकास का पोषण | कला शिक्षकों की भूमिका

शुभा एच.के.

विद्यार्थियों के सम्पूर्ण विकास में योगदान के लिए कला शिक्षा का महत्त्वपूर्ण स्थान है। रचनात्मकता को बढ़ावा देने से आगे जाकर कला की गतिविधियाँ सामाजिक और भावनात्मक विकास के पोषण के लिए एक आधार उपलब्ध कराती हैं। फ़ाउंडेशनल स्टेज के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (एनसीएफ़-एफ़एस) ने सामाजिक, भावनात्मक और नैतिक शिक्षा (एसईईएल) के क्षेत्र के तहत पाठ्यचर्या सम्बन्धी स्पष्ट लक्ष्यों और दक्षताओं को रेखांकित किया है। हालाँकि परम्परागत विषयों के विपरीत सामाजिक-भावनात्मक विकास के क्षेत्र को अलग-अलग कक्षा के खानों में नहीं बाँटा जाता। इसकी बजाय, इसे विभिन्न विषयों के साथ एकीकृत किया जाता है, जो एक ख़ास तरह की चुनौती और अवसर प्रदान करता है।

यह लेख कला-दक्षताओं को हासिल करने के उद्देश्य से की जाने वाली ख़ास गतिविधियों के बीच अन्तर-सम्बन्ध और विद्यार्थियों में सामाजिक, भावनात्मक और नैतिक शिक्षा (SEEL) की दक्षताओं के विकास के साथ उनके सह-सम्बन्धों पर प्रकाश डालता है। ये गतिविधियाँ निम्न दक्षताओं को लक्ष्य बनाती हैं :

C-12.1 : विभिन्न आकारों की द्विआयामी और त्रिआयामी कलाकृतियाँ बनाने के लिए विभिन्न प्रकार की वस्तुओं और उपकरणों की खोज करती है और उनके साथ काम करती है।

C-12.2 : संगीत रचने, भूमिका निभाने, नृत्य और विभिन्न तरह की गतियों के लिए अपनी आवाज़ शरीर, स्थानों और विभिन्न तरह की वस्तुओं की खोज करती है और उनके साथ काम करती है।

स्रोत : फ़ाउंडेशनल स्टेज के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2.4.5 क्षेत्र : सौन्दर्यशास्त्रीय और सांस्कृतिक विकास, पेज-63

गतिविधियाँ

कक्षा-1 और 2 के विद्यार्थियों के लिए उनकी कला की कक्षाओं के दौरान शामिल की गई कुछ गतिविधियाँ यहाँ बताई गई हैं जिनसे ऊपर उल्लिखित सामाजिक-भावनात्मक और नैतिक शिक्षा सम्बन्धी दक्षताएँ हासिल की जा सकें।

अपना चित्र बनाना

विद्यार्थियों से कक्षा में लगे एक बड़े आकार के शीशे में ख़ुद को देखकर अपना चित्र बनाने को कहा जाता है। उन्हें इसके लिए उत्साहित किया जाता है कि वे अपने चित्र में बारीकियों को शामिल करें जैसे कि बालों की लम्बाई और रंग तथा उनके द्वारा पहने गए कपड़े। चित्रों को उनकी आँखों की ऊँचाई के बराबर रखकर ही प्रदर्शित किया जाता है। जब सभी विद्यार्थी सभी चित्रों को देख लेते हैं तब हम उन विशिष्ट चीज़ों की चर्चा करते हैं जो प्रत्येक विद्यार्थी को एक-दूसरे से अलग करती हैं और इसी तरह सभी विद्यार्थियों के बीच समान चीज़ों की भी चर्चा करते हैं। इस गतिविधि से उन्हें न केवल उनके शारीरिक रूप पर प्रतिक्रिया देने में मदद मिलती है, बल्कि इससे उनमें आत्म-जागरूकता, अपनी पहचान के निर्माण और अपनी सम्बद्धता के एहसास को भी बढ़ावा मिलता है।

परिवार का कोलाज

हर एक बच्चे को एक काग़ज़ की शीट, एक पुरानी पत्रिका, कैंची और गोंद दी जाती है। उनसे कहा जाता है कि वे कोलाज बनाने के लिए पत्रिका से उन तस्वीरों को काटें जो उनके परिवार के सदस्यों से मिलती-जुलती हैं। इसके बाद हर एक बच्चा कक्षा में अपने कोलाज को सबके साथ साझा करता है। वह उसमें मौजूद हर एक तस्वीर को दिखाता है और बताता है कि वह तस्वीर किन लोगों को निरूपित कर रही है – उनके नाम, उनसे क्या रिश्ता है और बाक़ी ब्यौरे, जैसे वे क्या करते हैं। अगर उन्हें अपनी पत्रिका में कोई उचित तस्वीर नहीं मिलती तो वे अपने साथियों से उनकी पत्रिकाओं से तस्वीर साझा करने को कह सकते हैं।

जब हमने इस गतिविधि को किया, तो विद्यार्थियों ने अपने परिवार के प्रत्येक सदस्य के बारे में कुछ शब्द या एक वाक्य लिखा। उन्होंने इसमें अपने पालतू जानवरों और घर में अपनी पसन्दीदा जगहों को जोड़ा। रोचक बात है कि कक्षा-1 के कुछ विद्यार्थी अपने पिता के पेशे से अनभिज्ञ थे। उन्हें इस बात के लिए प्रोत्साहित किया गया कि वे अपने माता-पिता से इसके बारे में पूछें और उस जानकारी को साझा करें। शुरू में कक्षा-2 के कुछ विद्यार्थी अपने माता-पिता के इस तरह के पेशे बताने में झिझक रहे थे, जैसे घर की देखभाल करने का काम, बागवानी और घरेलू सहायक। अतः हर एक पेशे की महत्ता के

साथ ही इस बारे में चर्चा की गई कि प्रत्येक व्यक्ति का काम उनके परिवारों के लिए किस तरह योगदान करता है। हालाँकि अन्ततः विद्यार्थियों ने जानकारियों को साझा किया, लेकिन अपने परिवार के सदस्यों के पेशों की दिल से सराहना करने के लिए वे इसी तरह की कई गतिवधियों व चर्चाओं से गुज़रे। कुल मिलाकर, इस गतिविधि ने विद्यार्थियों में अपने परिवार के प्रति एक जुड़ाव पैदा करने में एक भूमिका निभाई।

परिवार, स्कूल और मोहल्ला

शिक्षक बच्चों को उनके अपने इलाक़े का नक़्शा दिखाते हैं – उनका घर और मोहल्ला – और यह दिखाते हैं कि स्कूल तक पहुँचने से पहले वे किन महत्त्वपूर्ण जगहों से गुज़रते हैं। शिक्षक बच्चों को अभिभावकों और परिवार के दूसरे सदस्यों के पतों और फ़ोन नम्बरों को जानने के महत्त्व के बारे में भी बताते हैं। विद्यार्थियों से कहा जाता है कि वे अपने अभिभावकों से इस बारे में बात करें और इन ब्यौरों को हासिल करें। शिक्षक प्रत्येक विद्यार्थी से अपने मोहल्ले के बारे में पहचानी जाने वाली महत्त्वपूर्ण जगहों को चिह्नित करते हुए इसी तरह का मानचित्र अपनी ड्राइंग बुक में बनाने और फिर इसे बाक़ी विद्यार्थियों को समझाने के लिए कहते हैं।

विद्यार्थी इस गतिविधि को पूरा करने में समय लेते हैं। उन्हें पते और फ़ोन नम्बर याद रखने के लिए अभ्यास और दोहराव की ज़रूरत होती है और मानचित्र बनाते समय उन्हें दिशाओं के बारे में मदद की ज़रूरत होती है।

हमारे विद्यार्थियों ने इस गतिविधि में उत्साहपूर्वक भाग लिया। कक्षा-2 के विद्यार्थियों ने इस गतिविधि को आगे बढ़ाते हुए एक नाटक रचा और उसमें ऐसी परिस्थिति बनाई जिसमें एक बच्चा खो जाता है और फिर अपने माता-पिता के पास लौट आता है क्योंकि बच्चे को सही पता मालूम था। इस गतिविधि से बच्चों को उनके आस-पास के माहौल के बारे में जागरूकता तथा समुदाय के साथ जुड़ाव के बोध को बढ़ाने में मदद मिली।

भावनात्मक अभिनय पहेली

शिक्षक छोटे-छोटे कार्डों पर विभिन्न भावनाओं को लिखते हैं (ख़ुशी, दुखी, क्रोधित, आश्चर्यचकित आदि) और प्रत्येक विद्यार्थी कोई एक कार्ड उठाता है और बिना बोले हुए उस कार्ड पर लिखी भावना का अभिनय करता है जबकि दूसरे बच्चों का काम इस भावना को पहचानना होता है। वे उन परिस्थितियों के बारे में चर्चा करते हैं जिसमें ख़ास भावनाएँ जागृत हो सकती हैं और इस बात की चर्चा करते हैं कि कैसे कोई ख़ास भाव-भंगिमाएँ या शारीरिक भाषा ख़ास भावनाओं को सम्प्रेषित करती है।

हमारे विद्यार्थियों ने कक्षा और घर की कुछ मज़ाकिया घटनाओं को साझा किया। कुछ बच्चे दुखी करने वाली घटनाओं को साझा करते हुए रो दिए। एक विद्यार्थी ऐसा कुछ भी साझा करने से हिचकती दिखाई दे रही थी जिससे वह दुखी हो। तब उसे इस बात के लिए प्रोत्साहित किया गया कि वह किसी भी सामान्य घटना को साझा करे, जैसे कि भाई-बहन से उसकी लड़ाई। उसने इसके साथ शुरुआत की। बाद में उसने अपनी दादी की मौत की बात साझा की और बताया कि इसका उस पर बहुत असर हुआ और वह अपनी दादी को कितना याद करती है। उसने रोना शुरू कर दिया और दूसरे बच्चे उसे चुप कराने लगे। इससे कई दूसरे विद्यार्थी भी उन घटनाओं को साझा करने लगे जिन घटनाओं ने उन्हें दुखी या भयभीत कर दिया था।

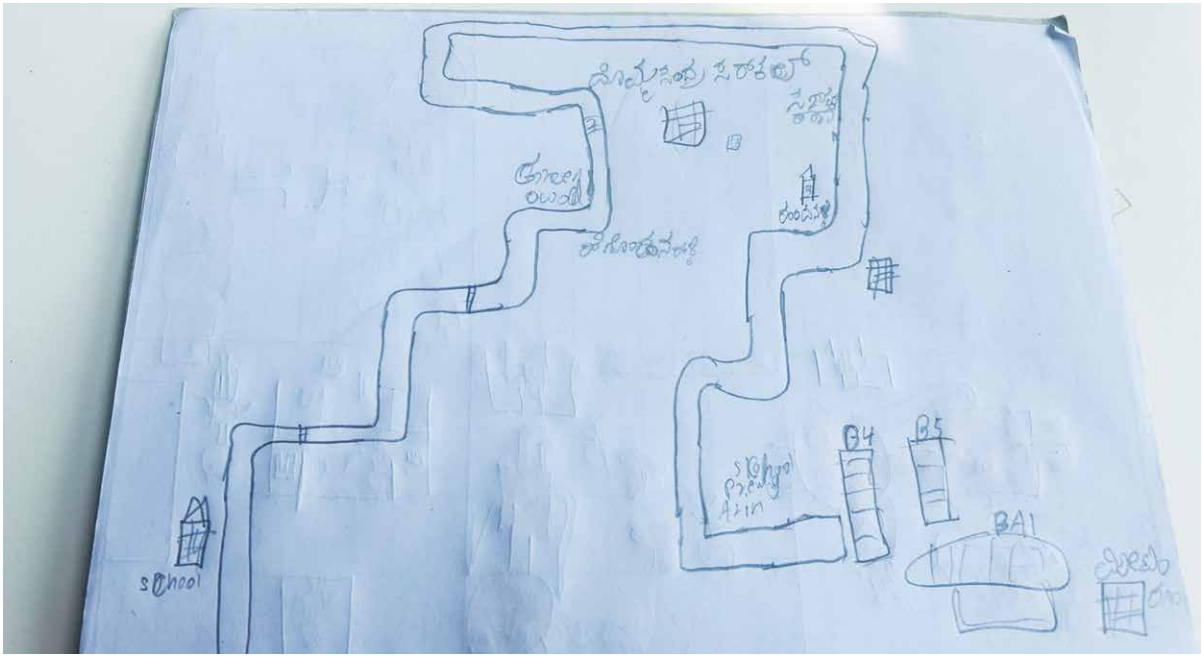

चित्र-1 : *विद्यार्थियों द्वारा बनाया गया उनके अपने इलाक़े का नक़्शा।*

कहानी सुनाना और उस पर अभिनय

रोचक क़िरदारों वाली सामान्य सन्दर्भयुक्त कहानियाँ, लहज़े के बदलाव, भाव-भंगिमा और आवाज़ के उतार-चढ़ाव के साथ सुनाई जाती हैं। शिक्षक और कुछ विद्यार्थियों द्वारा इन कहानियों को बार-बार सुनाया/ पढ़ा जाता है ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि सभी विद्यार्थियों ने इसे समझ लिया है। उसके बाद विद्यार्थियों को समूहों में विभाजित किया जाता है। प्रत्येक समूह से कहा जाता है कि वे संवाद लिखें, क़िरदार तय करें और अभिनय का अभ्यास करें। उन्हें नाटक में इस्तेमाल करने के लिए सामग्री मुहैया कराई जाती है या वे उपलब्ध संसाधनों का इस्तेमाल करते हैं।

प्रत्येक समूह को अपनी कहानी कक्षा के सामने अभिनीत करनी होती है और इस नाटक में प्रस्तुत अभिव्यक्तियों, संवाद अदायगी, नाट्य सामग्री और नाटक के घटनाक्रम पर विद्यार्थियों की प्रतिक्रिया माँगी जाती है कि वे यह बताएँ कि उन्हें क्या पसन्द आया और किस चीज़ में सुधार की गुंजाइश है।

यह गतिविधि हमारी कक्षाओं में नियमित रूप से की जाती है और यह विद्यार्थियों के सामाजिक और भावनात्मक विकास के लिए एक उत्कृष्ट गतिविधि साबित हुई है। एक समूह के अन्दर कहानी के क़िरदारों के चुनाव और भूमिकाओं को लेकर बहुत असहमतियाँ और समझौते होते हैं। लेकिन विद्यार्थी ख़ुद ही अपने इन विवादों को निपटा लेते हैं और कभी-कभार इसमें शिक्षकों की थोड़ी सहायता लगती है। बहुत सामान्य तरीक़े के फीडबैक जैसे "मुझे उसका अभिनय अच्छा लगा क्योंकि वह मेरी दोस्त है," से आगे बढ़कर विद्यार्थियों का फीडबैक भाव-भंगिमाओं और अभिनय कौशलों पर किए गए इस तरह के बहुत ठोस अवलोकनों तक पहुँच जाता है, जैसे "उसे दुख भरी परिस्थिति दर्शाते हुए मुस्कराना नहीं चाहिए।"

संक्षेप में

कला दक्षताओं को हासिल करने के साथ विद्यार्थी इन गतिविधियों के ज़रिए सामाजिक-भावनात्मक और नैतिक शिक्षा से जुड़ी ये दक्षताएँ भी हासिल करते हैं :

C-4.1 : 'ख़ुद' को एक परिवार और समुदाय से सम्बन्धित व्यक्ति के रूप में पहचानना शुरू करते हैं।

C-4.2 : विभिन्न भावनाओं को पहचानने लगते हैं और उन्हें उपयुक्त तरीक़े से नियंत्रित करने के लिए सचेत प्रयास करते हैं।

स्रोत : फ़ाउंडेशनल स्टेज के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा। 2.4.5 क्षेत्र : सौन्दर्यशास्त्रीय और सांस्कृतिक विकास। पृष्ठ-60

इन गतिविधियों से विद्यार्थियों के सीखने का आकलन करते हुए शिक्षक को कला एवं सामाजिक-भावनात्मक और नैतिक शिक्षा, दोनों की दक्षताओं को ध्यान में रखना चाहिए। उदाहरण के लिए, भूमिका-निर्वाह के समय शिक्षक को इसका अवलोकन करना चाहिए कि कला दक्षता के रूप में वे किस तरह अपनी आवाज़, शरीर, स्थान और नाट्य सामग्री का इस्तेमाल कर रहे हैं। और ठीक उसी समय शिक्षक को यह भी देखना चाहिए कि सामाजिक-भावनात्मक और नैतिक शिक्षा की दक्षता के रूप में विद्यार्थी अपने साथियों के साथ किस तरह का सहयोग कर रहे हैं।

ऊपर जिन गतिविधियों की चर्चा है वे महज चन्द उदाहरण हैं। कला पाठ्यचर्या को लागू करते वक़्त यह बेहद ज़रूरी है कि हम सामाजिक-भावनात्मक और नैतिक शिक्षा की दक्षताओं व सीखने के मानकों पर लगातार ध्यान देते रहें और उसके अनुसार अपनी रणनीतियाँ बदलते रहें। इसके साथ ही अन्य पहलू भी उतने ही महत्त्वपूर्ण हैं जैसे विद्यार्थियों को उनकी पसन्द की भाषा में अभिव्यक्ति की अनुमति देना, विद्यार्थियों के साथ सार्थक जुड़ाव स्थापित करना, सकारात्मक माहौल बनाना और एक सुसंगत समय-सारणी व ढाँचागत वातावरण बनाए रखना ताकि विद्यार्थी अपनी भावनाओं को साझा करने में सहज रहें और उनके बीच स्वस्थ सम्बन्ध विकसित हों।

समावेशिता को अपनाते हुए हमारा स्कूल सभी तरह की आर्थिक, सामाजिक व सांस्कृतिक पृष्ठभूमियों से आने वाले विद्यार्थियों के साथ ही विभिन्न शारीरिक व मानसिक क्षमताओं वाले विद्यार्थियों का स्वागत करता है। यह विविधता एक ऐसे माहौल को प्रोत्साहित करती है जहाँ विद्यार्थी सहनशील होना, सहयोगी होना और एक-दूसरे की मदद करना सीखते हैं।

शुभा एच.के. अज़ीम प्रेमजी स्कूल बेंगलूरु की वाईस प्रिंसिपल हैं। वह अज़ीम प्रेमजी फ़ाउंडेशन के साथ 2007 से जुड़ी हुई हैं। इस दौरान उन्होंने बहुत-सी ज़िम्मेदारियाँ निभाई हैं जिनमें 12 वर्ष तक प्रवासी मज़दूरों के बच्चों के लिए 2 ब्रिज सेंटरों का संचालन शामिल है। वह उस कोर ग्रुप का भी हिस्सा थीं जिसने अज़ीम प्रेमजी स्कूलों की पाठ्यचर्या तैयार की और विभिन्न जगहों पर इन स्कूलों की स्थापना की। वह उस समूह का भी हिस्सा थीं जिसने बुनियादी वर्षों के लिए कर्नाटक राज्य की पाठ्यचर्या को तैयार किया और *आँगनवाड़ी* शिक्षिकाओं के साथ काम करते हुए इस पाठ्यचर्या को लागू करने के लिए उनकी क्षमताएँ विकसित करने में मदद की। उनसे *shubha@azimpremjifoundation.org* पर सम्पर्क किया जा सकता है।

अनुवाद : मनीष आज़ाद **पुनरीक्षण :** भरत त्रिपाठी **कॉपी एडिटर :** अनुज उपाध्याय

शिक्षक की स्वायत्तता और अधिगम प्रतिफल

रीमा कौर

फ़ाउंडेशनल स्टेज के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (NCF-FS) का लक्ष्य अधिगम के स्पष्ट मानक परिभाषित कर फ़ाउंडेशनल स्टेज में बच्चों के अधिगम सम्बन्धी अनुभवों में बदलाव लाना है। अधिगम प्रतिफलों (LOs) के प्रति दृष्टिकोण यह है कि क्षमता हासिल करने की दिशा में बच्चे अपनी गति से आगे बढ़ते हैं। यह अधिगम की पूर्व-निर्धारित, कक्षा-वार/ ग्रेड-वार गति सम्बन्धी पिछली सभी नीतियों से बहुत अलग है।

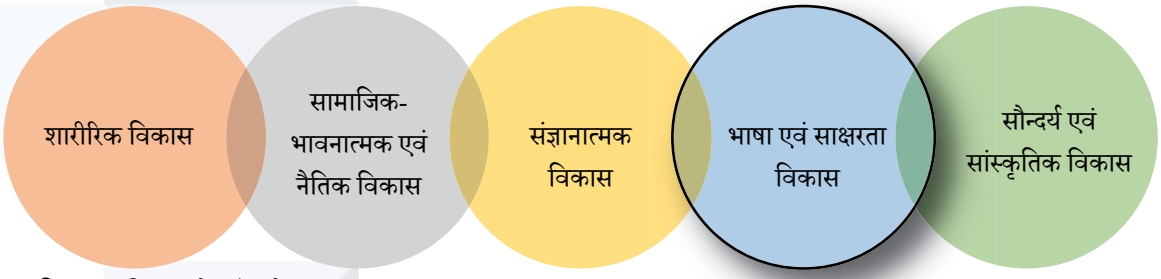

चित्र-1 : विकास के पाँच क्षेत्र।

आइए इसे भाषा और साक्षरता विकास के क्षेत्र के एक उदाहरण की सहायता से समझें, जिसके पाठ्यचर्या लक्ष्य और अधिगम प्रतिफल निम्नानुसार हैं।

पाठ्यचर्या लक्ष्य-10 : बच्चों में प्रथम भाषा पढ़ने और लिखने में प्रवाह विकसित होता है

जहाँ मौखिक भाषा का विकास समाजीकरण और किसी भाषायी वातावरण में शामिल होने की प्रक्रिया के माध्यम से स्वाभाविक रूप से होता है, वहीं लिखित भाषा एक सांस्कृतिक संरचना होती है और इसमें कुछ भी स्वाभाविक नहीं होता। बच्चों को उनके द्वारा अर्जित मौखिक भाषा और उस भाषा की लेखन प्रणाली (लिपि) के बीच सम्बन्ध बनाने के लिए स्पष्ट शिक्षण की आवश्यकता होती है। इसकी शुरुआत यह पहचानने से होती है कि हम ऐसे शब्दों का उपयोग करते हैं जिनमें अर्थ होता है और ये शब्द आगे चलकर ध्वनियों में विभाजित हो जाते हैं जिन्हें लिपि में प्रतीकों के द्वारा दर्शाया जाता है। हालाँकि लिपि पढ़ने और लिखने के लिए स्पष्ट शिक्षण की आवश्यकता होती है, लिपि के सभी अक्षर सीख लेना पूर्ण हो जाने तक अर्थ-निर्माण करने को टाला नहीं जाना चाहिए।

पाठ्यचर्या-10.1 : अधिगम प्रतिफल

पाठ्यचर्या-10.1 : L1 में ध्वनि जागरूकता विकसित करती है और स्वनिमों (phonemes) / शब्दांशों (syllables) को मिलाकर शब्द बनाती है और शब्दों को स्वनिमों (phonemes) / शब्दांशों (syllables) में विभाजित करती है

उम्र 3-8

	A	B	C	D	E
1	• बालगीत गाता है	• तुकबन्दी वाले शब्द और अनुप्रास पहचानता है	• तुकबन्दी वाले शब्द और अनुप्रास बनाता है		
2	• शब्दांश ध्वनियों की नक़ल और पुनरुत्पादन करता है	• शब्दों में आरम्भिक और अन्तिम शब्दांशों की पहचान करता है	• शब्दांशों को उनके व्यंजन और स्वर ध्वनियों में विभाजित करता है		
3		• 2-3 शब्दांशों को जोड़कर सरल शब्द बनाता है	• परिचित शब्द बनाने के लिए ध्वनियों (स्वर और व्यंजन) को मिलाता है		

स्रोत : फ़ाउंडेशनल स्टेज फ़ाउंडेशनल स्टेज के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा । खण्ड 1.1.4 भाषा एवं साक्षरता विकास। पेज 260-261

नोट : फ़ाउंडेशनल स्टेज के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (NCF-FS) के अनुसार, L1 घर की भाषा/ मातृभाषा/ परिचित भाषा है (पेज 62)। फ़ाउंडेशनल स्टेज के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (NCF-FS) ने सिफ़ारिश की है कि L1 को शिक्षण के माध्यम के रूप में प्राथमिकता दी जानी चाहिए। यदि L1 शिक्षण का माध्यम नहीं है, तो जहाँ तक सम्भव हो इसका उपयोग मौखिक क्षेत्र में और अन्य भाषाओं में सहज परिवर्तन के लिए किया जाना चाहिए। अधिक जानने के लिए, फ़ाउंडेशनल स्टेज में भाषा शिक्षा और साक्षरता के लिए फ़ाउंडेशनल स्टेज के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (NCF-FS) का दृष्टिकोण देखें (पेज 76-79)।

यह उदाहरण इस दक्षता की प्राप्ति के लिए सम्भावित विकास के पाँच चरण (A से E तक) दर्शाता है। सभी दक्षताओं के लिए अधिगम प्रतिफल इसी तरह दर्शाए जाते हैं।

शिक्षक की स्वायत्तता और कक्षा का सन्दर्भ

फ़ाउंडेशनल स्टेज के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (NCF-FS) में स्पष्ट रूप से कहा गया है कि पाठ्यक्रम विकसित करने वालों और शिक्षकों को कक्षा के सन्दर्भों को ध्यान में रखते हुए अधिगम प्रतिफल तैयार करने की स्वायत्तता होनी चाहिए, बशर्ते कि ये दक्षताओं से मेल खाते हों (NCF-FS 2022, पृ 51)। एससीईआरटी जैसे राज्य शैक्षणिक संस्थान, जो पाठ्यक्रम विकास में लगे हुए हैं, अधिगम प्रतिफलों के स्तर पर काम करने पर अधिक ध्यान केन्द्रित कर रहे हैं।

इसका मतलब यह है कि एक शिक्षक को यह स्वतंत्रता है कि वह अपनी कक्षा के सन्दर्भ के आधार पर ध्वनि सम्बन्धी चेतना दक्षता के लिए अधिगम प्रतिफल संशोधित कर सके। आइए हम दीपिका का उदाहरण लें, जो पास के एक सुविधाविहीन मोहल्ले में पढ़ाती है और उसके पास 3-6 साल के बच्चों की एक मिली-जुली कक्षा है, जहाँ शिक्षण का माध्यम अँग्रेज़ी है।

दीपिका अपने बच्चों के लिए निम्नलिखित कारकों पर विचार करते हुए ध्वनि सम्बन्धी चेतना की दक्षता से सम्बन्धित अधिगम प्रतिफलों की निम्नानुसार पुनर्कल्पना करती है :

- विभिन्न पर्यावरणीय ध्वनियों पर ध्यान देने और उनके साथ खेलने में बच्चों द्वारा पहले दर्शाई जा चुकी रुचि।
- किसी अन्य दक्षता, जिसका सम्बन्ध संज्ञानात्मक विकास से है, के कुछ अधिगम प्रतिफलों को शामिल करना (पाठ्यचर्या-2.3 : ध्वनियों में उसके पिच, वॉल्यूम से और ध्वनि पैटर्न्स में पिच, वॉल्यूम और टेम्पो से अन्तर करती है)।

तालिका-1 : दीपिका द्वारा अपनी कक्षा के लिए अधिगम प्रतिफलों में संशोधन

पाठ्यचर्या-10.1 : L1 में ध्वनि जागरूकता विकसित करती है और स्वनिमों (phonemes) / शब्दांशों (syllables) को मिलाकर शब्द बनाती है और शब्दों को स्वनिमों (phonemes) / शब्दांशों (syllables) में विभाजित करती है

उम्र 3-8

	A	B	C	D	E
1	• पर्यावरणीय ध्वनियों पर ध्यान देता है (उदाहरण के लिए, विभिन्न जानवरों और पक्षियों की आवाज़ें)	• पर्यावरणीय ध्वनियों पर ध्यान देता है और उत्पन्न करता है	• विभिन्न सन्दर्भों में पर्यावरणीय ध्वनियों के विविध रूप उत्पन्न करता है (जैसे हल्की हवा, तेज़ हवाएँ, तूफ़ानी बादल)		
2	• बालगीतों और गीतों की लय और उनके तुकान्त शब्दों का आनन्द लेता है		• तुकान्त शब्द बनाता है (इसमें निरर्थक शब्द भी शामिल हैं)	• सहायता के साथ छोटे बालगीत (2-3 पंक्तियाँ) तैयार करता है	
3	• क्रियाओं के माध्यम से किसी वाक्य में अलग-अलग शब्द पहचानता है (उदाहरण के लिए, ताली बजाना, कूदना और डेस्क बजाना)		• बोले गए दो शब्दांशों वाले शब्दों को क्रियाओं (जैसे ताली बजाना, कूदना और डेस्क बजाना) के माध्यम से शब्दांशों (जैसे उनका नाम, टेबल, कूड़ादान आदि) में विभाजित करता है	• बोले गए 2-3 शब्दांशों वाले शब्दों को क्रियाओं (जैसे ताली बजाना, कूदना और डेस्क बजाना) के माध्यम से शब्दांशों में विभाजित करता है (जैसे उनका नाम, बोतल, कम्प्यूटर, तितली आदि)	

- यह देखते हुए कि उसके बच्चों को भाषा और साक्षरता सम्बन्धी दक्षताएँ हासिल करने के लिए अतिरिक्त सहायता की आवश्यकता है, उन्हें शब्दों को शब्दांशों में विभाजित करने की दक्षता प्राप्त करने के लिए कतिपय अतिरिक्त क़दमों की आवश्यकता हो सकती है।
- हाल ही में दीपिका का परिचय कुछ अतिरिक्त ध्वनि सम्बन्धी गतिविधियों से हुआ है जो फ़ाउंडेशनल साक्षरता की एक ज़िला स्तरीय कार्यशाला में संसाधन व्यक्ति ने प्रदर्शित की थीं।
- समुदाय के कुछ सदस्यों (मुख्य रूप से कॉलेज के विद्यार्थियों) द्वारा कक्षा में स्थानीय भाषाओं में बालगीत और गीत गाकर और वाद्ययंत्र बजाकर दीपिका की सहायता करने में रुचि व्यक्त की गई।
- चूँकि दक्षता में स्वनिम स्तर पर काम करने की बजाय शब्दांश स्तर पर काम करने का विकल्प है, दीपिका तय करती है कि अपने बच्चों को स्वनिम से परिचित बाद के चरणों में कराएगी, शायद शब्दों और शब्दांशों के मामले में उनकी प्रगति देखने के बाद।

शिक्षाशास्त्र और आकलन पर पुनर्विचार

उपरोक्त उदाहरण को जारी रखते हुए, दीपिका अपने बच्चों के लिए विशिष्ट अधिगम अनुभवों या गतिविधियों की योजना

तालिका-2 : अपनी कक्षा में गतिविधियों के लिए दीपिका की योजना

पूरी कक्षा/ छोटा समूह	सीखने के अनुभव/ गतिविधि की प्रकृति	दीपिका बच्चों की भागीदारी और प्रगति पर कैसे नज़र रखती है
पूरी कक्षा	पर्यावरणीय ध्वनियों पर ध्यान देने और उत्पन्न करने से सम्बन्धित उत्साहवर्धन खेल : • अपनी आँखें बन्द करें और परिवेश में होने वाली आवाज़ों पर ध्यान दें। • (आँखों पर पट्टी बाँधकर) आस-पास की विभिन्न ध्वनियों के स्रोतों को समझें/ पहचानें। • विभिन्न स्थितियों में ध्वनियों की कल्पना करें, उदाहरण के लिए, आकाश में पक्षी की तरह उड़ने, भारी बारिश में फँसने या पानी के नीचे होने की कल्पना करें। • अपनी आवाज़ या आस-पास की वस्तुओं का उपयोग करके सुनी गई ध्वनियाँ पुनः प्रस्तुत करें।	दीपिका की कक्षा के सभी बच्चों ने पर्यावरणीय ध्वनियों पर ध्यान देने और उत्पन्न करने से सम्बन्धित अधिगम प्रतिफल प्राप्त कर लिए हैं, इसलिए इन गतिविधियों का उद्देश्य बच्चों को अधिक चुनौतीपूर्ण ध्वनि सम्बन्धी जागरूकता गतिविधियों के लिए तैयार करना है। दीपिका तब तक कुछ भी रिकॉर्ड नहीं करती, जब तक कि किसी बच्चे या कुछ बच्चों से जुड़ी कोई विशेष घटना न हो, जिसे वह एक क़िस्से के रूप में दर्ज करना चाहेगी।
पूरी कक्षा	• स्थानीय भाषा (भाषाओं) और अँग्रेज़ी में बालगीत और गीत गाना। • शब्द क्रीड़ा : स्थानीय भाषाओं के बोलने में कठिन शब्द सुनना और दोहराना।	बालगीतों और गीतों की जटिलता का स्तर ऐसा होता है कि सभी बच्चे उन्हें गा सकते हैं। दीपिका सम्बन्धित अधिगम प्रतिफल लेती है और उन्हें विभाजित कर एक चेकलिस्ट तैयार करती है, जहाँ वह हर हफ़्ते कुछ बच्चों का अवलोकन करके सभी बच्चों की प्रगति पर नज़र रखती है : • परिचित बालगीतों/ गीतों के साथ गाता है। (हाँ/ नहीं) • शारीरिक हरकतों/ लयबद्ध गायन के माध्यम से लय की कुछ समझ प्रदर्शित करता है। (हाँ/ नहीं) • कुछ बालगीतों/ गीतों के लिए पसन्द व्यक्त करता है, उदाहरण के लिए, कोई बालगीत/ गीत चुने जाने पर सुझाव देता है या सहमति/ असहमति व्यक्त करता है। (हाँ/ नहीं) • भागीदारी करते समय ख़ुशी के लक्षण प्रदर्शित करता है, उदाहरण के लिए, न गाते समय भी दूसरों के साथ खड़ा रहता है, साथ में गाता है, उत्सुकता से देखता है, हिलता-डुलता है आदि। (हाँ/ नहीं)

छोटे समूह (पृथक किए गए नहीं)	स्थानीय भाषा(ओं) और अँग्रेज़ी के परिचित शब्दों को शब्दांशों में विभाजित करने से सम्बन्धित भाषा सम्बन्धी खेल (उपरोक्त बालगीतों/ गीतों से लिया जा सकता है या नहीं भी)। उदाहरण के लिए, किसी शब्द को सुनकर या उसका चित्र देखकर। जो बच्चे इसे स्वतंत्र रूप से करते हैं उन्हें 2-3 अक्षर वाले शब्द दिए जाते हैं और जिन बच्चों को अधिक सहायता की आवश्यकता होती है उन्हें केवल दो अक्षर वाले शब्द दिए जाते हैं – वे वही दोहराते हैं जो दूसरा बच्चा या शिक्षक प्रदर्शित करता है।	दीपिका शब्दों को शब्दांशों में विभाजित करने के सम्बन्ध में बच्चों की प्रगति पर नज़र रखने के लिए कोई अलग आकलन उपकरण तैयार नहीं करती है। वह अधिगम प्रतिफलों की संशोधित तालिका को मदों/ रूब्रिक के रूप में उपयोग करती है और बच्चों द्वारा प्राप्त अधिगम के प्रतिफलों के सामने उनके नाम अंकित करती है।

बनाती है। उसका मानना है कि सभी बच्चे गतिविधियों के एक पूर्वनिर्धारित अनुक्रम के साथ प्रगति नहीं कर सकते हैं, इसलिए वह अधिक विभेदित दृष्टिकोण अपनाती है – कुछ गतिविधियाँ जहाँ पूरी कक्षा को शामिल किया जा सकता है और कुछ जहाँ बच्चों की विशिष्ट आवश्यकताओं को उन पर कोई लेबल चस्पा किए बिना या उन्हें अलग-थलग किए बिना ध्यान में रखा जाता है।

दीपिका हर दिन ध्वन्यात्मक चेतना गतिविधियों के लिए 7-8 मिनट आवंटित करती है जिसमें वह एक मोटी-मोटी योजना **(तालिका-2)** तैयार करती है, जिसमें ऊपर उल्लिखित अधिगम प्रतिफल से कुछ बिन्दु और अन्य क्षेत्रों से अधिक बिन्दु शामिल होते हैं। जैसे कि निर्देशों का पालन करना, संवेदी विकास, एक-दूसरे की मदद करना और बारी-बारी से काम करना आदि।

इससे पहले दीपिका अनौपचारिक रूप से स्थानीय भाषा (भाषाओं) को शामिल कर चुकी थी – या तो बालगीतों और गीतों के माध्यम से मज़े के लिए या व्याख्या के लिए।

वह औपचारिक शिक्षण के लिए केवल अँग्रेज़ी का उपयोग करने की बाध्यता महसूस करती थी, क्योंकि यह उसके स्कूल में शिक्षण का माध्यम है। अधिगम के नए मानकों की मदद से, उसे कम-से-कम मौखिक क्षेत्र में, बच्चों की अपनी भाषा(ओं) को औपचारिक रूप से शामिल करने के महत्त्व का एहसास हुआ है। दीपिका ने न केवल अपने विद्यार्थियों की ध्वनि सम्बन्धी जागरूकता बल्कि भाषा और साक्षरता के अन्य पहलुओं को भी विकसित करने के लिए औपचारिक रूप से अधिक बालगीतों, गीतों, बोलने में कठिन शब्दों और स्थानीय भाषा के शब्दों को शामिल करने की योजना बनाई है। बच्चों को अधिक भाषायी खेलों में शामिल किया जाता है जहाँ वे बाक़ी कक्षा से अलग-थलग रहने की बजाय मिश्रित समूहों में एक-दूसरे की मदद और सहायता करते हैं। समग्र विकास के लिए भाषा और साक्षरता सम्बन्धी अधिगम प्रतिफलों को अन्य क्षेत्रों के अधिगम प्रतिफलों के साथ एकीकृत किया गया है। आकलन के सन्दर्भ में, किसी अलग परीक्षण की आवश्यकता नहीं है; दीपिका अपने बच्चों की प्रगति को रिकॉर्ड करने के लिए विभिन्न उपकरणों और तकनीकों का उपयोग करती है।

सारांश

फ़ाउंडेशनल स्टेज के लिए स्पष्ट अधिगम मानक स्थापित करना महत्त्वपूर्ण है ताकि शिक्षक, माता-पिता और स्कूल लीडर समझ सकें कि इस आयु वर्ग के बच्चे कैसे विकसित होते और सीखते हैं। यह तरीक़ा ऐसी व्यापक दक्षताओं का विकास करने पर केन्द्रित है जो बच्चों को फ़ाउंडेशनल स्टेज के अन्त तक हासिल कर लेना चाहिए, ताकि उन्हें सीखने के समग्र और व्यक्तिगत अनुभव के लिए एक रूपरेखा प्राप्त हो जाए। जहाँ दीपिका का उदाहरण दर्शाता है कि व्यक्तिगत तौर पर शिक्षक अपनी कक्षाओं में अधिगम मानकों को प्रभावी ढंग से कैसे लागू कर सकते हैं, राज्य शैक्षणिक संस्थानों को ऐसी पाठ्यचर्या सामग्री तैयार करना चाहिए जिसमें अधिगम मानकों को शामिल किया जाए ताकि ज़मीनी स्तर पर क्रियान्वयन में मदद मिले।

टिप्पणी

i. स्वनिम वाणी में ध्वनियों की सबसे छोटी इकाइयाँ होती हैं। उदाहरण के लिए, 'कैट', 'काइट' और 'डक' शब्दों में स्वर /k/ (क) शामिल है। स्वनिम और लेखीम/ वर्णिम (लेखन प्रणाली की सबसे छोटी इकाई, जैसे अक्षर/ लेटर) के बीच की संगति को समझना 'विकोडन/ विकूटन' (डिकोडिंग) के रूप में जाना जाता है, जो पूरे शब्दों को पढ़ने के लिए एक आवश्यक साक्षरता कौशल है।

ii. जब बच्चों के L1 का आधिकारिक तौर पर अन्य विषय पढ़ाने के लिए भाषा के रूप में उपयोग नहीं किया जाता है, तब भी उन्हें औपचारिक रूप से कम-से-कम मौखिक क्षेत्र में तथा पढ़ना और लिखना सीखने के शुरुआती चरणों में उपयोग किया जाना चाहिए। साथ ही इसे अन्य विषय पढ़ाने के लिए उपयोग की जाने वाली भाषा के लिए एक सेतु के रूप में काम करना चाहिए (NCF-FS 2023, पेज 77)। सेक्शन 3.2 NCF's Approach to Language Education and Literacy in the Foundational Stage (पेज 76-80) में और पढ़ें।

References

National Council for Educational Research and Training (NCERT). (2022). Foundational Stage National Curriculum Framework. https://ncert.nic.in/pdf/NCF_for_Foundational_Stage_20_October_2022.pdf

National Council for Educational Research and Training (NCERT). (2023). School Education National Curriculum Framework. https://ncert.nic.in/pdf/NCFSE-2023-August_2023.pdf

Directorate of Educational Research and Training (DERT). (2023). Meghalaya Foundational Stage Curriculum.

रीमा कौर अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय में स्कूल ऑफ़ कंटीन्यूइंग एजुकेशन एंड यूनिवर्सिटी रिसोर्स सेंटर (SCE-URC), बेंगलूरु में असिस्टेंट प्रोफ़ेसर हैं। उन्होंने गुरु गोबिन्द सिंह इन्द्रप्रस्थ विश्वविद्यालय, दिल्ली से बीएड और भारत रत्न डॉ बी. आर. अम्बेडकर विश्वविद्यालय दिल्ली से शिक्षा में एमए किया है। प्रारम्भिक भाषा और साक्षरता और प्रारम्भिक बाल्यावस्था शिक्षा उनकी रुचि के क्षेत्र हैं। रीमा वर्तमान में फ़ाउंडेशनल स्टेज के लिए पाठ्यक्रम विकसित करने में पूर्वोत्तर राज्यों की सहायता कर रही हैं। उनसे *rima.kaur@azimpremjifoundation.org* पर सम्पर्क किया जा सकता है।

अनुवाद : सुबोध जोशी **पुनरीक्षण :** सुशील जोशी **कॉपी एडिटर :** अनुज उपाध्याय

बच्चों का आकलन पोर्टफ़ोलियो द्वारा

एम. श्रीनिवास राव

"बुनियादी स्तर के लिए उपयुक्त आकलन के दो व्यापक तरीके हैं – बच्चों का अवलोकन और बच्चों द्वारा अपने अनुभव के अनुरूप प्रस्तुत किए गए कार्यों या कृतियों (artefacts) का विश्लेषण करना।"

स्रोत : फ़ाउंडेशनल स्टेज के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा। खण्ड 6.2 आकलन के तरीक़े और उपकरण। पेज - 173

इस लेख में, मैंने 'कृतियों के विश्लेषण' (analysing artefacts) विषय के अन्तर्गत, 'बच्चों के पोर्टफ़ोलियो' कैसे बनाएँ और उसका आकलन में कैसे इस्तेमाल करें इसका वर्णन किया है।

प्रारम्भिक बाल्यावस्था शिक्षा (Early Childhood Education - ECE) के सन्दर्भ में, एक विशिष्ट अवधि में बच्चे की वृद्धि, विकास और सीखने को प्रदर्शित करने वाले दस्तावेज़ी साक्ष्य और सामग्री के संग्रह को पोर्टफ़ोलियो कहते हैं। पोर्टफ़ोलियो का मुख्य उद्देश्य आकलन है। यह बच्चे की स्थिति और प्रगति समझने, निर्देश बताने और बच्चों की प्रगति के बारे में बताने और बातचीत करने में मदद करता है। इसके अतिरिक्त, यह उन बच्चों की पहचान करने में मदद करता है जिन्हें विशेष सहायता की आवश्यकता हो सकती है। पोर्टफ़ोलियो बच्चों की क्षमताओं, रुचियों और ज़रूरतों के बारे में भी जानकारी प्रदान करते हैं।

शिक्षक को कुछ ख़ास प्रतिफलों को ध्यान में रखकर बच्चे के पोर्टफ़ोलियो का विश्लेषण करना चाहिए और बच्चे की क्षमताओं के सामने उसकी प्रगति को दर्ज करना चाहिए। बच्चे के पोर्टफ़ोलियो में अपेक्षित प्रतिफलों को व्यवस्थित और स्पष्ट रूप से दर्शाया जाना चाहिए। प्रत्येक बच्चे के पास अपनी प्रासंगिक कृतियों को सहेजने के लिए अपना एक अलग फ़ोल्डर होना चाहिए।

स्रोत : फ़ाउंडेशनल स्टेज के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा। खण्ड 6.2 आकलन के तरीक़े और उपकरण। पेज 178

बच्चों के पोर्टफ़ोलियो के प्रमुख पहलू

पोर्टफ़ोलियो आइटम बच्चों की उम्र और उनके विकास, तथा कार्यक्रमों और पाठ्यक्रम के लक्ष्यों के अनुरूप होते हैं। आइटम जानकारीपरक, आसानी से सहेजे जा सकने वाले और सार्थक तरीक़े से कक्षा की गतिविधियों को दर्शाने वाले होने चाहिए। पोर्टफ़ोलियो में नीचे सुझाए गए आइटम शामिल किए जा सकते हैं :

1. सामान्य और व्यक्तिगत जानकारी : सामान्य विवरण, जैसे बच्चे का नाम और जन्मतिथि, माता-पिता के नाम और पृष्ठभूमि की जानकारी, बच्चे के बड़े/छोटे भाई-बहन, पसन्द-नापसन्द, सांस्कृतिक पृष्ठभूमि आदि।
2. स्वास्थ्य सम्बन्धी जानकारी : बच्चे की ऊँचाई, वज़न, वृद्धि, टीकाकरण जैसी स्वास्थ्य और सेहत सम्बन्धी जानकारी।
3. गतिविधि पुस्तकें और कार्य नमूने : गतिविधि पुस्तकें और वर्कशीट जिन पर बच्चे द्वारा कार्य किया जा रहा है। बच्चे का कक्षा कार्य जैसे ड्राइंग, पेंटिंग, चित्रकारी, कोलाज कार्य और गतिविधि की तस्वीरें आदि किसी फ़ाइल या स्क्रैपबुक में रखे जा सकते हैं।
4. आकलन आइटम : अवलोकन रिकॉर्ड, चेकलिस्ट, सीखने की प्रक्रिया से जुड़े क़िस्से, उनका विवरण, समय और साक्ष्य।
5. डिजिटल संसाधन : बच्चे के उल्लेखनीय कार्य या खेल में सहभागिता की तस्वीरें और वीडियो।
6. शिक्षक का चिन्तन : समय के साथ बच्चे द्वारा अर्जित ज्ञान पर शिक्षक की टिप्पणी/चिन्तन, जो भविष्य के विकास और सीखने के अवसरों की योजना बनाने में मदद करता है।
7. समग्र प्रगति कार्ड (Holistic Progress Card - HPC) : एनईपी 2020 सुझाव देता है कि HPC एक ऐसी, 360-डिग्री 'बहुआयामी रिपोर्ट है जो प्रत्येक बच्चे की प्रगति का विस्तृत विवरण देगी, साथ-ही-साथ संज्ञानात्मक, भावनात्मक और साइकोमोटर डोमेन (psychomotor domains) में प्रत्येक बच्चे की विशिष्टता को भी दर्शाएगी'। (para 4.35)[i] इसमें न केवल शिक्षक द्वारा किया गया आकलन शामिल हो सकता है, बल्कि माता-पिता द्वारा टिप्पणियाँ और बच्चों द्वारा स्वयं का सरल आत्म-आकलन भी शामिल हो सकता है।

बच्चों के पोर्टफ़ोलियो को व्यवस्थित करना

बच्चों द्वारा बनाई गईं वस्तुओं और कार्य नमूनों में भाषा सम्बन्धी, संज्ञानात्मक, सामाजिक-भावनात्मक, रचनात्मक, शारीरिक और सेहत सम्बन्धी सभी डोमेन शामिल होने चाहिए। कार्य के नमूनों को डोमेन-वार और कालक्रमबद्ध तरीक़े से व्यवस्थित करना ज़रूरी है। शिक्षक को बच्चे के काम की तारीख़ और उसका अपने काम के बारे में वर्णन दर्ज करना चाहिए। नीचे नमूने के तौर पर कुछ प्रश्न दिए गए हैं जिन्हें पूछकर शिक्षक बच्चे को उसके द्वारा किए गए कार्य पर विचार और बात करने में सक्षम बना सकते हैं।

1. मुझे बताओ कि आपने यहाँ क्या किया है।
2. मुझे बताओ/दिखाओ कि आपने यह कैसे किया?
3. आपने चित्र बनाने/लिखने/वस्तु बनाने... का निर्णय क्यों लिया?
4. जब आपने चित्र बनाया/लिखा/चीज़ बनाई... तो आप क्या सोच रहे थे?
5. आपको इसमें क्या पसन्द है?

समय-समय पर, शिक्षक बच्चे के पिछले काम पर वापस जा सकते हैं और उनसे सुधार करने या इसे अलग तरीक़े से करने के लिए कह सकते हैं :

1. क्या आप इसमें कुछ बदलाव करना चाहते हैं?
2. यदि आपको दोबारा इसे करना पड़े तो आप अलग तरीक़े से क्या करेंगे?

पोर्टफ़ोलियो का उपयोग

बच्चे का पोर्टफ़ोलियो तैयार होने के बाद शिक्षक बच्चे की उपलब्धियों का आकलन कर सकते हैं। एक यथोचित आकलन में बच्चे के वर्तमान कार्य की तुलना उसके पूर्व कार्य से की जाती है। इस आकलन से बच्चे की प्रगति का संकेत मिलना चाहिए जो पाठ्यक्रम और उचित विकास सम्बन्धी अपेक्षाओं के अनुरूप हो। उदाहरण के लिए, एक शिक्षक ने बच्चे के कार्य के अवलोकन के आधार पर एक बच्चे में उँगलियों की पकड़ और नियंत्रण (Motor skill) में कमी की पहचान की। इससे शिक्षक को बच्चे के लिए एक लक्ष्य निर्धारित करने में मदद मिली, और बच्चे को तीनों दीवार पर बने ब्लैकबोर्ड पर चित्र बनाने और काग़ज़ या फ़र्श पर शिक्षक द्वारा बीज से रेखांकित आकृति को रंगने के माध्यम से इस कौशल को बेहतर करने के अवसर प्रदान किए गए। ऐसा करने से कुछ समय बाद के उसी कार्य को करने में बच्चे के मोटर (motor) कौशल में बढ़िया सुधार दिखा।

पोर्टफ़ोलियो का उपयोग बच्चों की एक-दूसरे से तुलना करने के लिए नहीं होना चाहिए। इसमें समय के साथ एक बच्चे में हुई प्रगति का दस्तावेज़ीकरण होता है। बच्चे की उपलब्धि, क्षमताओं, ताक़त, कमज़ोरियों और ज़रूरतों के बारे में शिक्षक के निष्कर्ष बच्चे के सम्पूर्ण विकास पर आधारित होने चाहिए। शिक्षक के निष्कर्ष का आधार पोर्टफ़ोलियो में मौजूद डेटा, और पाठ्यक्रम और विकास चरणों के बारे में शिक्षक की समझ होनी चाहिए। पोर्टफ़ोलियो शिक्षक को प्रत्येक बच्चे की विशिष्ट विशेषताओं और सीखने के तरीक़ों की पहचान करने और कक्षा में बच्चे की सीखने में सहायता में मदद करता है।

पालक-शिक्षक मीटिंग के दौरान पोर्टफ़ोलियो का उपयोग करते हुए शिक्षक और माता-पिता बच्चे की प्रगति पर सामान्य चर्चा करने के बजाय बच्चे के काम के ठोस उदाहरणों को लेकर चर्चा कर सकते हैं।

1. पोर्टफ़ोलियो बच्चे की उपलब्धियों के बारे में माता-पिता, परिवार के अन्य सदस्यों और भविष्य में प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों के साथ बहुमूल्य जानकारी साझा करने का माध्यम बनता है।
2. पोर्टफ़ोलियो प्री-स्कूल से प्राइमरी स्कूल की स्थानान्तरण प्रक्रिया को सहज बनाता है। यह ECE का एक मूल्यवान संसाधन है क्योंकि यह बच्चे के विकास को समग्रता से देखता है, और यह सुनिश्चित करने में मदद करता है कि शैक्षिक प्रक्रियाएँ और देखभाल के तरीक़े प्रत्येक बच्चे की विशिष्ट आवश्यकताओं के अनुरूप हैं या नहीं।
3. पोर्टफ़ोलियो आँगनवाड़ी केन्द्र/प्री-स्कूल, घर और समुदाय में बच्चे की उपलब्धियों का एक सकारात्मक विवरण है।

चित्र-1 : *कक्षा में बच्चों के पोर्टफ़ोलियो बैग।*

4. बच्चों के पोर्टफ़ोलियो माता-पिता को उनके बच्चे की शिक्षा और विकास में शामिल करने के एक सार्थक तरीक़े के रूप में काम कर सकते हैं।

शिक्षक की भूमिका

शिक्षक को आकलन का उपयुक्त तरीक़ा और आकलन-सम्बन्धित रिकॉर्ड की आवधिकता (periodicity) को चुनने की स्वायत्तता होनी चाहिए। बच्चों के आकलन का व्यवस्थित रिकॉर्ड रखना एक शिक्षक की पेशेवर ज़िम्मेदारियों का हिस्सा है लेकिन इस कार्य को बोझिल बनाए बगैर स्वायत्तता के साथ क्रियान्वित करने की ज़रूरत है।

एक सटीक आकलन प्रारम्भिक बाल्यावस्था शिक्षा के शिक्षकों को बच्चे की प्रगति को इस तरह से दर्शाने की अनुमति देता है कि वह बच्चे, परिवार, शिक्षकों और प्रशासकों के लिए फ़ायदेमन्द हो। सटीक आकलन करने के लिए शिक्षक को निम्नलिखित कार्य करने होंगे :

1. बच्चों के घर जाएँ और उनके माता-पिता से प्रत्येक बच्चे का पूरा विवरण प्राप्त करें।
2. प्रोफ़ाइल शीट तैयार करें, प्रत्येक बच्चे के काम के नमूने व्यवस्थित रूप से एकत्र करें।
3. सभी बच्चों को समान अवसर प्रदान करें।
4. बच्चों को गतिविधियाँ करने के लिए आवश्यक सामग्री और समय प्रदान करें। साथ ही समय के साथ किसी एक योग्यता में आई प्रगति का आकलन करने के लिए उन्हें उससे सम्बन्धित कार्य के लिए पर्याप्त अवसर भी प्रदान करें।
5. बच्चों की गतिविधियों का निरीक्षण करें। इन्हें चेक लिस्ट, क़िस्सों/बातों और घटना के नमूनों आदि के रूप में दर्ज करें और बच्चों के विकास के लिए आवश्यक योजनाएँ बनाएँ।
6. प्रत्येक बच्चे के बारे में उनके विचारों को रिकॉर्ड करें और इन्हें ध्यान में रखते हुए उनकी कक्षा की योजना बनाएँ।

निष्कर्ष

पोर्टफ़ोलियो प्रत्येक बच्चे की प्रगति को समझने और दस्तावेज़ीकरण करने में प्रारम्भिक बाल्यावस्था पेशेवरों के लिए उपयोगी और प्रभावी माध्यम है। हर बच्चे के अपने पोर्टफ़ोलियो होते हैं, और इसमें बच्चे के अपने पर्यावरण, सामग्री, सहपाठियों और शिक्षकों के साथ जुड़ाव से सम्बन्धित सामग्री दर्ज की जा सकती है। पोर्टफ़ोलियो रिपोर्टिंग और योजना बनाने, दोनों के लिए व्यावहारिक और उपयोगी है; उनका रूप और स्वरूप छोटे बच्चों के लिए विभिन्न प्रकार के शैक्षिक कार्यक्रमों के अनुरूप बदल सकता है। यह व्यवस्थित तरीक़ा शिक्षकों को फ़ाउंडेशनल स्टेज के अन्त तक बच्चों के लिए पाठ्यचर्या, लक्ष्यों को हासिल करने और अगले चरण की ओर सहज रूप से ले जाने में मददगार है।

Endnotes

i National Education Policy 2020. Transforming Assessment for Student Development. Para 4.35. p 17

एम. श्रीनिवास राव अज़ीम प्रेमजी फ़ाउंडेशन, तेलंगाना के राज्य प्रमुख हैं। वे 2004 से फ़ाउंडेशन में हैं और कई शुरुआती बड़े कार्यक्रमों का हिस्सा रहे हैं। उन्होंने संगारेड्डी और राज्य की अन्य जगहों पर प्रारम्भिक बाल्यावस्था शिक्षा (ईसीई) पहल का नेतृत्व किया है। वे वर्तमान में फ़ाउंडेशन के कार्यक्रमों के प्रभाव आकलन के कार्य का नेतृत्व कर रहे हैं। उनसे *msr@azimpremjifoundation.org* पर सम्पर्क किया जा सकता है।

अनुवाद : सन्दीप दुबे **पुनरीक्षण :** उमा सुधीर **कॉपी एडिटर :** अफसाना पठान

जादुई पिटारा | बचपन में खेलों का जादू

उमामहेश्वर राव जग्गेना

एक जीवन्त गाँव के बीचोबीच, आँगनवाड़ी केन्द्र के पास, एक शाम बच्चों के समूहों के साथ बीतती है जो ख़ुशी-ख़ुशी विभिन्न प्रकार के खेल, खेल रहे हैं। शिक्षाविद उनकी सामाजिक भागीदारी को देखकर प्रसन्न होते हैं। विभिन्न प्रकार के खेल – चीज़ों के साथ, जैसे प्लास्टिक के कप के साथ; प्रतीकात्मक खेल जिसमें वे मिट्टी से विभिन्न आकृतियाँ बनाते हैं; नियमों वाले खेल, जैसे लागोरी; सामाजिक-नाटकीय खेल – बच्चों का एक समूह 'गणेश जुलूस' निकालने का अभिनय करता है; और निश्चित रूप से, शारीरिक खेल भी जैसे कूदना, कुलाँचे भरना और दौड़ना आदि, ये सभी बच्चों की समृद्ध कल्पना और स्थानीय परम्पराओं से उनके सम्बन्ध को प्रदर्शित करते हैं। यह दृश्य जादुई है।

छोटे बच्चों के सीखने के अनुभव की बुनियादी गुणवत्ता इस बात से ज़्यादा प्रभावित होती है कि देखभालकर्ता और शिक्षक अपनी सामग्री का उपयोग कक्षाओं में कैसे करते हैं और बच्चे परस्पर एक-दूसरे के साथ कैसे मेलजोल और बातचीत करते हैं। खेल-आधारित सीखने में सामग्री और वयस्कों की भूमिका महत्त्वपूर्ण होती है। जिज्ञासा के चलते बच्चे वस्तुओं को देखते-समझते हैं और अपनी कल्पना के आधार पर सामग्रियों का उपयोग करते हैं, जिससे ऐसा प्रतीत होता है कि अनजानी वस्तुएँ अर्थपूर्ण खेल सामग्री में तब्दील हो जाती हैं।

जादुई पिटारा

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-फ़ाउंडेशनल स्टेज (NCF-FS) के तहत विकसित *जादुई पिटारा* (मैजिक बॉक्स) एक ऐसा बक्सा है जिसमें 3 से 8 वर्ष की आयु वर्ग के बच्चों के लिए खेल आधारित शिक्षण-अधिगम सामग्री (टीएलएम) शामिल है। यह 'खेल–खेल में सीखने' को प्रोत्साहित करता है और 13 भारतीय भाषाओं में उपलब्ध है। यह भारतीय बच्चों के लिए प्रासंगिक और सांस्कृतिक महत्त्व रखता है। राज्य के शिक्षा विभागों को पारम्परिक खिलौनों को उचित महत्त्व देते हुए, सांस्कृतिक और सन्दर्भ की प्रासंगिकता के साथ-साथ राज्य की पाठ्यचर्या की रूपरेखा और पाठ्यक्रम के अनुरूप फ़ाउंडेशनल स्टेज के लिए सामग्रियों का एक ऐसा ही सेट विकसित करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है।

फ़ाउंडेशनल स्टेज में, टीएलएम शिक्षण-अधिगम की प्रक्रिया को अधिक संवादात्मक, आकर्षक और प्रभावी बनाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। वे विकासात्मक डोमेन और बुनियादी भाषा और साक्षरता, संख्याज्ञान और हमारे आस-पास की दुनिया की समझ (विषयगत सामग्री) का बहु-संवेदी और आयु-उपयुक्त शिक्षण और अधिगम अनुभव प्रदान करके बच्चों की विकासात्मक आवश्यकताओं को पूरा करते हैं। जादुई पिटारा की सामग्री एनसीएफ़-एफ़एस के पाठ्यचर्या लक्ष्यों की एक विस्तृत शृंखला को प्राप्त करने में शिक्षण विधियों को प्रोत्साहित करती है।

जादुई पिटारे की सामग्री

उन्नत खेल सामग्री

जादुई पिटारे में सक्रिय और विकास के लिए उपयुक्त तरीक़े से सीखने के लिए पहेलियाँ, ब्लॉक और कठपुतलियाँ जैसे खिलौने और खेल सामग्री शामिल हैं। जो युवा विद्यार्थियों में न केवल शैक्षणिक कौशल की नींव रखती हैं बल्कि आवश्यक सामाजिक, भावनात्मक, संज्ञानात्मक क्षमताओं और संवेदी तथा अवधारणात्मक कौशल का भी पोषण करती हैं। ये वस्तुएँ शिक्षकों के सहयोग से बच्चों को उनकी परिपक्वता स्तर के आधार पर सीखने और विकास के अनन्त अवसरों का पता लगाने और अनुभव करने में सक्षम बनाती हैं। शिक्षक एक *प्रेरक सीखने का माहौल* सुनिश्चित करते हैं, कक्षाओं में बच्चों के साथ एक जीवन्त माहौल बनाते हैं और उन्हें खेल सामग्री चुनने और उसे उपयोग करने की स्वतंत्रता देते हैं।

बिल्डिंग ब्लॉक्स और पहेलियाँ

बिल्डिंग ब्लॉक्स को उनकी कुछ भी गढ़ने की प्रकृति और रचनात्मक खेल की अनन्त सम्भावनाओं के कारण 'सुपर टॉयज' के रूप में जाना जाता है। चूँकि बच्चे अपनी इन्द्रियों का उपयोग यह पता लगाने के लिए करते हैं कि वस्तुएँ कैसे काम करती हैं और फिर उन वस्तुओं में अपने हिसाब से हेर-फेर करते हैं, रचनात्मक खेल एक प्री-स्कूली बच्चे को गहराई, चौड़ाई, लम्बाई, समरूपता, आकार और स्थान के सम्बन्ध में वर्गीकरण, माप, क्रम, गिनती और अन्त को समझने की क्षमता विकसित करने के अवसर प्रदान करते हैं। यह बच्चों की कल्पनाशीलता और रचनात्मकता में भी मदद करते हैं।

तालिका-1 : जादुई पिटारे में विभिन्न खेल, सहायक सामग्री और उनका महत्त्व

खेल का प्रकार	जादुई पिटारे में सामग्री	विकासात्मक अवसर, कौशल एवं दक्षताएँ
वस्तुओं के खेल	• बिल्ली पहेली • 2-3D आकृतियों को पिरोना • रंगीन छल्लों को एक के ऊपर एक जमाना • सलाखों और रंगीन ब्लॉक को जमाना • टेनग्राम (Tangram) • गणित माला	• पकड़ सम्बन्धी कौशल, संवेदी अवधारणात्मक कौशल • वस्तुओं के गुणों की छानबीन करना • गहराई, चौड़ाई, लम्बाई, समरूपता, आकार और स्थान के सम्बन्ध में अन्तरों को वर्गीकृत करने, मापने, क्रमबद्ध करने, गिनने और संकलित करने की क्षमता
नाटकीय खेल	• किचन सेट • ओखली-मूसल, चाकू और चॉपिंग बोर्ड, चकला-बेलन • हाथ वाली कठपुतलियाँ (कौआ, शेर, गधा, मुर्गा, हाथी, शार्क) मुलायम खिलौने, चूहा वाली कठपुतली	• विचारों, एहसासों और भावनाओं का संचार • उपयुक्त सामाजिक कौशल • शब्दावली का अभ्यास और नए, सम्बन्धित शब्दों के माध्यम से सीखने का विस्तार करने का आत्मविश्वास • पढ़ने और लिखने के कौशल का अभ्यास • समस्याओं को हल करना और गणितीय अवधारणाएँ विकसित करना • साथियों के साथ सहयोग
प्रतीकात्मक खेल	• वर्णमाला ट्रेसिंग बोर्ड • कठपुतलियाँ	• प्रतीकात्मक प्रणाली, जिसमें बोली जाने वाली भाषा, पढ़ना और लिखना, संख्याएँ, विभिन्न दृश्य मीडिया (पेंटिंग, चित्रकारी, कोलाज) संगीत इत्यादि शामिल हैं • नए शब्दों का निर्माण और ध्वनि सम्बन्धी जागरूकता
शारीरिक खेल	• लकड़ी के लट्टू • खेलने के लिए आटे या मिट्टी की लोई • मोती पिरोना • गेंद • रस्सी कूद के लिए रस्सी • लागोरी	• शारीरिक स्वास्थ्य, स्थूल और महीन पकड़ और नियंत्रण (मोटर) कौशल • नियंत्रण, समन्वय और शारीरिक सन्तुलन • गति अवधारणाओं को समझना (स्थानिक और शरीर के अंग)
नियमों वाले खेल	• अष्टा चंगा • चौकी बारा • पल्लंकुझी मन्ने • पारेचीसी	• साझा करने, सहयोग करने और बारी-बारी से काम करने से सम्बन्धित सामाजिक कौशल • दूसरों के दृष्टिकोण को समझना और • समस्या हल करने का कौशल (Problem Solving Skill)

कठपुतलियाँ और अन्य खिलौने

कठपुतलियाँ और खिलौने, जैसे कि किचन और डॉक्टर सेट, बच्चों में प्रतिनिधित्व कौशल विकसित करने या कल्पना के माध्यम से एक चीज़ को दूसरे के रूप में प्रस्तुत करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं (सामाजिक-नाटकीय खेल जिनमें चरित्र को निभाने के लिए सामग्रियों का उपयोग और उनकी नक़ल की जाती है और उनके लहज़े में बोलते हैं) साथ ही ये भाषा क्षमताओं को बढ़ावा देते हैं, सामाजिक-भावनात्मक जागरूकता लाते हैं और सामाजिक भूमिका और मानदण्ड को समझते हैं, जिससे बच्चों को वास्तविक दुनिया की समझ बनाने में मदद मिलती है।

खेल की किताबें

खेल की इन किताबों में 3 से 6 वर्ष की आयु वर्ग के लिए चित्रात्मक, विषयगत गतिविधि शीट और 3 से 8 वर्ष के आयु वर्ग के लिए हिन्दी, अँग्रेज़ी और गणित की चित्रात्मक गतिविधियाँ शामिल हैं।

ये खेल पुस्तकें बच्चों के लिए सीखने को मनोरंजक बनाने के अलावा अन्य विकास में भी सहायक हैं जो इस प्रकार हैं :

- सकारात्मक सीखने के दृष्टिकोण को बढ़ावा देना।
- आत्म-अन्वेषण और स्वतंत्र सीखने को प्रोत्साहित करना।
- प्रिंट सामग्री के माध्यम से मूर्त अवधारणाएँ प्रस्तुत करना।
- संज्ञानात्मक क्षमताओं और पूर्व-संख्याज्ञान और संख्या अवधारणाओं को बढ़ावा देना।
- महीन मोटर कौशल विकसित करना, नियंत्रित रूप से चिपकाना, काटना, रंगना, ट्रेसिंग आदि।
- चित्रों के माध्यम से समझना, शब्दावली, प्रिंट की परम्पराओं के साथ पूर्व-पढ़ने और लिखने का कौशल
- सामाजिक विकास को बढ़ावा देने के लिए कक्षा/ सहपाठियों/ समूह की गतिविधियों में अनुभव की गई अवधारणाओं और कौशलों को सुदृढ़ करना और उनका अभ्यास करना।
- आयु अनुसार परिवर्तन और ग्रेड-स्तरीय बुनियादी दक्षताओं को बढ़ावा देना।

ये खेल की किताबें शिक्षक को भी कई अन्य तरीक़ों से मदद करती हैं :

- सीखने के सकारात्मक दृष्टिकोण बनाने और आनन्ददायक एवं उत्साहवर्धक सीखने के अनुभवों के निर्माण में शिक्षक को मदद करने में
- विभिन्न क्षमता स्तर के समूह में शिक्षण को सुविधाजनक बनाने तथा एक उदाहरण स्थापित करने और शिक्षकों को अपने विद्यार्थियों की गति एवं सीखने की शैली के अनुसार गतिविधि शीट तैयार करने में सक्षम बनाने में
- प्रत्येक बच्चे की प्रगति का एक ठोस रिकॉर्ड रखने, विकास के पड़ावों और प्रारम्भिक सीखने के परिणामों को ट्रैक करने में सुविधा प्रदान करने में
- पोर्टफ़ोलियो में बच्चों की गतिविधि शीट का व्यवस्थित दस्तावेज़ीकरण करने के लिए सक्षम बनाने में

इसके अलावा, खेल की किताबें सरल उदाहरणात्मक गतिविधि शीट के माध्यम से बच्चों के विकास और सीखने में माता-पिता की भागीदारी को भी सुगम बनाती हैं और प्रोत्साहित करती हैं। गतिविधि शीट उन्हें अपने बच्चों की प्रगति के बारे में स्पष्ट जानकारी प्रदान करती हैं और घर पर निरन्तर सीखने की सुविधा प्रदान करती हैं।

शिक्षक हैंडबुक्स

प्रारम्भिक फ़ाउंडेशनल स्टेज (3 से 6 वर्ष की आयु के बच्चे) में शिक्षक किस सामग्री का उपयोग बच्चों के साथ करें, इस सम्बन्ध में काफ़ी अनिश्चितता रही है। इसके समाधान में, *जादुई पिटारा* शिक्षक पुस्तिकाओं का एक सेट प्रदान करता है। ये पुस्तिकाएँ विषयगत सामग्री और आयु-उपयुक्त अनुभवों के दायरे को स्पष्ट रूप से रेखांकित करती हैं। खेल-खेल में हैंडबुक विशेष रूप से 3 से 6 साल के बच्चों के लिए डिज़ाइन की गई है और हिन्दी, अँग्रेज़ी और गणित के लिए अन्य किताबें भी हैं। एक पुस्तिका कम और बिना लागत वाली शिक्षण-अधिगम सामग्री (टीएलएम) बनाने के लिए भी प्रदान की गई है।

चित्र-1 : *एक बच्ची जादुई पिटारे की सामग्री के साथ खेलने का आनन्द लेते हुए।*

फ़्लैश कार्ड

जानवरों, पौधों, फूलों और फलों आदि के चित्रों वाले 50 विषयगत फ़्लैश कार्ड हैं, जो निम्नलिखित उद्देश्यों को पूरा करते हैं :

- जुड़ाव और रुचि : जानकारी को आकर्षक और विषयगत तरीक़े से प्रस्तुत करके बच्चों की रुचि को तय करना और उसे बनाए रखना।
- अवधारणा का सुदृढीकरण : विषयगत अवधारणाओं और शब्दावली को सुदृढ़ करना, बेहतर अवधारणा और समझ में सहायता करना।
- बहु-संवेदी शिक्षण : समझ को बढ़ाने के लिए दृष्टि और चर्चा से जुड़े बहु-संवेदी शिक्षण अनुभव प्रदान करना।
- भाषा विकास : नए शब्दों को प्रस्तुत करके और विशिष्ट विषयों पर स्वतंत्र, मार्गदर्शित और वैचारिक बातचीत की सुविधा प्रदान करके भाषा विकास का समर्थन करना।
- रचनात्मकता और कल्पना : विषयगत विचारों के दृश्य प्रतिनिधित्व के माध्यम से रचनात्मकता और कल्पना को प्रोत्साहित करना।

संख्याज्ञान के कार्ड

संख्याज्ञान कार्ड (1-100) दो सेटों में हैं जिनमें प्रत्येक पर संख्या नाम और संख्या नाम के लिए मात्रा दर्शाते बिन्दु अंकित हैं जो निम्नलिखित में सहायता करते हैं :

- संख्याज्ञान कौशल विकास : संख्याओं, संख्याओं के नामों का दृश्य प्रतिनिधित्व और संख्याओं (प्रतीकों) को मात्राओं के साथ जोड़ना।
- मूर्त (चित्रात्मक) समझ : अमूर्त (संख्याओं) को मूर्त प्रतीकों (बिन्दुओं) के साथ जोड़ना।
- क्रमबद्ध सीखना : प्री-प्राइमरी के लिए बुनियादी गिनती (10-1) से अधिक जटिल गणनाओं की तरफ़ बढ़ना।
- संवादात्मक रूप से सीखना : संख्याओं के व्यावहारिक उपयोग को प्रोत्साहित करना और उन्हें मूर्त अनुभवों से जोड़ना।

पोस्टर

पोस्टर प्रिंट-समृद्ध वातावरण बनाते हैं, कक्षा में बातचीत को और पढ़ने के साथ-साथ ये शिक्षक को निम्नलिखित में सहयोग करते हैं :

- मौखिक भाषा का विकास : सुनना और प्रतिक्रिया देना, दोहराना, बातचीत और संवाद करना और सीखना।
- प्रिंट जागरूकता : मौखिक भाषा को लिखित शब्दों के साथ जोड़ना, मौखिक और लिखित भाषा के बीच अन्तर्सम्बन्ध को देखना।
- सांस्कृतिक अनुभव : विभिन्न कहानियों और कविताओं के माध्यम से विविध संस्कृतियों, नज़रिए और साहित्यिक परम्पराओं का परिचय।
- अभिव्यक्ति और संचार : चर्चाओं और साझा करने के अन्य रूपों को प्रोत्साहित करना।
- समझ के साथ पढ़ना : दृश्यों के साथ चित्र पढ़ने में सुधार, कहानियाँ और कविताओं के साथ शब्द पहचान और पढ़कर समझने का कौशल विकसित करना।

निष्कर्ष

दैनिक सीखने के अनुभव जो बच्चे द्वारा किए जाते हैं और शिक्षक द्वारा निर्देशित होते हैं, विषयगत खेल सामग्री, प्रतीकात्मक और नाटकीय खेल गतिविधियों के साथ-साथ शिक्षक-संचालित गतिविधियों के माध्यम से, शिक्षक हैंडबुक और शिक्षक मैनुअल जैसे संसाधनों द्वारा समर्थित होते हैं। इस तरीक़े का उद्देश्य फ़ाउंडेशनल स्टेज में 'खेल-खेल में शिक्षण और सीखने' को बढ़ावा देना है। इससे आगे चलकर, ये बच्चों के समग्र विकास के लिए सकारात्मक रिश्तों को बढ़ावा देते हैं और जहाँ भी सम्भव हो स्थानीय संसाधनों को शामिल करते हुए बच्चों के जीवन, सन्दर्भ और पूर्व ज्ञान से गहराई से जुड़े अनुभवों की योजना बनाते हैं।

उमामहेश्वर राव जग्गेना ने अज़ीम प्रेमजी फ़ाउंडेशन में शैक्षणिक, परामर्श, पाठ्यचर्या विकास, आकलन, नेतृत्व और कार्यक्रम प्रबन्धन सहित विभिन्न भूमिकाएँ निभाई हैं। वह कार्यक्रम विकास और कार्यान्वयन के माध्यम से आँगनवाड़ी केन्द्रों में अर्ली चाइल्डहुड केयर एंड एजुकेशन (ECCE) की गुणवत्ता बढ़ाने में माहिर हैं। उन्होंने *जादुई पिटारा* (एनसीएफ़-एफ़एस) और अर्ली लर्निंग असेस्मेंट टूल (ELA) में योगदान दिया है। उन्होंने पुडुचेरी (यूटी) में ईसीसीई कार्यक्रमों को बदलने और कई राज्यों में क्षमता निर्माण कार्यक्रमों में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। उन्होंने एनसीईआरटी (आरआईई,मैसूर) से शिक्षा में मास्टर डिग्री प्राप्त की है। उनसे *uma.maheswara@azimpremjifoundation.org* पर सम्पर्क किया जा सकता है।

अनुवाद : जितेन्द्र 'जीत' **पुनरीक्षण :** उमा सुधीर **कॉपी एडिटर :** अनुज उपाध्याय

अज़ीम प्रेमजी यूनिवर्सिटी लर्निंग कर्व के पुराने अँग्रेज़ी अंक
https://azimpremjiuniversity.edu.in/learning-curve से डाउनलोड किए जा सकते हैं।

पत्रिका के हिन्दी और कन्नड़ा अंक या उनके लेख
https://anuvadasampada.azimpremjiuniversity.edu.in/ पर उपलब्ध हैं।

अज़ीम प्रेमजी यूनिवर्सिटी लर्निंग कर्व पत्रिका की प्रति सब्सक्राइब/प्राप्त करने के लिए आगे दी गई लिंक पर दिए गए फार्म को भरकर भेजें :
https://bit.ly/3SS3kNG

अपने सुझाव, टिप्पणियाँ,मत और अनुभव हमें इस ईमेल पते पर भेज सकते हैं :
learningcurve@apu.edu.in

मुद्रक तथा प्रकाशक शरद सुरे, रजिस्ट्रार द्वारा अज़ीम प्रेमजी यूनिवर्सिटी के लिए
आदर्श प्रा.लि., 4 शिखरवार्ता,प्रेस काम्पलेक्स, जोन-1,एम.पी.नगर, भोपाल 462 011 से मुद्रित

एवं अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय, सर्वे नम्बर 66,बुरुगुंटे विलेज,बिक्कनाहल्ली मेन रोड, सरजापुरा,बेंगलूरु,कर्नाटक - 562 125 से प्रकाशित
मुख्य सम्पादक : प्रेमा रघुनाथ

Azim Premji Foundation

Opportunities to help children learn better and build fulfilling careers in education.

Azim Premji Foundation is hiring **Resource Persons** and **Schoolteachers.**

Eligibility

Resource Persons:

- Graduation with a minimum 5 years of teaching experience OR Postgraduation with a minimum 2 years of teaching experience.
- Candidates with relevant on-field experience in the social sector may also apply.

Schoolteachers:

- Bachelor's degree in your subject and teaching degree (B.Ed., D. Ed or D.El. Ed) with at least 2 years of teaching experience.
- An ability to teach in English coupled with knowledge of the local language.

Job location:

Chhattisgarh, Jharkhand, Karnataka, Madhya Pradesh, Rajasthan and Uttarakhand

Scan to know more

Apply Now!

To apply now, visit https://azimpremjifoundation.org/content/school-education

अगला अंक

टिकाऊ स्कूल संस्कृति के लिए अभ्यास

Azim Premji University
Survey No. 66, Burugunte Village
Bikkanahalli Main Road, Sarjapura
Bengaluru 562125, Karnataka

www.azimpremjiuniversity.edu.in

Facebook: /azimpremjiuniversity

Instagram: @azimpremjiuniv

X: @azimpremjiuniv